चैतन्य लहरी

जुलाई - अगस्त, 2004

इस अंक में

3 आदि शक्ति पूजा, कबेला – 06.06.2004

5 मानव का सृजन एवं लक्ष्य प्राप्ति

10 निर्मला – राहुरी – 18.1.1980

20 आत्म साक्षात्कार का अर्थ, मुम्बई – 3.9.1973

36 अपनी ओर चित्त रखें, मुम्बई – 21.12.1975

47 परम पूज्य श्रीमाता जी का एक पत्र – मई 1977

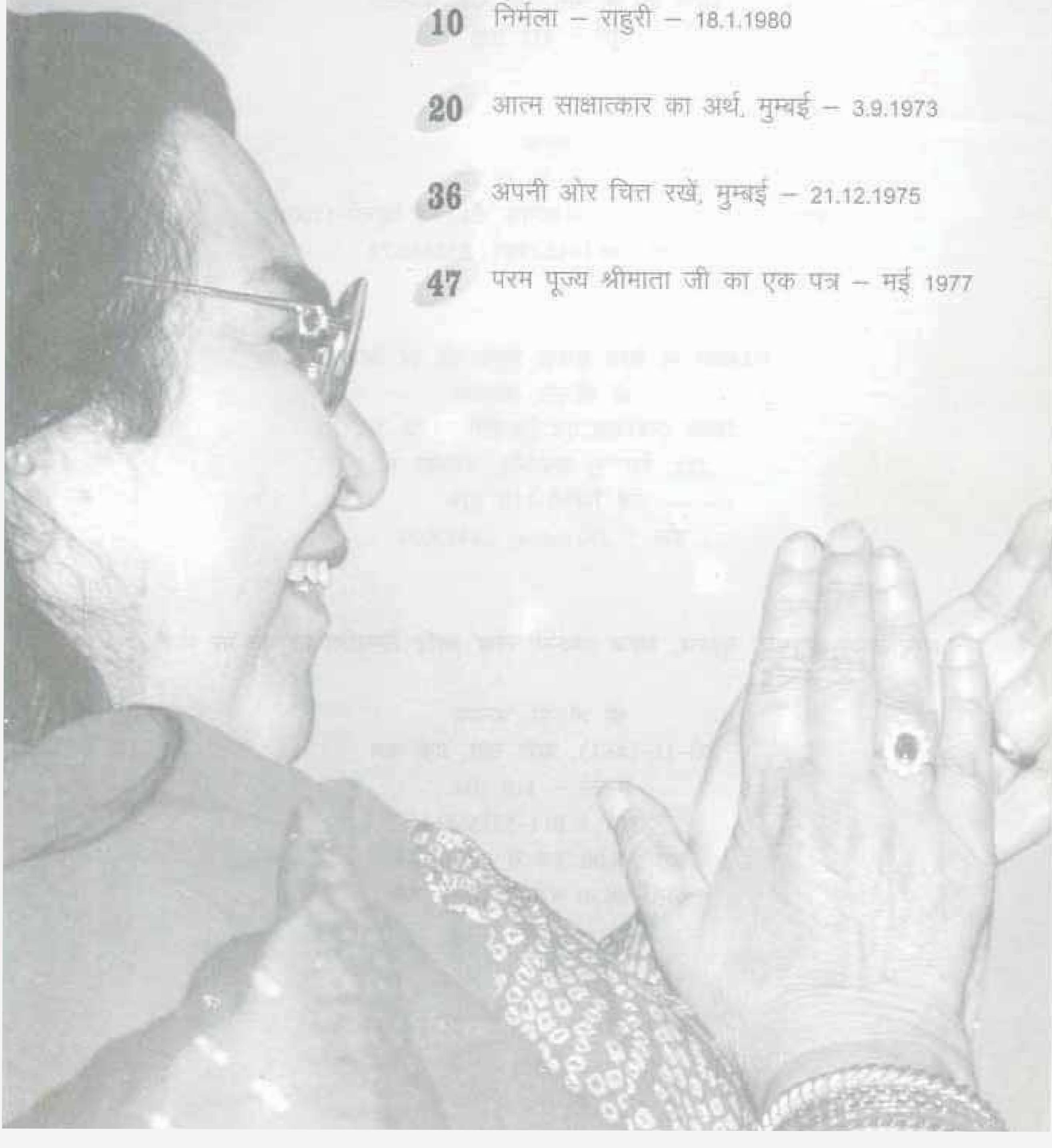

प्रकाशक
निर्मल इन्फोसिस एवं टेकनोलोजीज़ प्रा. लि.
मुख्य कार्यालय : प्लाट न. 8, चन्द्रगुप्त हाउसिंग सोसाइटी,
होटल ग्रेस के पीछे, पॉड रोड, कोठरुड
पुणे - 411 029

मुद्रक
अमरनाथ प्रेस प्रा. लि.
WHS-2/47, कीर्ति नगर, औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110015
मोबाइल : 9810452981, 25268673

सदस्यता के लिए कृपया निम्न पते पर लिखे:-
श्री जी.एल. अग्रवाल
निर्मल इन्फोसिस एवं टेकनोलोजीज़ प्रा. लि.
222, देशबन्धु अपार्टमैंट, कालका जी
नई दिल्ली-110 019
फोन : 26216654, 26422054

आप अपने अनुभव, सुझाव, सहज सम्बन्धी लेख आदि निम्नलिखित पते पर भेजें :

श्री ओ. पी. चान्दना
जी-11-(463), ऋषि नगर, रानी बाग
दिल्ली - 110 034
दूरभाष : 011-55356811
प्रात: 08.00 बजे से 09.30 बजे
सायं: 08.30 बजे ये 10.30 बजे

आदिशक्ति पूजा

कबेला–06.06.2004

आज हम उस शक्ति के विषय में बात करेंगे जो आपके हृदय में छुपी हुई है और जिसके द्वारा एक नया विश्व, एक नया परिवार, नए मानदण्ड तथा अब तक अज्ञात हर चीज की आप सृष्टि कर सकते हैं, हर उस चीज की जो आप चाहते हों। ऐसा करना बिल्कुल संभव है, ऐसा किया भी जा रहा है। परन्तु सबसे कठिन कार्य तो लोगों को अधिक अनुकूल बनाना तथा उनमें परस्पर सामंजस्य को बढ़ाना है। यह कार्य बहुत मुश्किल लगता है। यदि उनके अपने मित्र हों, उनकी अपनी शैली हो तो वे परस्पर बिल्कुल ठीक होते हैं। परन्तु उनमें पूर्ण सामंजस्य बनाना, उन्हें परस्पर एकरूप करना, एक जीवन में तो बहुत ही कठिन कार्य हैं।

अब समस्या यह है कि हमारे यहां अत्यन्त भले लोग हैं, सुन्दर आत्माएं हैं, परन्तु वो परस्पर उतने एकरूप नहीं हैं जितना उन्हें होना चाहिए। किस तरह से इस समस्या का समाधान किया जाए? मूल लक्ष्य, जिसके लिए हमने यह सब आरंभ किया था–यह नवीन प्रकार की सूझबूझ, नई प्रकार की मर्मज्ञयता–का उदेश्य यह था कि हम हर व्यक्ति में एकरूपता खोजना चाहते थे। अब आप लोगों को शुक्रगुज़ार होना है कि आप एकरूप हैं, अन्दर से एक है, दूसरा कुछ भी नहीं। यह केवल एक है और वह एक जब बोलता है या कोई कार्य करना चाहता है तो, आपको हैरानी होगी, सभी कुछ पूर्ण सामंजस्य से हो जाता है। यह सब एक रूप होता है और एक ही प्रकार से कार्यान्वित होता है। इसमें कोई परिवर्तन नहीं होता और दोनों में कोई अन्तर नहीं होता।

इसके बावजूद भी हमारे मस्तिष्क भटकते रहते हैं, सहजयोग के दृष्टिकोण से किसी महत्वहीन समस्या को लेकर भटकते रहते हैं। **मुख्य समस्या जो हमारे साथ है वो है हमारा यह महसूस न करना कि हमें कोई समस्या ही नहीं है। हम समस्याओं से मुक्त हैं।** हम सोचते हैं कि समस्याएं हैं और हमें इन समस्याओं का समाधान करना हैं। परन्तु वास्तव में इनमें से कोई भी समस्या नहीं है। मुझे कहीं भी कोई समस्या नजर नहीं आती। जो लोग सोचते हैं कि उन्हें समस्या है मैनें उनसे उन समस्याओं को लिखने के लिए कहा है और मैं उन्हें उत्तर देने का प्रयत्न करूंगी और बताऊंगी कि यह समस्या किस प्रकार की है। परन्तु कुछ भी करने से पूर्व मैं यह कहना चाहूँगी कि अभी तक हमारे सहजयोगी उस स्तर पर नहीं पहुंचे हैं जहाँ वो इस एकरूपता, अपने हृदयों की एकरूपता को समझ सकें। यह सभी कुछ अपने अन्दर से आता है बाहर से नहीं। अतः सभी बाह्य प्रयत्न व्यर्थ हैं।

प्रयत्नों को छोड़कर हमें अपने वास्तविक रूप को धारण करना हैं। वो बनना है जो वास्तव में हम हैं। यह सभी कुछ मौजूद है। आपने तो बस वह बनना है, वही बनना मात्र है। उन लोगों के लिए यह बात समझना कुछ कठिन है जिनके भिन्न–भिन्न नाक हैं, भिन्न चेहरे हैं, जिनका सभी कुछ भिन्न है, उनके लिए एकरूप होना कठिन है। परन्तु आप तो एकरूप हैं, आप एकरूप हैं। क्योंकि आपको इस बात का एहसास नहीं है इसलिए आप भिन्न प्रतीत होते हैं। अतः मुझे आपसे एक बात बतानी है कि : **आप सब एक हैं। इस प्रकार से एक हैं कि आप ही सभी कुछ हैं। एक ही अन्तः प्रेरणा हैं, एक ही भावना हैं। आप सबकी सूझबूझ एक ही है।**

इसका आप पर बहुत गलत प्रभाव पड़ता है और आप मान लेते हैं कि कोई अन्य है, परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है। केवल एक है, एक ही सम्बन्ध, और यह सम्बन्ध है आदि शक्ति से क्योंकि आप आदिशक्ति के अंग प्रत्यंग हैं जो भी कुछ व्यक्ति करता रहे वह आदि शक्ति से अलग हो नहीं सकता। आप उन्हीं से उत्पन्न हुए हैं और वही आपका मार्गदर्शन कर रही हैं। मुझे तो सभी कुछ एक लगता है, जबकि आप लोग सोचते हैं कि यह भिन्न है। यह सोच गलत है।

मैं जो भी कहती हूँ वह प्रमाणित होना चाहिए अन्यथा आप उसे क्यों स्वीकार करेंगे। मैं स्वयं आपसे एक रूप हूँ और सदैव आप लोगों के साथ वैसी ही रहूँगी। मेरे लिए कोई अन्तर नहीं हैं। यह प्रवृत्ति यदि थोड़ी सी बदल जाए तो आप भी सभी के बीच एकरूपता को देखेंगे और तुरन्त भिन्नता के विचार समाप्त हो जाएंगे।

जिस प्रकार आप एक दूसरे को समझते हैं उस पर अत्यन्त आश्चर्य होता है। बिना एक दूसरे को ठीक से समझे आप कुछ प्राप्त नहीं कर सकते। यह आवश्यक है, ठीक है और सत्य है। सत्य बहुत समय पूर्व आरंभ हुआ था। उससे बहुत समय पूर्व जब किसी भी मनुष्य ने सत्य की खोज के विषय में सोचा था, मनुष्य के बहुत सारी असत्य चीजों में फंसने के कारण सत्य लुप्त हो गया।

सत्य को इतना आसानी से स्वीकार नहीं किया जाता जितनी आसानी से असत्य को। क्यों? क्योंकि हम असत्य पर खड़े हैं। हमारी सारी सूझबूझ असत्य है। इस सारी सूझबूझ को बदल कर हमें सत्य पर लाना होगा। यह कार्य कठिन नहीं है क्योंकि हम सत्य ही हैं। हम सत्य हैं। सत्य, जो हम हैं, बनना क्यों कठिन होना चाहिए? यह कार्य कठिन नहीं होना चाहिए। परन्तु ऐसा होता है। इसका अर्थ यह है कि हमारे अन्दर अवश्य कोई कमी है जिसे हमने खोज निकालना है। यह कमी यह है कि हम स्वयं का सामना नहीं कर सकते। दूसरों का सामना करते हैं अपना नहीं। स्वयं को कभी नहीं देखते। हम यह नहीं जानते कि हमारी स्थिति क्या है। यह दर्शाने के लिए आपको एक माँ की आवश्यकता थी। इस प्रकार से आपको यह बताने के लिए कि आपके अन्दर क्या समस्या है, माँ को (आदिशक्ति) पृथ्वी पर अवतरित होना पड़ा। इस सिद्धान्त का अभ्यास किया जाना चाहिए। तब यह जानकर आप हैरान होंगे कि आपमें अपने बारे में और इनके बारे में कितना ज्ञान है। कुछ भी विशेष नहीं, न ही कुछ असाधारण है। आपमें केवल स्वयं को स्वीकार करने का क्षेम होना चाहिए।

मैं सोचती हूँ कि लोग सहजयोगी हैं, परन्तु वह सहजयोगी नहीं हैं। वे सहजयोगी नहीं हैं, सहजयोगी बनने का प्रयत्न कर रहे हैं। इसके विपरीत उन्हें इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि वे सहजयोगी हैं। इसके अतिरिक्त उन्हें कुछ और नहीं बनना। तब और कोई समस्या न रहेगी। हमें यह जानना है कि हम एक हैं, बिल्कुल समान। किसी प्रकार की कोई अज्ञानता आवश्यक नहीं है। ऐसा जब घटित हो जाएगा तो विश्व की सभी समस्याएं बिना किसी कठिनाई के हल हो जाएंगी।

आज की पूजा अत्यन्त विशिष्ट है क्योंकि आप एक ऐसी शक्ति की पूजा कर रहे हैं जो कभी परिवर्तित नहीं हुई, जिसमें कभी परिवर्तन नहीं आया, जो अपनी वास्वतविक स्थिति में रही, उस स्थिति में जिसमें उसने जन्म लिया और जो आज भी वैसी की वैसी है। ऐसी पूजा में कोई क्या कह सकता है? कुछ नहीं। स्वयं से एकरूप हो जाएं। हमें अपने आप से एक रूप होना है, वातावरण या मानसिक हलचल में खो नहीं जाना। क्योंकि यह ऐसा समय है जब मस्तिष्क चलने लगता है और जब यह चलने लगता है तो इसका नियंत्रण अपने पर समाप्त हो जाता है, उसी तरह से जैसे साँप जब तक अपने बिल में बना रहता है तो उसे कोई खतरा नहीं रहता, परन्तु ज्योंही बिल से निकलकर वह इधर उधर घूमना शुरु करता है तभी खतरे का आरम्भ हो जाता है। इसी प्रकार से हमें यह समझना है कि हमारा मस्तिष्क अत्यन्त अत्यन्त जटिल है और इसे गलत दिशाओं में नहीं जाना चाहिए। उसके लिए हमें आदिशक्ति की पूजा करनी होगी क्योंकि हमें आदिशक्ति द्वारा दिखाए गए पथ पर चलने का प्रयत्न करना चाहिए। हमें स्वयं को आद्य (Primordial) बनाए रखना है। हमें अपने आद्य स्वरूप आत्मा को कार्यान्वित करना होगा। स्वयं को परिवर्तित नहीं करना होगा। हम आत्म स्वरूप ही हैं और इसी को हमें प्राप्त करना है–स्वयं से पूर्ण एक रूपता।

परमात्मा आपको धन्य करे।

मानव का सृजन एवं लक्ष्य प्राप्ति

फरवरी – 1979
गाँधी भवन – दिल्ली विश्वविद्यालय
(परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन)
(हिन्दी रूपान्तर)

इस प्रवचन में मैं सृजन के विषय में बताऊंगी और इसके लिए मुझे उस समय तक वापिस जाना होगा जब मानव अमीबा के रूप में था। कोई भी खुले मस्तिष्क का वैज्ञानिक इस बात को स्वय देख सकता है कि ये ब्रह्माण्ड अत्यन्त सुन्दर एवं सुव्यवस्थित है। इसे अत्यन्त सहजतापूर्वक चलाया गया तथा वह इस परिणाम तक भी पहुँच सकता है कि इस ब्रह्माण्ड के कारण ही पृथ्वी माँ का सृजन हुआ।

लगभग पचास–लाख वर्ष पूर्व गैसों की गर्मी से भरी हुई यह पृथ्वी माँ ठण्डी हुई। किस प्रकार इसमें शीतलता आई? वैज्ञानिक इस बात को ऐसे ही स्वीकार कर लेते हैं और अपनी सीमाओं के कारण इसके शीतल होने की वजह नहीं खोज सकते। क्यों ये घटना घटी? कैसे इसका आरम्भ हुआ? ये कहना बहुत आसान है कि परमात्मा नाम की कोई चीज नहीं है परन्तु बिना परमात्मा के अस्तित्व को स्वीकार किए बहुत सी चीजों की व्याख्या कर पाना अत्यन्त कठिन है। उदाहरण के रूप में इस ब्रह्माण्ड में मानव सृजन पर लगा समय इतना कम है कि कोई भी अन्य चीज इसकी व्याख्या नहीं कर सकती।

संयोग के नियम का यदि आप उपयोग करें तो हम पता लगा सकते हैं कि कितनी बार कम परिवर्तन एवं संयोग (Permutations and combinations) को एक छोटे से कोषाणु का सृजन करने के लिए कार्य करना पड़ता है। उदाहरण के रूप में किसी परखनली (Test Tube) में आपके पास यदि पचास लाल गोलियां है और पचास सफेद तथा उनको इस प्रकार रखा गया है कि लाल गोलियाँ नीचे की तह में हैं और सफेद उपर की तह में तो आप यदि परखनली को हिलाते चले जाएंगे तो लाल और सफेद गोलियों की व्यवस्था पूरी तरह से अव्यवस्थित हो जाएगी। इन्हें वापिस अपनी असली अवस्था में लाने के लिए व्यक्ति को कितनी बार वह गोलियां हिलनी पड़ेगी, इसके लिए उन्होंने एक फार्मूला खोज लिया है। इस फार्मूले के हिसाब से मानव का सृजन यदि संयोग से हुआ है, जो कि असंभव लगता है क्योंकि मानव के सृजन में लगाया गया समय इतना कम है कि इस समय में तो मुश्किल से किसी जीवन्त कोषाणु का सृजन ही हो पाता।

इतने जटिल मानव का सृजन क्यों किया गया और उसके अन्दर इतनी सुन्दर व्यवस्था की गई कि इस बात पर विश्वास करना कठिन है कि इस सारे नाटक के पीछे कोई मदारी नहीं है। कोई वैज्ञानिक तो अवश्य होगा जिसने यह परिणाम प्राप्त किए। ये सारे कार्य हो पाने तो किसी विशेष व्यक्ति से ही सम्भव हैं। कहने से अभिप्राय यह है कि बिना किसी व्यवस्था, सोच विचार, योजना एवं शक्तिशाली व्यक्तित्व के, जब तक सर्वशक्तिमान परमात्मा इसके पीछे न होते, ये कार्य संभव न होता।

जिस प्रकार विज्ञान की सीमाएं हैं उनके होते हुए निःसन्देह इस बात का पता नहीं लगा सकते कि किस प्रकार इस कार्य में तेजी आई और यह घटित हुआ। परन्तु हम देख सकते हैं कि विज्ञान के क्षेत्र में हमने कुछ उपलब्धियां प्राप्त की हैं, एक ऐसे तरीके से जो शायद विकास प्रक्रिया की गति को तेज करने के लिए उपयोग किया गया था।

पाठशाला में जब मैं युवा विद्यार्थी थी तब मैंने इस बात पर बिल्कुल विश्वास न किया होता कि हम चाँद को भी सक्रिय कर सकते हैं। किसी ने अगर ऐसा कहा होता तो लोग उस पर हँसे होते।

आज भी यदि आप मेरी दादी माँ को यह बात बताएं तो उस पर वह विश्वास नहीं करेगी, सोचेगी कि आप कोई कहानी सुना रहे हैं। परन्तु हम चाँद पर पहुँच चुके हैं इस बात में कोई सन्देह नहीं है।

इस प्रणाली में हमने एक के अन्दर एक पाँच कैप्सूल लगाए। सर्वप्रथम सबसे नीचे वाला कैप्सूल फटकर धमाका करता है और बाकी के चार कैप्सूलों को गति प्रदान करता है। दूसरा कैप्सूल जब फटता है तो पहले कैप्सूल की अपेक्षा कई गुना गति प्रदान करता है। गति इतनी अधिक बढ़ती है कि अचानक हमें लगता है कि पहले कैप्सूल द्वारा दी गई गति से कई गुनी हो गई है। तीसरा कैप्सूल फटने पर यह गति को और अधिक बढ़ा देता है। इसी प्रकार चौथा कैप्सूल फटता है और फिर पाँचवां जिसके अन्दर अन्तरिक्षयान होता है। अन्दर बनी प्रणाली के माध्यम से जब एक के बाद एक धमाका होता है उसी से हमें अन्तरिक्ष यान के लिए अत्यन्त उच्च गति प्राप्त करनी होती है।

बिना अपनी उत्क्रान्ति के बारे में जाने यह विचार हमें अपने अचेतन (unconscious) से प्राप्त हुए हैं। हम ये जान गए हैं कि यह किस प्रकार घटित हुआ परन्तु इन दोनों को हम एक दूसरे से जोड़ नहीं सकते। अतः इसी प्रकार से मानव का सृजन भी अमीबा से किया गया और अमीबा का सृजन सभी तत्वों से किया गया। उसी प्रकार से हम कह सकते हैं कि हमारा पुनर्सृजन भी पाँच कैप्सूलों से किया गया। पहला कैप्सूल शारीरिक है, हमारा शारीरिक अस्तित्व, शरीर रूपी कैप्सूल के अन्दर भावनात्मक अस्तित्व (Emotional Being) को रखा गया, भावनात्मक अस्तित्व के अन्दर आध्यात्मिक अस्तित्व रखा गया और आध्यात्मिक अस्तित्व के अन्दर आत्मा या हमारे चित्त को रखा गया।

हम कह सकते हैं कि कुण्डलिनी ही फटती है और धमाका करती है। अतः कुण्डलिनी हर चीज में विद्यमान है परन्तु मानव में यह अधिकतम प्रभावशाली सर्वोत्तम तथा उच्चतम स्थिति में है। यही वह शक्ति है जो सबमें हैं और हर चीज को विकसित करती है–कार्बन से अमीबा अवस्था तक, अमीबा से पशु अवस्था तक और पशु से मानव अवस्था तक। पंच तत्वों में भी कुण्डलिनी विद्यमान है क्योंकि पंचतत्वों का भी विकास होता है। हम ये नहीं जानते कि किस प्रकार इनका विकास होता है परन्तु प्रकृति में ये घटित होता है कि तत्व अपना आकार बदलते हैं और भिन्न रूप धारण कर लेते हैं।

इस परिवर्तन की हमें कोई समझ नहीं है। क्योंकि घटित होने वाले परिवर्तन की संख्या को मापने का हमारे पास कोई तरीका नहीं है। जीवों में भी परिवर्तन होता है। मछलियाँ परिवर्तित होकर रेंगने वाले जीवों का आकार ले लेती है और रेंगने वाले जीव स्तनधारी पशु बन जाते हैं, बहुत से स्तनधारी पशु नर वानरों में परिवर्तित हो जाते हैं बन्दर बन जाते है और तत्पश्चात् मानव में परिवर्तित हो जाते हैं। यह सब घटित होता है। इस प्रक्रिया में कितने जीव नष्ट हो जाते हैं, कितने परिवर्तित होते हैं, इसका हिसाब किताब किसी ने नहीं रखा।

आज हम जनसंख्या समस्या के विषय में बात करते हैं। संभवतः बहुत से पशुओं ने मानव जन्म लिया है। इसका प्रभाव आप देख सकते हैं। लोगों के आचरण को देखकर आप विश्वस्त हो सकते हैं कि बहुत से पशुओं ने मानव रूप धारण किया है और मानव रूप में उन्हें विकास एवं प्रशिक्षण प्रक्रिया में से गुजरना होगा, तभी वे इस योग्य बनेंगे कि मानव जीवन के मूल्य को समझ सकें। मानव तो अपने अन्दर ही विकास की ओर बढ़ने लगता है।

चौदह हजार वर्षों से, जैसे माना जाता है, हम मानव हैं। पूर्ण स्वतंत्रता में हम अपने अंदर विकसित हो रहे हैं। मानव ही एकमात्र वो जीव हैं जिन्हें

स्वयं विकसित होने की स्वतंत्रता प्राप्त है और इस विकास से वे भले–बुरे के भेद को समझ सकते हैं। यह स्वतंत्रता दी गई है क्योंकि स्वतंत्रता के बिना आप आगे नहीं बढ़ सकते। उदाहरण के रूप में जब आप स्कूल में पढ़ने लगते हैं तो आपको दो गुणा दस बराबर है बीस बताया जाता है। इस पहाड़े को आप कंठस्थ कर लेते हैं, ये प्रश्न नहीं करते कि ऐसा क्यों है? इसमें आगे बढ़ते ही चले जाते हैं। परन्तु जब आप शिक्षा के उच्च स्तर पर आते हैं स्नातक या स्नातकोत्तर स्तर पर, तो आपको इस विषय पर लिखने की स्वतंत्रता होती है कि दो गुणा दस बराबर बीस क्यों होता है? ये इसलिए होता है कि आप अब विकास की एक विशेष अवस्था तक पहुँच चुके हैं। इस अवस्था में आपको स्वयं खोज करने की स्वतंत्रता दी जाती है। इस तरह से आपका विकास होता है और विकसित होकर आप शिक्षार्थियों को शिक्षा दे सकते हैं। इस प्रकार से सारा विकास कार्य हुआ।

अभी तक आपने अमीबा से लेकर इस अवस्था तक अपनी उत्क्रान्ति को महसूस नहीं किया है आपने ये नहीं समझा कि किस प्रकार आप मानव अवस्था तक पहुँचे। ये सब आपने स्वीकार भर कर लिया है। अपनी आँखों को यदि आप देखें, तो ये कितनी जटिल हैं? ये इतने जटिल अंग हैं कि आप यदि इनका अध्ययन करने लगेंगे तो इनकी रचना को देखकर दंग रह जाएंगे। आप यदि मेरी उंगली में सुई चुभोएं तो तुरन्त इसकी प्रतिक्रिया मेरी आँखों में आ जाएगी। यह इतना अच्छी तरह से बनाया गया है, इतनी अच्छी इसकी व्यवस्था की गई है, यह इतना तीव्र कार्य करता है इतना कुशल है कि मानव शरीररूपी इस प्रकार की संस्था के चमत्कार को देखकर आश्चर्यचकित रह जाता है! परन्तु आप देखें कि मानव क्या हैं? वे अकुशलता की प्रतिमूर्ति हैं। मैंनें अपनी पुत्री को चार तार (Telegram) भेजे थे आज उसने बताया कि एक महीने के बाद उसे केवल एक तार मिला।

मानव को समझने की, अपनी कुशलता को विकसित करने की और सृष्टि के सृजनकर्ता तथा उसकी शक्तियों को प्राप्त करने की स्वतंत्रता दी गई है। यही कारण है कि केवल मानव में ही कुण्डलिनी स्थापित की गई है। यद्यपि कुण्डलिनी शक्ति और कुण्डलिनी सभी जीव–जन्तुओं में भी विद्यमान है परन्तु केवल मनुष्य में ही इस शक्ति को सुप्तावस्था में त्रिकोणाकार अस्थि में रखा गया है ताकि अज्ञात क्षेत्र (unknown)में उसकी उत्क्रान्ति को यह अन्तिम ऊर्जा प्रदान कर सके। यह कुण्डलिनी विद्यमान है, इसका अस्तित्व है।

परन्तु आरम्भ में इस सारे सृजन से पूर्व सबसे पहले किसका सृजन किया गया? इसके विषय में यदि मैं बताऊंगी तो यह बात अत्यन्त दिलचस्प होगी और हो सकता है कि एक वैज्ञानिक के मस्तिष्क के लिए यह बात सुखद न हो। जो बात मैं बता रही हूँ ये विज्ञान से बहुत ऊँची है कि पृथ्वी पर सृजन से पूर्व पावित्र्य (पावनता) का सृजन किया गया। श्री गणेश पावित्र्य के देवता हैं और अपने सृजन की सुरक्षा के लिए परमात्मा ने सर्वप्रथम इस पावित्र्य का सृजन किया, इस पवित्र वातावरण का सृजन किया। पूर्ण सृष्टि की सुरक्षा के लिए उन्होंने पावित्र्य का सृजन किया क्योंकि बिना इसके कोई भी चीज कार्यान्वित न हो पाती। आप इस बात को सोचें कि कोई एक सागर यदि केवल दस फुट भी गहरा होता तो पृथ्वी का सारा सन्तुलन बिगड़ गया होता। कल्पना करें कि पृथ्वी माँ की गति कितनी तेज है! इतनी तीव्र गति से यह सूर्य के चहुँ ओर अत्यन्त सन्तुलित ढंग से घूमती है। इसकी परिक्रमा गोल नहीं होती, यह एक विशेष प्रकार की होती है इस बात को आप जानते हैं।

आपके लिए वह दिन और रात बनाती है–कार्य

करने के लिए दिन और आराम करने के लिए रात। किस प्रकार स्वयं पृथ्वी माँ ने आपके लिए इतना सुन्दर वातावरण बनाया है, इतना सन्तुलन बनाया है और जो तापमान उसे दिया गया था उसे शीतल किया है! यह सारा कार्य सर्वप्रथम सृजित पावनता की शक्ति से हो पाया है।

अब अपनी मूर्खता के कारण मानव इस पावित्र्य को चुनौती दे रहा है। वो सोचता है कि वह परमात्मा को चुनौती दे सकता है। यह उसकी चेतनता का चिन्ह है। मानव यदि उस बुलन्दी तक उन्नत हो पाता जहाँ हर चीज में वह परमात्मा की धड़कन को महसूस कर सकता तो उसने परमात्मा को चुनौती कभी न दी होती। परन्तु पूर्णता की उस अवस्था को पाने से पूर्व ही मानव ने परमात्मा की बात करनी शुरु कर दी। जो भी व्यक्ति परमात्मा को चुनौती देने की सोचता है वह ऐसा मूर्ख है जिसे पूर्णता प्राप्त करने की कोई इच्छा नहीं है, वह तो केवल बड़ी–बड़ी बातें करना चाहता है।

पावनता की सर्वव्यापी शक्ति है जो सुधारती है, पथ प्रदर्शन करती है, आयोजन करती है, प्रेम करती है तथा आपके अन्दर की सुप्त शक्ति की जागृति के लिए पूर्ण व्यवस्था करती है। अतः व्यक्ति को समझना चाहिए कि कुण्डलिनी की जागृति का घटित होना बहुत महत्वपूर्ण घटना है। कुण्डलिनी जागृति ही एकमात्र मार्ग है जिसके द्वारा आप अपनी आत्मा को पहचान सकते हैं। मानव के इतिहास में यह महत्वपूर्णतम घटना है। यह कार्य उद्यान की तैयारी करने जैसा है जिसमें आप पेड़ लगाते हैं, पेड़ों पर फूल आते हैं और अब वह समय आ गया है जब फल भी लगने चाहिएं। ये बहुत महत्वपूर्ण घटना है जिसने घटित होना है। सभी सत्य साधक इसके विषय में जान जाएंगें।

सत्य साधना में कठिनाई यह है कि अपने अन्तस में विनम्रता से परिपूर्ण होकर साधना करनी पड़ती है। सत्य की खोज के लिए किसी को सम्मोहित नहीं किया जा सकता क्योंकि सम्मोहित किया गया व्यक्ति तो सत्य को समझ ही नहीं सकता। अपनी पूर्ण चेतना और गरिमा में आपको सत्य का ज्ञान प्राप्त करना है। आपके सम्मुख भाषण देने मात्र से आप सत्य को नहीं समझ पाएंगे। यह आत्मसाक्षात्कार पाखण्डी लोगों द्वारा किया गया सम्मोहन नहीं है। यह घटना है, वास्तवीकरण है जिसके द्वारा चेतना की अवस्था में पहुंचते हैं और जो आपके अन्दर सामूहिक चेतना के गणित का विकास करती है। यह चेतना अवस्था आपके अन्दर विकसित होती है और यही सच्चा वास्तवीकरण है।

आप क्योंकि मानव हैं अतः आप जानते हैं कि जब इस मानव अस्तित्व के कैप्सूल में धमाका हुआ तो आपको बहुत सी उपलब्धियां प्राप्त हुई। उदाहरण के रूप में आपकी चेतना पशुओं की चेतना से कहीं अधिक है। आपके विश्वविद्यालय हैं। पशुओं के विश्वविद्यालय नहीं हो सकते। पशु बाग–बगीचों को नहीं समझते, गन्दगी को नहीं समझते, सौन्दर्य को नहीं समझते। ये सारा ज्ञान आपमें आ गया है। ज्योंही आप मानव बने इस सारे ज्ञान की अभिव्यक्ति आपके अन्तस की गहनता में हो गई।

अतः कुण्डलिनी जागृति द्वारा ज्योंही आप दिव्य मानव बनते हैं तो अपने अन्दर आपको अपनी पहचान हो जाती है और अन्य लोगों को समझने की चेतना आपमें आ जाती है। यही सामूहिक चेतना है। यही सहजयोग है। सहजयोग प्रकृति की प्रणाली है। जिस प्रकार यह सृजन हुआ वह भी सहज है। 'सह' का अर्थ है साथ और 'ज' अर्थात जन्मा हुआ। सहज का अर्थ है साथ जन्मा हुआ। सभी कुछ आपके अन्दर एक बीज की तरह से बना हुआ है।

बीज को यदि आप ध्यान से देखें तो इसमें एक ऐसा तत्व होता है जो अकुंरित होता है। बीज के

अन्दर उस पेड़ की पूरी शक्ति होती है जो इसे बनना है, सभी कुछ इसमें निहित होता है। इसी प्रकार से मानव के बीज के अन्दर भी वो सारी तस्वीर होती है जो उसे बनना है। सारी यान्त्रिकता उसके अन्दर स्थापित कर दी गई होती है।

आपके अस्तित्व की अन्तर्धाराओं का वर्णन मैं आपके सम्मुख करूंगी। मानव के अन्दर कौन सी शक्तियां बनाई गई हैं? मैं केवल इतना कहना चाहूँगी कि आप कम्प्यूटर की तरह से हैं, कम्प्यूटर की तरह से आपको बनाया गया है। आपने केवल स्वयं को स्रोत से जोड़ना है। स्रोत से जुड़ते ही कम्प्यूटर स्वतः कार्य करने लगता है। परन्तु मशीन से जुड़ने का यही तरीका है। आप मानव हैं। आप समझते हैं कि प्रेम क्या है। एक वैज्ञानिक से मैं प्रेम के विषय में बात नहीं कर सकती। परमेश्वरी पावनता के विषय में मैं बात कर रही हूँ। परमात्मा के प्रेम के बारे में, जिसने आपका सृजन किया है और जो चाहता है कि आप उस (परमात्मा) को पहचानो। विज्ञान के माध्यम से आप ऐसा नहीं कर सकते।

हर वैज्ञानिक भी अवश्य किसी न किसी से प्रेम करता होगा, अपने बच्चों से शायद उसे प्रेम न हो तो शायद अपने कुत्ते से प्रेम करता होगा। हो सकता है वो फूलों से प्रेम करता हो। यदि फूलों से नहीं तो हो सकता हो अपने घोड़ों से प्रेम करता हो। परन्तु वह यह अवश्य जानता है कि प्रेम क्या है और यदि वह समझता है कि प्रेम चिंगारी क्या है, ये कहाँ से आती है तो उसकी समझ में आ जाएगा कि जिस प्रेम की बात मैं कर रही हूँ वह इन सारी शक्तियों का सामंजस्य है।

विज्ञान एक छोटे से अंश को देखता है। मैं भी आपको यह बताऊंगी कि इस शक्ति का कौन सा भाग हमारे शारीरिक अस्तित्व को देखता है और उसमें से भी वैज्ञानिक कितना कुछ जानता है। आपको आश्चर्य होगा कि ज्ञान यदि सागर है तो वैज्ञानिक केवल बूँद मात्र जानता है। सागर को समझने के लिए बूँद को सागर में गिरकर अपना अस्तित्व उसमें खो देना होगा। केवल अपने प्रयत्न से बूँद सागर नहीं बन सकती। सागर को बूँद अपने अन्दर विलीन करनी होगी। सागर को यह कार्य करना होगा। मानव को यदि पूर्ण सन्तुष्टि प्राप्त करनी है तो परमात्मा की सुन्दर सृष्टि की अभिव्यक्ति मानव के अन्दर होती है। मानव को चाहिए कि पूर्ण सन्तुष्टि प्राप्त करे। पूर्ण सन्तुष्टि प्राप्त किए बिना वह अपने किसी भी प्रयत्न में पूर्णता को नहीं पा सकता। जब तक मानव इस अवस्था को नहीं पा लेता परमात्मा स्वयं भी चैन से नहीं बैठेंगे, क्योंकि कौन चाहेगा कि अपनी ही सृष्टि को नष्ट कर दे? हज़ारों हज़ार वर्षों में सन्तुष्टि प्राप्ति की यह अवस्था आई है। यह कार्य यदि मेरे द्वारा ही होना है, मैने ही यदि आपकी कुण्डलिनी को उठाना है तो आपको इस पर एतराज क्यों होना चाहिए? परमात्मा का शुक्र है कि मैं वैज्ञानिक नहीं बनी अन्यथा मैंने भी एटम बम बना दिया होता। परमात्मा की कृपा से मैं मनोवैज्ञानिक नहीं बनी नहीं तो पागल लोगों की बातें सुनते सुनते मैं पागल हो गई होती। परमात्मा की धन्यवादी हूँ कि मुझे राजनीतिज्ञ नहीं बनाया।

परमात्मा की कृपा से मैं इनमें से कुछ भी नहीं हूँ। मैं तो बस आपकी माँ हूँ और सदैव आपके सर्वोच्च हित के लिए चिन्तित रहती हूँ, उथले लाभ के लिए नहीं।

परमात्मा आप सब पर कृपा करें
(महाअवतार 1980 से उद्धृत)

'निर्मला'

18 जनवरी 1980 को राहुरी में मराठी प्रवचन का हिन्दी रूपान्तर जिसमें परमपूज्य श्री माताजी ने स्वतः पूर्ण मन्त्र स्वनाम 'निर्मला' (निः+म+ला) में निहित गूढ़ भाव की विश्लेषणपूर्ण विशद व्याख्या की है।

यह हर्ष की बात है कि सब सहजयोगी एक साथ एकत्रित हुए हैं। जब हम इस भाँति एकत्रित होते हैं तब हम परस्पर हित की अनेक बातों पर विचारों का आदान–प्रदान कर सकते हैं और उन विषयों पर अनेक सूक्ष्म बातें एक दूसरे को बता सकते हैं। दो–एक दिन पहले मैंने अपको को स्वच्छ, दोष–मुक्त करने की विधि बताई थी। स्वयं आपकी माँ का नाम ही निर्मला है और इसमें अनेक शक्तियाँ है।

इस नाम में पहला शब्द 'निः' है जिसका अर्थ है 'नहीं'। कोई वस्तु जिसका वास्तव में अस्तित्व नहीं है किन्तु जिसका अस्तित्व प्रतीत होता है, उसे महामाया (भ्रम) कहते हैं। सम्पूर्ण विश्व इसी प्रकार है। यह दिखता है किन्तु वास्तव में नहीं है। यदि हम इसमें तल्लीन हो जाते हैं तो प्रतीत होता है यही सब कुछ है। तब हमें लगता है हमारी आर्थिक अवस्था अच्छी नहीं है, सामाजिक व पारिवारिक स्थितियाँ असन्तोषजनक हैं। हमारे चारों ओर सम्पूर्ण जो कुछ भी है सब खराब है। हम किसी चीज़ से सन्तुष्ट नहीं हैं।

समुद्र सतह पर जल अत्यन्त गदला होता है। उसके ऊपर अनेक वस्तुएं तैरती रहती हैं। किन्तु यदि हम उसकी गहराई में जायें तो देखेंगे कि उसके भीतर कितना सौंदर्य, कितनी धन–सम्पदा और कितनी शक्ति है। तब हम भूल जायेंगे कि सतह का जल मैला है।

कहने का अभिप्राय है कि हम चारों ओर जो देखते हैं वह सब माया (भ्रम) है। सर्वप्रथम आप को स्मरण रखना चाहिये कि यह सब जो दिखता है यह कुछ नहीं है। यदि आपको 'निः' भावना अपने अन्दर प्रतिष्ठित करना है तो जब भी आपके मन में विचार आये तो कहिये यह कुछ नहीं है, यह सब भ्रम है, मिथ्या है। दूसरा विचार आये तो कहिये यह कुछ नहीं है। आपको बारम्बार यह भाव लाना है। तब आप 'निः' शब्द का अर्थ समझ पायेंगे।

आपको जो कुछ माया–रूप दिखता है यह सम्पूर्णतः भ्रम मात्र नहीं है, इस दृश्यमान के परे भी कुछ है। किन्तु अपने जन्मों के इतने बहुमूल्य वर्ष हमने वृथा गंवा दिये हैं कि हम वे वस्तुएँ जिनका वास्तव में अस्तित्व नहीं है उनको महत्व देते हैं और इस भाँति हमने पापों के ढेर इकट्ठे कर लिये हैं। इन सब वस्तुओं में हमने आनन्द–लाभ करने का प्रयास किया है, किन्तु वास्तव में इनमें से हमें कुछ भी आनन्द प्राप्त नहीं हुआ। तत्व रूप से ये सब कुछ नहीं है।

अतः दृष्टिकोण यह होना चाहिये कि यह सब "कुछ नहीं" है। केवल ब्रह्म ही सत्य है, अन्य सब मिथ्या है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपको यह दृष्टिकोण अपनाना है। तब आप सहज योग को समझेंगे। साक्षात्कार के पश्चात् अनेक सहज योगियों का यह होता है कि वे सोचते हैं कि हमें सिद्धि (साक्षात्कार) प्राप्त है, **हमें पूज्य माताजी का आशीर्वाद प्राप्त है तो हम समृद्ध क्यों नहीं हैं? उन के विचार में परमात्मा का अर्थ है समृद्धि।** यदि आप विचार करें कि क्या कारण है कि साक्षात्कार के पश्चात् भी आपका 'स्वभाव' नहीं बदला, तब आप देखेंगे कि आपकी आत्मा का स्वरूप नहीं बदला। देखिये, 'स्व' अर्थात् आत्मा और 'भाव' अर्थात् स्वरूप के योग से बना 'स्वभाव' शब्द कितना सुन्दर है। बताइये, क्या आपने अपनी आत्मा का स्वरूप प्राप्त कर लिया है? यदि आप 'आत्मा' में स्थित हो गये तो आप देखेंगे कि भीतर

इतना सौंदर्य है कि आपको बाह्य सब कुछ नाटक सा प्रतीत होगा। जब तक आपकी यह साक्षी स्थिति जागृत नहीं होती, आपने 'निः' शब्द का अनुसरण नहीं किया, उसके अनुसार आचरण नहीं किया। यदि आप जानते हैं कि 'निः' आपके भीतर प्रतिष्ठित नहीं हुआ है, फिर भी आप भावुक, अहकांरी, हठी अथवा विनम्र व निराश होते रहते हैं तो इन पराकाष्ठाओं (असीम अवस्थाओं) में स्थिति का कारण 'निः' से सम्बन्धित है। आप न इधर न उधर, न इस स्थिति में हैं और न उस स्थिति में, अर्थात् डावाँडोल स्थिति में हैं। 'निः' स्थिति ध्यानयोग में सर्वश्रेष्ठ रूप में प्राप्त की जा सकती है। अपने जीवन में 'निः' विचार का अनुसरण करने से आप 'निर्विचार' स्थिति प्राप्त कर लेंगे।

सर्वप्रथम आपको निर्विचार होना चाहिये। जब आपके मन में कोई विचार आता है, चाहे वह अच्छा हो अथवा बुरा, तब विचारों का ताँता–सा लग जाता है। एक के बाद दूसरा विचार आता रहता है। कुछ लोग कहते हैं कि बुरे विचार का अच्छे विचार से प्रतिकार करना चाहिये, अर्थात् एक दिशा से आने वाली गाड़ी को जब विपरीत दिशा से आने वाली गाड़ी से धकेला जाये तो दोनों एक मध्य स्थान पर रुक जायेंगी। कहीं तक यह ठीक है किन्तु कभी–कभी यह हानिकारक भी हो सकता है। एक कुविचार जब एक सुविचार द्वारा दबाया जाता है तो यह भीतर ही भीतर दबा रहता है। किन्तु यह एकाएक उभर सकता है। अनेक व्यक्तियों के साथ ऐसा ही होता है। वे अपने सामान्य विचारों को दबा रखते हैं और अपने से कहते हैं हमें परोपकारी होना चाहिये, अपने आचरण अच्छे रखने चाहियें, इत्यादि। कभी–कभी ऐसे लोग बड़े उपद्रव–ग्रस्त हो सकते हैं। अचानक एकदम यह क्रोध के वशीभूत हो जाते हैं और लोग चकित हो जाते हैं कि ये सज्जन व्यक्ति कैसे इतने क्रोध–ग्रस्त हो गये! वे अपनी निजी मानसिक शन्ति भी खो बैठते हैं। उनका सम्पूर्ण आन्तरिक सौंदर्य समाप्त हो जाता है। अतः वांछनीय यही है कि हम सदैव निर्विचार रहें। अपने मस्तिक से छोटे विचारों पर प्रतिबन्ध लगा दें। तब आप स्वतः ही मध्य में रहेंगे।

आपको समस्त प्रयत्न करने चाहियें। अब आप पूछेंगे, 'माँ, बिना विचार किये हम काम कैसे कर सकते हैं?" अब आपके विचार क्या हैं? वह वास्तव में खोखले हैं। निर्विचार अवस्था में आप परमात्मा की शक्ति के साथ एकरूप हो जाते हैं अर्थात् बूंद (अर्थात् आप स्वयं) समुद्र (अर्थात् परमात्मा) में आकर मिल जाती है। तब परमात्मा की शक्ति भी आपके भीतर आ जाती है। क्या आप की अंगुली सोचती है? क्या यह फिर भी चल नहीं रही? अपने विचारों को परमात्मा को समर्पित कर दें और अपने विषय में सोचने का भार उस पर छोड़ दें। किन्तु यह कठिन–सा है क्योंकि आप निर्विचार स्थिति में नहीं है।

अनेक लोग कहते हैं हमने सब परमात्मा को समर्पण कर दिया है। किन्तु यह केवल मौखिक होता है, वास्तव में नहीं। समर्पण मौखिक क्रिया नहीं है। निर्विचारिता प्राप्त करने के लिये, जिसका अर्थ है आपका विचार करना बन्द कर देना, आपको समर्पण करना पड़ता है। जब आपकी विचार क्रिया बन्द हो जाती है तब आप मध्य में आ जाते हैं। मध्य में आते ही तुरन्त आप निर्विचार चेतना में पहुँच जाते हैं अर्थात् आप परमात्मा की शक्ति के साथ एकरूप हो जाते हैं और जब ऐसा होता है तब वह (परमात्मा) आपकी देख–रेख करता है। वह आपकी छोटी–छोटी बातों के विषय में सोचता है। यह आश्चर्यजनक है। किन्तु आप करके तो देखें

और आप देखेंगे कि आपका पहला रास्ता गलत था। अतः एक बार जब आप निर्विचारिता का स्वाद लेते हैं तो आप देखते हैं कि आपको समस्त प्रेरणायें, समस्त शक्तियाँ और अन्य सर्वस्व प्राप्त होने लगता है। निर्विचारिता में आपके मन में जो विचार आता है वह एक अन्तः प्रेरणा (inspiration) होती है। आप चकित होंगे। प्रत्येक वस्तु आपके सामने ऐसे आयेगी मानो थाली में परोस कर आपके सम्मुख प्रस्तुत कर दी गई। आप वक्तृता देने खड़े होते हैं, केवल निर्विचारिता में प्रवेश कीजिये और श्रीगणेश कर दीजिये। यद्यपि आपने पहले कभी भाषण नहीं दिया, भाषण की कला का आपको कुछ ज्ञान नहीं अथवा प्रस्तुत विषय का आपको कुछ विशेष ज्ञान नहीं, किन्तु चमत्कार! आप इतना कमाल का बोलेंगे कि लोग स्तम्भित हो जायेंगे कि यह ज्ञान भण्डार आप में कहाँ से उमड़ पड़ा! किन्तु जहाँ एक बार आप निर्विचारिता में गहरे उतरे, सब कुछ वहाँ से (निर्विचारिता से) आता है, न कि आपके मस्तिष्क से।

अब मैं आपको अपना रहस्य बताती हूँ। आप प्रार्थना कीजिये, "माँ" मेरे लिये कृपया ऐसा कर दीजिये"। आप आश्चर्य करेंगे मैं आपकी विनती पर विचार नहीं करती। केवल उसे अपनी निर्विचारिता को समर्पित कर देती हूँ। सम्पूर्ण संयन्त्र वहाँ क्रियाशील होता है। उसे (विचार को) उस संयन्त्र (निर्विचारिता) में डालिये और माल तैयार होकर आपके सम्मुख आ जाता है। आप उस संयन्त्र–यों कहें नीरव अथवा शान्त संयन्त्र–को काम तो करने दीजिये। अपनी सारी समस्याएं उनको सौंपिये। किन्तु बुद्धि–जीवियों के लिये यह अत्यन्त कठिन है क्योंकि उनको प्रत्येक बात के बारे में सोचने की आदत होती है।

किसी विषय को समझने की कोशिश करते समय आप निर्विचारिता में प्रवेश करने की क्षमता प्राप्त कीजिये। आप देखेंगे सब कुछ स्वतः ही स्पष्ट हो जाता है। आप जो अनुसन्धान करते हैं वह भी निर्विचार अवस्था में रहना चाहिये। निर्विचार अवस्था में कार्य–रत रहने का अभ्यास कीजिये। इस भाँति आप अति उत्कृष्ट रीति से अपना अनुसंधान कार्य कर सकते हैं। मैं अनेक विषयों पर बोलती हूँ। अपने जीवन में मैंने कभी विज्ञान का अध्ययन नहीं किया और उस विषय में कुछ नहीं जानती। फिर यह सब ज्ञान कहाँ से आता है? निर्विचारिता से। मैं बोलती जाती हूँ और जो कुछ होता है उसे देखती रहती हूँ। मेरे वाणीरूपी कम्प्यूटर में मानो यह सब कुछ पहले से तैयार करा कराया रखा था। यदि आप निर्विचार अवस्था में नहीं हैं तो आप उस कम्प्यूटर (अर्थात् निर्विचारिता) का उपयोग नहीं कर रहे हैं और अपने मस्तिष्क को उसके ऊपर प्रतिष्ठित करते हैं (अर्थात् आपका निर्विचारितारूपी कम्प्यूटर निष्क्रिय रहता है और आपके सब कार्य मानव मस्तिष्क शक्ति, जो सीमित है, उसके बल पर होते हैं) निर्विचारिता एक प्राचीन कम्प्यूटर है और इसकी शक्ति से विपुल परिमाण में सही कार्य किया गया है यदि आप अपने मस्तिष्क का प्रयोग करते हैं और इस कम्प्यूटर का आश्रय नहीं लेते तो आप निश्चित् रूप से गलतियाँ करेंगे।

निर्विचार अवस्था में जो कुछ भी घटित होता है वह प्रबुद्ध प्रकाशमान होता है। हिन्दी, मराठी तथा संस्कृत भाषाओं में किसी शब्द से पहले 'प्र' युक्त करने से उसका अर्थ होता है प्रकाशित, प्रकाशमान। प्रकाश कभी बोलता नहीं। यदि आप कमरे की बत्ती जला दें, तो वह बत्ती (दीप) बोलेगी नहीं अथवा कोई विचार आपको नहीं देगी। वह केवल सब कुछ दृष्यमान (प्रकट) कर देगी। यही बात निर्विचारिता रूप प्रकाश के बारे में है। निर्विचार, निरहंकार

(अर्थत् अहंकार रहित) इत्यादि सब शब्दों के पहले 'निः' जुड़ा है। आप इसे (अर्थात् 'निः' को) अपने भीतर स्थापित कीजिये और तब आप निर्विकल्प अवस्था में आ जायेंगे। पहले निर्विचार, तत्पश्चात् निर्विकल्प। तब आपके समस्त सन्देह व शंकायें समाप्त हो जाती हैं और आपको प्रतीत होता है कि कोई शक्ति है जो काम करती है। यह शक्ति अत्यन्त द्रुत गति से काम करती है और अत्यन्त सूक्ष्म है। आप आश्चर्य करेंगे यह सब कैसे घटित होता है।

यही बात समय के विषय में है। मैं कभी घड़ी की तरफ नहीं देखती। कभी–कभी यह रुक जाती है, कभी ग़लत समय बताती है। किन्तु मेरी असली घड़ी निर्विचारिता में है। यह हमेशा स्थिर (शान्त) रहती है। यदि कोई कार्य करना हो तो वह उचित् समय पर हो जाता है। फिर मन में कुछ पश्चाताप नहीं होता कि यह समय पर हुआ अथवा देरी से। जब भी हो, मुझे कोई चिन्ता नहीं।

कल मेरी गाड़ी (कार) खराब हो गई। किन्तु मैं आनन्दमग्न थी क्योंकि मैं तारागणों को देखना चाहती थी। वह सौंदर्य लन्दन में उपलब्ध नहीं होता। अतः मैं वह देखना चाहती थी। इसका सौंदर्य सम्पूर्ण आकाश में व्याप्त था। आकाश की अभिलाषा थी माँ उसकी इस छटा को देखें। कभी–कभी मुझे उस ओर भी देखना आवश्यक होता है। मैं उसका आनन्द लाभ कर रही थी। संक्षेप में, आपको किसी वस्तु का दास नहीं होना चाहिये।

यदि आप निर्विचार अवस्था में हैं तो परमात्मा आपको सर्वत्र ले जाते हैं मानो अपने हाथों पर उठा कर, ऐसी सरलतापूर्वक। वह सब प्रबन्ध कर देते हैं। वह सब कुछ जानते हैं और उन्हें कुछ भी बताने की आवश्यकता नहीं। किन्तु आपको देखना है आप मुख्य धारा (निर्विचारिता) में हैं अथवा नहीं। यदि आप इसमें नहीं है और आप कहीं किनारे पर अटके हैं तो प्रवाह, तरंगे आती हैं और आपको मुख्य धारा में ले जाती हैं, एक बार, दो बार, तीन बार। किन्तु यदि आप फिर भी किनारे पर आकर अटक जाते हैं, तब आप कहते हैं "माता जी, मेरा कोई कार्य सुचारु रूप से नहीं होता। वास्तव में होगा भी नहीं। कारण, आप किनारे पर अटके हैं।

श्री गणेश की जो आप स्तुति गान करते हैं वह अत्यन्त सुन्दर है। इसमें कहते हैं "मुख्य धारा (प्रवाह) में प्रवाहित............." जिसका अर्थ है प्रकाशमान मुख्य धारा (प्र+वाह)। आप इसमें अपनी पृथक् लहर, तरंगे न मिलायें। श्री गणेश की आरती में यह भी आता है। "निर्वाणी रक्षावे" अर्थात् मृत्यु के समय मेरी रक्षा करें। आप यह भी कहते हैं "रक्षः रक्षः परमेश्वरः" हे परमात्मा, आप मेरी रक्षा करें। किन्तु आप स्वयं ही अपनी रक्षा करना चाहते हैं। फिर परमात्मा आपकी रक्षा क्यों करें? वह (परमात्मा) कहते हैं "उसे अपनी रक्षा अपने आप ही करने दो।" मैं इस बात पर बल देना चाहती हूँ कि आपको गहराई में जाना सीखना चाहिये और निर्विचारिता में ही सब कुछ प्राप्त करना चाहिये। तभी आप निर्विकल्प स्थिति प्राप्त कर सकते हैं।

आपको निरासक्त रहना चाहिये। यहाँ भारत में लोग कहते हैं "मेरा बेटा, मेरी बेटी।" इंग्लैण्ड में इसके विपरीत होता है। वहाँ बेटा, बेटी किसी से कोई लगाव (आसक्ति) नहीं होती। वे केवल अपने स्वयं के बारे में सोचते हैं। यहाँ हर चीज़ में 'मेरा, मेरा' मेरा लड़का, मेरी लड़की, मेरा मकान और अन्त में विचारों में केवल 'मैं' और 'मेरा' ही बाक़ी रह जाता है, इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं। आपको कहना चाहिये मेरा कुछ भी नहीं है, सब कुछ आपका ही है। सन्त कबीर कहते हैं "जब तक

बकरी जीवित रहती है तब तक वह 'मैं', 'मैं' करती है। किन्तु उसको मारने के बाद उसकी आँतों के तारों से जो ताँत (जिससे धुनिया रुई धुनता है) बनती है, उसमें से 'तू–ही–तू' आवाज़ आती है। आपको भी 'तू–ही–तू ही' भावना में मग्न रहना चाहिए। जब आप 'मैं नहीं हूँ' मेरा कोई अस्तित्व नहीं है' इस भावना में दृढ़ स्थित हो जाते हैं तभी आप 'निः' शब्द को समझ सकेंगे।

अब 'निर्मला' नाम के अन्तिम अक्षर 'ला' के विषय में विचार करें। मेरा दूसरा नाम है 'ललिता'। यह देवी का आशीर्वाद है। यह उसका आयुध (शस्त्र) है। जब 'ला' अर्थात् 'देवी' ललिता रूप धारण करती है अथवा जब शक्ति ललित अर्थात् क्रियाशील रूप में परिणत होती है अर्थात् जब उस में चैतन्य लहरियाँ प्रवाहित होती हैं जो आप अपनी हथेलियों पर अनुभव कर रहे हैं, वह शक्ति 'ललिता शक्ति' है। यह सौंदर्य एवं प्रेम से परिपूर्ण है। जब प्रेम की शक्ति जागृत होती है तब वह 'ला' शक्ति बन जाती है। यह आपको चारों ओर से घेर लेती है। जब वह क्रियाशील होती है तब चिन्ता कैसी? तब आपकी कितनी शक्ति होती है? क्या आप वृक्ष से एक फल भी बना सकते हैं। फल की तो बात क्या, आप एक पत्ता अथवा जड़ भी नहीं बना सकते। केवल मात्र 'ला' शक्ति यह सब कार्य करती है। आपको जो आत्म–साक्षात्कार प्राप्त हुआ है वह भी इसी शक्ति का काम है। इसी शक्ति से 'निः' तथा 'म' (निर्मला नाम के प्रथम व द्वितीय अंश) शक्तियों का जन्म हुआ है। 'निः' शक्ति श्री ब्रह्मदेव की श्री सरस्वती शक्ति है। सरस्वती शक्ति में आप को 'निः' के गुण अर्जन (प्राप्त) करने चाहिये। 'निः' शक्ति प्राप्त करने का अर्थ है पूर्णतः निरासक्त बनना। आपको पूरी तरह निरासक्त बनना चाहिये।

'ला' शक्ति में प्रेम का समावेश (सम्मिलित) है वह हमारा दूसरों से नाता जोड़ती है। 'ल' शब्द 'ललाम', 'लावन्य' में आता है। 'ल' शब्द में उसका अपना ही विशेष माधुर्य है और आपको दूसरों को उससे (माधुर्य से) प्रभावित करना चाहिये। दूसरों से बातचीत करते समय आपको इस शक्ति का प्रयोग करना चाहिये। चराचर में यह प्रेम की शक्ति व्याप्त है। ऐसी, स्थिति में आपका क्या कर्त्तव्य है? आपको अपने सारे विचार प्रथम (निः) शक्ति पर छोड़ देने चाहियें क्योंकि विचारों का जन्म उस प्रथम शक्ति से ही होता है। अन्तिम (ला) शक्ति, जो प्रेम और सौंदर्य की शक्ति है, उससे आप को प्रेम के आनन्द का रसास्वादन करना चाहिये। यह कैसे करें? अपने आपको दूसरों के प्रति प्रेमभाव में भूल जायें, उस भाव में खो जायें। क्या किसी ने अनुमान लगाया है कि वह दूसरों से कितना प्रेम करता है? यह बढ़ता ही रहना चाहिये। आप दूसरों को कितना प्यार करते हैं और इस भाव में कितना आनन्द लेते हैं? क्या अपने बारे में आपने सोचा है? मानवों के विषय में मैं कह नहीं सकती, किन्तु अपने स्वयं के विषय में मैं कह सकती हूँ कि मैं दूसरों से प्रेम करने में अत्यन्त आनन्द अनुभव करती हूँ। अनुभव करें, कैसे चारों और प्रेम की गंगा बह रही है, वह अनुभूति कितनी आनन्ददायक है! एक गायक को देखिये, वह कैसे अपने स्वयं के राग में अपने आपको भूल जाता है, उसमें खो जाता है और सर्वत्र उस संगीत को प्रवाहित होते अनुभव करता है! इसी भाँति प्रेम भी अबाधित रूप से प्रवाहित होना चाहिये। अतः आप 'ललाम' शक्ति, जो चैतन्य लहरियों के रूप में विशुद्ध दिव्य प्रेम की शक्ति है उसे पहले अपने भीतर जागृत करें।

आप देखें कि आप दूसरों की ओर किस दृष्टि से देखते हैं। कुछ निम्न स्तर के लोग दूसरों से कुछ

चुराने अथवा उनसे कुछ लाभ उठाने के भाव से देखते हैं, कुछ दूसरों के दोषों को देखते हैं। पता नहीं इसमें उन्हें क्या आनन्द आता है। इस भाँति वे अकेले, अलग–अलग हो जाते हैं और फिर कष्ट भोगते हैं। यह स्वयं कष्टों को निमन्त्रण देना है। मुझे तो सबसे मिलने, भेंट करने में आनन्द आता है।

आपको 'ललाम' शक्ति का जो चैतन्य लहरी रूप में दिव्य प्रेम की शक्ति है–उपयोग करना चाहिये। दूसरे व्यक्ति को देखने मात्र से आप निर्विचारिता में पहुँच जायें। इससे दूसरा व्यक्ति भी निर्विचार हो जायेगा। अतः आप अपने को एवं दूसरे को भी विशुद्ध दिव्य प्रेम का बन्धन दें। 'निः' शक्ति और 'ला' शक्ति को बँधने दें। 'ला' शक्ति अर्थात् चैतन्य लहरियों के रूप में प्रेम की शक्ति को 'निः' शक्ति अर्थात् निर्विचारिता में पहुँचाना, परिणत करना है। दोनों को बन्धन देना लाभप्रद है। बहुत से लोगों से, जो बड़े अभिमानी हैं अथवा जो सोचते हैं कि वे बड़े काम करने वाले, कर्मवीर हैं, उनसे मैं अपनी बायें पार्श्व (side) को उठाने को बताती हूँ। इस भाँति हम अपने स्वयं के पंच तत्त्वों (पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश) में अपने स्वयं के विशुद्ध दिव्य प्रेम को भरते हैं, संचारित करते हैं। अपने हृदय के प्रेम की शक्ति (हमारा बायाँ पार्श्व) को अपनी क्रिया शक्ति (हमारा दायाँ पार्श्व) में पहुँचाना चाहिये, जैसे आप कपड़े पर रंगों से चित्रण करते हैं। जब इस भांति क्रिया शक्ति में प्रेम शक्ति का सम्मिश्रण किया जाता है तब वह व्यक्ति अत्यन्त मधुर बन जाता है और क्रमशः वह माधुर्य, प्रेम उसके व्यक्तित्व और उसके आचरणों में प्रकाशमान होता है। वह प्रेम प्रवाहित होकर दूसरों को प्रभावित करता है और उसकी प्रत्येक क्रिया अत्यन्त रसमय हो जाती है। वह व्यक्ति इतना आकर्षणयुक्त बन जाता है कि आप घण्टों उसके संगीत में आनन्द और प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। आपका प्रेम दूसरों को आनन्ददायक और दूसरों के मन को जीतने वाला बनना चाहिये। इसके फलस्वरूप सब आपके मित्र बन जाते हैं और परस्पर प्रेम बढ़ता है। प्रत्येक अनुभव करता है कि एक स्थान है जहाँ उसे प्रेम और वात्सल्य मिल सकता है। अतः आपको प्रेम की ईश्वरीय शक्ति को अपने भीतर विकसित करना चाहिये।

हमें सदैव निर्विचारिता ('निः' शक्ति) में रहना चाहिये। जब भी कोई विचार आये तो सोचिये ईश्वर के प्रेमरूपी पवित्र गंगा में यह गन्द कहाँ से आ गई? ऐसी चित्त–वृत्ति से हमारी 'ला' शक्ति अर्थात् दिव्य प्रेम की शक्ति सदैव स्वच्छ, निर्मल रहेगी और उस स्वच्छता के आनन्द में हम विभोर रहेंगे।

आप दूसरों की टीका–टिप्पणी (criticism) न करें। यदि आप मुझसे किसी व्यक्ति के विषय में पूछें तो मैं केवल उसकी कुण्डलिनी की अवस्था के विषय में बता सकती हूँ अथवा उसका कौन सा चक्र इस समय पकड़ा हुआ है अथवा बहुधा पकड़ा रहता है। इसके अतिरिक्त मैं कुछ नहीं समझ सकती कि वह कैसा है, उसका स्वभाव कैसा है, इत्यादि। यदि इस विषय में मुझसे पूछा जाये तो मैं कहूँगी, स्वभाव होता क्या है? यह परिवर्तनशील होता है। नदी इस समय यहाँ बह रही है। बाद में उसका बहाव कहाँ होगा, कौन बता सकता है? इस समय आप कहाँ हैं? यही विचार करने की बात है। आप नदी के इस किनारे पर खड़े हैं तो आपको विचित्र लगता है कि नदी यहाँ बह रही है। मैं समुद्र की दिशा में खड़ी हूँ। इस कारण मैं जानती हूँ इसका उद्‌गम–स्थल कौन सा है। अतः आप किसी को भी व्यर्थ, निकम्मा न कहें। प्रत्येक व्यक्ति

बदलता रहता है, यह अवश्य होता है। सहजयोग का कार्य परिवर्तन लाना है। सहजयोग में विश्वास करने वाले व्यक्तियों को किसी को नहीं कहना चाहिये कि वह बेकार हो गया है। प्रत्येक को स्वतन्त्रता होनी चाहिये। आप सब जानते हैं हमारी वर्तमान स्थिति क्या है। यदि आप इस भाँति सोचेंगे तो आप न केवल अपने स्वयं का आत्म–सम्मान करते हैं, बल्कि दूसरों का भी सम्मान करते हैं। जिसमें आत्म–सम्मान नहीं है, वह दूसरों का कभी आदर नहीं कर सकता।

हमें ललाम शक्ति का विकास करना चाहिये। एक पुस्तक लिखकर भी मैं इसका आनन्द पर्याप्त रूप से वर्णन नहीं कर सकती क्योंकि सौंदर्य को प्रकट करने के लिये शब्द असमर्थ हैं। अर्थात्, यदि आपको 'मुस्कान' का वर्णन करना हो तो आप केवल कह सकते हैं कि स्नायु कैसे आन्दोलन (हरकत) करते हैं। आप उसके प्रभाव को नहीं बता सकते। यह तो केवल अनुभव की वस्तु है। आप केवल इस शक्ति को जागृत और विकसित होने का अवसर दें।

'ललाम' शक्ति से मनुष्य को एक प्रकार का सौंदर्य, एक भव्यता और स्वाभाव में माधुर्य प्राप्त होता है। इस शक्ति को अपने वचन, कर्म तथा अन्य क्रिया–कलापों में विकसित करने का प्रयास करें। कुछ लोगों का रोष भी मनोहारी होता हैं। इस मधुर, मनोहारी शक्ति को 'ललित' शक्ति कहते हैं। लोगों ने इसके भाव को बिल्कुल विकृत कर कर दिया है। वे कहते हैं यह संहार की शक्ति है। किन्तु यह बिल्कुल ठीक नहीं है। यह शक्ति अति मनोरम, सृजनात्मक और कलात्मक है। मानो आपने एक बीज बोया। उसके कुछ अंश नष्ट हो जाते हैं, जिसे 'ललित' शक्ति कहते हैं। किन्तु यह विनाश अत्यन्त कोमल और सरल होता है। तब बीज उग कर एक वृक्ष बनता है जिसमें पत्ते होते हैं। फिर पत्ते झड़ते हैं। यह क्रिया भी अत्यन्त सुकोमल व सरल होती है। तब फूल आते हैं। जब फूल फल बनते हैं, तब उनके अंश झड़ कर गिर जाते हैं और तब फल आते हैं। उन फलों को भी खाने के लिये काटा जाता है। खाने पर आपको स्वाद प्राप्त होता है। वह भी यही शक्ति है। इस प्रकार ये दोनों शक्तियाँ काम करती हैं। आप जानते हैं बिना काटे, संवारे आप कोई मूर्ति नहीं बना सकते। यदि आप समझ लें कि यह काटना संवारना भी उसी जाति की क्रिया है तो यदि आपको कभी ऐसा करना पड़े तो आपको बुरा अनुभव नहीं करना चाहिए। वह भी आवश्यक है। किन्तु एक कलाकार इसे कलापूर्ण ढंग से करता है और कला हीन व्यक्ति इसे बेढंगे तरीके से करता है। सो आप में कितनी कला है इस पर यह शक्ति निर्भर करती है।

कभी आप एक चित्र को देखते हैं और आपकी इच्छा करती है आप इसकी ओर देखते ही रहें। यदि कोई पूछे इस चित्र में क्या विशेषता है तो आप शब्दों में नहीं बता सकते। आप बस उसे निहारते हैं। कुछ चित्र ऐसे होते हैं कि आप उनकी ओर देखने मात्र से निर्विचार हो जाते हैं। इस निर्विचार अवस्था में आप उसके आनन्द का रसास्वादन करते हैं। यह अवस्था सर्वोत्कृष्ट है। इसकी किसी अन्य वस्तु से तुलना अथवा मुस्करा कर व्यक्त करने के स्थान पर आपको इस स्थिति के आनन्द का मन भरकर रसास्वादन करना ही उचित है। इसका वर्णन करने के लिये न कोई शब्द है, न कोई भाव–भंगिमा पर्याप्त है। आपको इसका भीतर अनुभव करना है। सबको यह अनुभव लाभ होना चाहिए।

'निः' और 'ला' के मध्य में 'म' शब्द अत्यन्त रोचक है। 'म' महालक्ष्मी का प्रथम अक्षर है। 'म'

धर्म (पवित्र आचरण) की शक्ति है और हमारी उत्क्रान्ति की भी। 'म' शक्ति में आपको समझना होता है, फिर उसे आत्मसात करना होता है और पूर्णता (mastery) कुशलता, प्राप्त करनी होती है। उदाहरण के लिये, एक कलाकार में 'ल' शक्ति से उसके सृजन का विचार अंकुरित होता है 'नि' शक्ति द्वारा वह उसका निर्माण करता है और 'म' शक्ति के द्वारा वह उसे अपने विचार के अनुरूप बनाता है। प्रत्येक पग पर वह देखता है कि क्या यह उसके विचार के अनुरूप है और यदि नहीं तो वह उसमें सुधार करने की कोशिश करता है। वह यह बार–बार करता है। यह 'म' शक्ति है अर्थात् यदि कोई वस्तु ठीक नहीं है तो एक बार, दो बार, बार–बार करें।

इस सुधार कार्य में परिश्रम लगता है। हमें अपने स्वयं का भी सुधार करना चाहिए। यदि यह न होता तो उत्क्रान्ति की क्रिया असम्भव थी। इस के लिये परमात्मा को महान् परिश्रम करना पड़ता है। हमें 'म' शक्ति अर्जित करनी है और उसे संभाल कर रखना है। यदि यह न किया जाये तो दूसरी दोनों शक्तियाँ समाप्त हो जाती हैं, क्योंकि यह शक्ति सन्तुलन बिन्दु (centre of gravity) है। आपको सन्तुलन बिन्दु पर स्थित रहना चाहिये और हमारी उत्क्रान्ति का सन्तुलन बिन्दु 'म' शक्ति है। अन्य दोनों शक्तियाँ तभी आपके भीतर सक्रिय होंगी जब आप उत्क्रान्ति शक्ति के अनुरूप उन्नति करें। किन्तु उसके लिये आपको 'म' शक्ति को पूर्णतः समझना होगा और उसे विकसित करना होगा। तब तक आप कह सकते हैं कि यदि ईश्वर आपसे प्रेम करते हैं तो उन्हें आपके पास आना चाहिये, किन्तु साक्षात्कार–प्राप्ति के पश्चात् आप ऐसा न कह सकेंगे। क्योंकि 'म' शक्ति के बल पर आपको दूसरी दो शक्तियों का संतुलन करना है। संगीत में आप को रागों का संतुलन करना पड़ता है, चित्रकला में आपको रंगों का संतुलन करना पड़ता है। इसी भाँति आपको 'निः' और 'ला' शक्तियों का संतुलन करना आवश्यक है। इस संतुलन प्राप्ति के लिये आपको परिश्रम करना पड़ेगा। अनेक बार आप वह खो बैठते हैं। जो सहजयोगी इस संतुलन को बनाये रखता है वह उच्चतम स्तर पर पहुँच जाता है।

बहुत भावुक सहजयोगी ठीक नहीं। इसी तरह बहुत ज्यादा कामों में फँसा रहने वाला सहजयोगी भी ठीक नहीं। आपको अपने प्रेम की शक्ति को सक्रिय करना चाहिये और देखना चाहिये अब तक वह कैसी क्रियाशील रही है। उदाहरणार्थ, मैं किसी एक ढंग से काम करती हूँ। आपने देखा होगा कि हर बार कुछ नवीनता, कोई नया तरीका होता है। यदि एक तरीके से काम नहीं चलता, दूसरा तरीका अपनाइये। यदि यह भी असफल रहता है तो और कोई ढूँढिये। किसी भी पद्धति पर अटल नहीं होना चाहिये। आप प्रातः उठते हैं, सिंदूर लगाते हैं, श्री माँ को नमस्कार करते हैं। यह सब यान्त्रिक (mechanical) होता है। यह सजीव प्रक्रिया नहीं है। सजीव प्रक्रिया में आपको नित्य नई पद्धतियां खोजनी होंगी। मैं सदैव वृक्ष की जड़ का उदारहण देती हूँ। बाधाओं से मोड़ लेते हुए, बचते हुए, यह क्रमशः नीचे और नीचे पृथ्वी के भीतर उतरती चली जाती है। यह बाधाओं से झगड़ती नहीं। बाधाओं के बिना जड़ें वृक्ष को संभाल भी नहीं सकती थीं। अतः समस्याएँ, बाधाएँ आवश्यक हैं। वे न हों तो आप उन्नति भी नहीं कर सकते। वह शक्ति, जो आपको बाधाओं पर विजय पाना सिखाती है, वह 'म' शक्ति है। अतः यह 'म' शक्ति अर्थात् माँ की शक्ति है। उसके लिये प्रथम आवश्यक वस्तु है बुद्धिमानी।

सोचिये कोई व्यक्ति बड़ा कोमल स्वभाव है और कहता है, 'माँ' मैं अत्यन्त मृदु हूँ मैं क्या कर सकता हूँ। मैं उससे कहती हूँ अपने को बदलो और एक सिंह बनो। यदि कोई दूसरा व्यक्ति सिंह है, तो मैं उसे बकरी बनने को कहती हूँ। अन्यथा काम नहीं चलता। आपको अपने तरीके बदलने होंगे। जो व्यक्ति अपने तरीके नहीं बदल सकता, वह सहजयोग नहीं फैला सकता, क्योंकि वह एक ही तरीके पर जमा रहता है जिससे लोग ऊब जाते हैं। आपको नये मार्ग खोजने होंगे। इसी भाँति 'म' शक्ति कार्य करती है। महिलायें इसमें निपुण होती हैं। वे प्रतिदिन नये व्यंजन (भोज्य पदार्थ, recipes) बनाती हैं और पति जानने को उत्सुक रहते हैं कि आज क्या बना है।

यह वह शक्ति है जिसके द्वारा आप अपना संतुलन और एकाग्रता प्राप्त करते हैं। जब आप इस शक्ति को उच्चतम स्तर पर विकसित कर लेते हैं तब आप अपने संतुलन तथा बुद्धि स्तर से चैतन्य लहरियाँ अनुभव करते हैं। यदि आप में बुद्धिमानी नहीं है तो आप में उक्त लहरियाँ प्रभावित नहीं होंगी।

अधिकतम चैतन्य–लहरियों–सम्पन्न व्यक्ति निश्चित बुद्धिमान व्यक्ति होता है। वास्तव में यह बुद्धिमत्ता ही है जो प्रवाहित हो रही है। इस मापदण्ड से यह निश्चित हो सकता है कि आप किस स्तर के सहजयोगी हैं।

जब आप संतुलन तथा बुद्धि खो देते हैं तो स्वाभाविक रूप से आपके चक्र पकड़े (बाधाग्रस्त) जाते हैं। जब आपके चक्र बाधाग्रस्त हों तो समझ लीजिये आपका संतुलन बिगड़ गया है। असंतुलन संकेत करता है कि 'म' शक्ति आप में दुर्बल है। 'माताजी' अर्थ वाचक किसी भी शुभ नाम का प्रथम अक्षर 'म' होता है और यह कार्य मेरे भीतर 'म' शक्ति द्वारा किया गया है। यदि केवल 'नि' और 'ल' दो शक्तियाँ ही होती, तो यह कार्य सम्भव नहीं था। मैं तीनों शक्तियों सहित आई हूँ, किन्तु 'म' शक्ति सर्वोच्च है। आपने देखा 'म' 'शक्ति' माँ की शक्ति है। यह सिद्ध करना होगा कि वह आपकी माँ है। यदि कोई आकर कहे "मैं आपकी माँ हूँ" तो क्या आप मान लेंगे? नहीं, आप स्वीकार नहीं करेंगे। मातृत्व को सिद्ध करना होगा।

माँ क्या है?

माँ ने अपने हृदय में हमें स्थान दिया है। हमें माँ पर और माँ को हम पर पूर्ण अधिकार है क्यों कि वह हमें अपार प्यार करती है। उसका प्रेम नितान्त निःस्वार्थपूर्ण है। वह सदैव हमारी मंगल कामना करती है और उसके हृदय में हमारे लिये वात्सल्य के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। माँ में आपको आस्था तभी प्राप्त होगी जब आप यह समझ लेंगे कि आपकी वास्तविक शोभा, अर्थात् आपकी आत्मा, उनमें ही वास करती है। आप दूसरों को यह सिद्ध करके दिखायें। सहजयोगी में ऐसी सामर्थ्य होनी चाहिये। अन्य लोगों को पता हो कि वह एक बुद्धिमान व्यक्ति है। उसके लिये आप में प्रेम और क्रियाशीलता दोनों शक्तियों में संतुलन आवश्यक है। वह इतना मनोहारी होना चाहिये कि बिना जाने अन्य लोग ऐसे व्यक्ति से प्रभावित हों। सहजयोगी को यह गुण अर्जन करना चाहिये।

घर जाकर आप विचार करें कि इन तीनों 'नि', 'ला' और 'म' शक्तियों को कैसे सक्रिय कर प्रयोग करें। 'निः' शक्ति आपके परिवार में पूर्ण सौंदर्य, गम्भीरता और गहराई लायेगी। जन–सम्पर्क के आप नये–नये मार्ग और साधन खोजें। इन शक्तियों का आप सहजयोग के प्रचार के लिये उपयोग करें। उनके उचित उपयोग के लिये आपकी 'निः' शक्ति, अर्थात् क्रियाशक्ति, अत्यन्त बलशाली होनी चाहिये।

यद्यपि आप में 'ला' शक्ति अर्थात् प्रेम की शक्ति होनी चाहिये, किन्तु यह 'निः' शक्ति के साथ–साथ संयुक्त रूप से क्रियान्वित होनी चाहिये। यदि एक तरीका सफल नहीं होता, तो दूसरा तरीका अपनाइये। पहले लाल और पीला लें, यदि यह उपयुक्त नहीं रहता तो लाल और हरा उपयोग करें और यदि यह भी ठीक नहीं रहता तो अन्य कोई उपयोग करें। हठी होना, किसी बात पर अड़ना बुद्धिमानी नहीं है। हठधर्मी व्यक्ति सहजयोग में कुछ नहीं कर सकता। आपका उद्देश्य तो केवल सहजयोग का प्रचार करना है, तो विभिन्न मार्ग अवलम्बन कर देखिये। आप जो भी आग्रह करते हैं वही मैं स्वीकार कर लेती हूँ क्योंकि मैं जानती हूँ कि साधारण मानव मेरी भाँति नहीं है। हठधर्मी व्यक्ति क्या कर बैठे, कहा नहीं जा सकता। आप वह पराकाष्ठा अर्थात् हद पर जाने की स्थिति न आने दें। 'म' शक्ति से मैं यह सब जानती हूँ। किन्तु आप सहजयोगियों को किसी एक बात पर हठ नहीं करना चाहिये। आपकी माँ हठ नहीं करती। जो भी स्थिति हो, स्वीकार कर लें। आप जो भी करें, ध्यान रखें आप एक महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। मुझ में कोई इच्छा नहीं है। मुझ में 'निः', 'ला', 'म' कोई शक्ति नहीं है। मुझ में कुछ भी नहीं है। मैं यह भी नहीं जानती मैं स्वयं इन शक्तियों की मूर्तस्वरूप हूँ। मैं केवल सब खेल देखती हूँ।

जब जीवन में इस प्रकार परिवर्तन आ जायेगा तब मनुष्यों में सिद्ध सहजयोगीजन होंगे जिन्हें सहजयोग में पूर्ण सिद्धता, निपुर्णता प्राप्त होगी। अभी तक वे सिद्ध नहीं हुए हैं। आपको सिद्धता प्राप्त करनी है। सिद्ध सहजयोगी वह है जो पूर्ण रूप से परमात्मा से एकरूप हो जाये और उसे अपने वश में कर ले। उसको उसके लिये सर्वस्व अर्पित करना होता है। मैं जा रही हूँ। उसके बाद देखेंगे आप अपनी सिद्धता का किस भाँति और किस क्षेत्र में उपयोग करते हैं।

कभी–कभी मैं आपको कुछ बातों के लिये मना करती हूँ। आपको उसका बुरा नहीं मानना चाहिये। 'म' शक्ति के सिद्धान्त अनुसार आपको निराश नहीं होना चाहिये, क्योंकि आपका मार्ग दर्शन करना होना चाहिये, क्योंकि आपका मार्ग दर्शन करना मेरा कर्तव्य है। कुछ लोग निराश हो जाते हैं। आप ध्यान रखें आपको सिद्ध बनना है। दूसरे स्वीकार करें आप सिद्ध हैं। ज्यों ही वे आपको देखें उन्हें स्पष्ट हो आप सिद्ध हैं। आप इसके लिये यत्न करें। यदि यह होता है तो सब शुभ होगा।

एक दिन मैंने आपसे कहा था कि आप अपने सब मित्र और सम्बन्धियों को मध्यान्ह अथवा रात्रि भोज के लिये पूजा या किसी अन्य कार्यक्रम के लिये आमन्त्रित करें। साथ ही कुछ सहजयोगियों को भी आमन्त्रित करें और अपने सब अतिथियों को आत्म–साक्षात्कार प्रदान करें। यदि एक साल तक आप ऐसा करें तो बड़ा लाभकारी होगा।

सबको अनेक आशीर्वाद

(निर्मला योग से उद्धृत)

आत्म–साक्षात्कार का अर्थ

मुम्बई, 03.09.1973

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

जो अभी अभी realize हुए हैं कुछ लोग ऐसे हैं जो थोड़े दिन पहले realize हुए हैं और कुछ लोग ऐसे हैं जो बहुत पुराने realize हुए हैं जो कि इस चीज को समझ गए हैं कि अपनी चेतना क्या है ये किस तरह कार्यान्वित होती है, किस तरह से कार्य करती है और किस तरह से हम उसको अपनाते जाते हैं। इस तरह से यहाँ तीन तरह के लोग होने के कारण मुझे कुछ बातें फिर से दोहरानी पड़ेंगी और मैं बताऊंगी तथा आप लोग समझ पाएंगे कि realization का अर्थ क्या है कि realized आदमी की क्या विशेषता होती है। पिछली मर्तबा भी मैंने बहुत सी बातें बताईं कि realized आदमी की क्या विशेषता है और आगे इसको किस तरह से हमें realized state में हमें कैसे रहना चाहिए। इस तरह से इस पर मैं बताऊंगी। इतना जरूर होना चाहिए कि इस वक्त आपने जो पढ़ा लिखा है, जहाँ पर भी, जो कुछ भी पढ़ा है उसको सभी भूल जाइए।

पहले तो प्रश्न ये है कि realization का अर्थ क्या है? जब आप पैर पर आते है तो उसमें से कितने ही लोगों को कहा जाता है कि आप पार नहीं हुए और कितने ही लोगों को कहा जाता है कि आप पार हो गए। इसका एक तो अर्थ है ही कि realization का संबंध आपके बाहरी शरीर, मन, बुद्धि से नहीं है किन्तु किसी आन्तरिक चीज से है जो कुछ लोगों को हो जाता है और कुछ लोगों को नहीं होता। Realization में जब आप लोग मेरे पैर पर रहते हैं उस वक्त जो हाथ में देखते हैं लोग वे ये देखते हैं कि उनके उपर जोर से प्रवाह हाथ में आने लग जाता है और आपको भी पैर में ऐसे लगने लगता है कि कुछ तो भी पैर में आर पार जा रहा है। अपने चारों तरफ मनुष्य के वातावरण के और सारे संसार के चारों तरफ चैतन्य शक्ति खेल रही है। अन्दर और बाहर जैसे कि हर एक पेड़ के अन्दर भी चेतना शक्ति है उसके पत्ते में भी चेतना शक्ति है उसके मूल में भी है और उसी तरह से ये सारे भूमण्डल पर भी चैतन्य शक्ति का वास है चारों तरफ जैसे कोई ether होता है।

इस तरह से ये अन्दर बाहर हर जगह उसका वास है। और वही शक्ति पूरा जो कुछ कार्य जड़ शक्ति का करने का है, करती रहती है। अब ये शक्ति हमारे अन्दर कुण्डलिनी नामक जिसको कि कुण्डलिनी योग, लोग कुण्डलिनी कहते हैं, लेकिन कुण्डलिनी एक शब्द है दिया हुआ। हालांकि परमात्मा ने किसी भी चीज को अर्थ ही दिया है और शब्द तो दिया नहीं है लेकिन किसी का नाम दिया नहीं है पर मानव ने दिया है नाम इसका – कुण्डलिनी। कुण्डलिनी नाम की शक्ति हमारे अन्दर रीढ़ की हड्डी के नीचे जो त्रिकोणाकार अस्थि है उसमें स्थित है, उसके बारे में अभी मैं एक aticle निकालने वाली हूँ ब्रह्मशक्ति में, तो आप उसके सारे details पढ़ लीजिएगा और आपमें से बहुत से लोग उसको जानते भी हैं।

अब आपका चित्त जो है, आपका जो चित्त है जब आप साधारण मानव रहते हैं तो शरीर बुद्धि और मन तीनों में रहता है और आप खोजते रहते हैं उस चीज को जिससे आप आनन्द पाएं। जब आप उस चैतन्य शक्ति से एकाकार होते हैं, कुण्डलिनी की जागृति से सहस्रार पर आपका चित्त आकर के उससे एकाकार होता है, तब आपका चित्त जो है अपनी कुण्डलिनी पर जाता है और अपनी कुण्डलिनी पर जाते ही आपका चित्त दूसरों

की कुण्डलिनी पर भी जाता है। यानि अभी तक आपका चित्त तीन जगह तक जा सकता था अब एक चौथी जगह जाता है जो निराकार शक्ति है और उसमें जाते ही आप विचारों से परे उठकर के और इस मन, बुद्धि और शरीर तीनों को देखने लगते हैं साक्षी स्वरूप होकर।

अब जिन लोगों के हाथ में से झन झन झन झन ऐसे चैतन्य की लहरियाँ बह रही हैं इन लहरियों को हम इतने सहज में पा गए हैं कि हम जानते नहीं कि कितनी बड़ी चीज हमें मिल गई। पहला तो सबसे बड़ा जो problem है कि इतनी बड़ी चीज सहज में कैसे मिल गई ? जैसे कि एक छोटी सी चीज, समझ लीजिए कि मानव का जन्म, हम लोग इतने सहज में पा लेते हैं कि हम ये जानते ही नहीं कि मानव जन्म पाना जन्म जन्मांतर की मेहनत के बाद बड़ी मुश्किल से मानव का जन्म मिलता है और उसका पुनर्जन्म बहुत ही जन्म जन्मांतर की मेहनत के बाद, खोज के बाद पुनर्जन्म होता है। लेकिन वो इतने सहज में घटित हो रहा है कि उसकी कीमत हम लोग समझ नहीं पाते। और ये भी सोचते हैं कि इतनी जल्दी कैसे हुआ? उसकी वजह ये थी कि आज तक आप सारी खोज बाहर कर रहे थे और चीज आप ही के साथ थी। जैसे आपके अन्दर हीरा बैठा हुआ है और आप सारी दुनिया में खोज रहे हैं और आपके यहीं हीरा गिरा हुआ है। और फौरन किसी ने बता दिया कि हीरा तो यहीं है और आपको रास्ता भी बता दिया, आपने हीरे को पकड़ लिया। फिर आप ये थोड़े ही कहेंगे कि अरे इतनी जल्दी हीरा कैसे मिल गया? आप तो यही कहेंगे कि अरे मैं तो यहीं था और दुनिया भर में कहाँ खोजता फिरा? ये बात वास्तविक हो रही है।

जब हमें सहजयोग से ये दशा प्राप्त होती है तो वास्तविक में हमें इसकी प्राप्ति इतनी सहज में होती है कि हम समझ नहीं पाते कि कहाँ से कहाँ पहुँच गए। या ये कहिए कि आधुनिक युग में जिस तरह से आप एक दम से चन्द्रमा पर पहुँच जाते हैं पता भी नहीं चलता। आप अगर चन्द्रमा में एक क्षण में पहुँच सकें ऐसी कोई व्यवस्था हो जाए तो हो सकता है आप ऐसे ही महसूस करेंगे कि हम ये कहाँ पहुंच गए? कैसे हो सकता है? चन्द्रमा में हम एक क्षण में कैसे पहुंच गए? इसी तरह से ये घटना जो है इतनी सहज में होती है इतने सहज में ये घटना होती है कि आपको ऐसा लगना स्वाभाविक है। लेकिन कोई बात सहज से हो जाए और चाहे बहुत तकलीक से हो जाए याद वो रहती है जो तकलीफ से होती है और समझ में वो आती है जो तकलीफ से होती है। ये मानव का स्वभाव है और मानव उसी में अपने को बड़ा धन्य समझता है जो किसी करतब बाजी से पाता है। बाप ने ग़र लाखों रु. की भी ग़र स्टेट दे दी तो उसकी वो विशेषता नहीं समझता और उसकी कमाई से उसने गर दो रुपये भी कमाए तो उसको बड़ी भारी चीज समझता है। ये उसके अहंकार का लक्षण है। ये उसके अहंकार की तृप्ति है। लेकिन सहजयोग में तो अहंकार ही जब छूटता है तब फिर अंहकार से कोई चीज पाने की तो बात ही नहीं। ये अहंकार जो है अतृप्त रहकर के इस तरह की शंकाएं अन्दर उठाता है कि ऐसे सहज में क्यों है? अब अपने realization के तरीके जो होता है जैसे जैसे रीति से वो होता है ये सब आपमें से बहुतों ने देखा है।

किताबों में, अब हर एक किताब में एक नया तरीका आप पाइएगा कि जब आत्म साक्षात्कार होता है तब ऐसा हो जाता है वैसा हो जाता है। अब इसमें से कितने लोग पार है और कितने नहीं हैं ये तो परमात्मा ही जाने। लेकिन आपमें से जो

लोग पार हुए हैं धीरे–धीरे आपमें अपनी गति बढ़ती है और लोग जानते हैं कि आदमी जब पार होता है तो पहले उसका सहस्रार टूटता है और वो एकाकार होता है उस चैतन्य शक्ति से फिर इसके बाद तो भी वो यहीं रहता है। और उसकी दृष्टि अपनी और दूसरों की कुण्डलिनी पर आ तो जाती है लेकिन vibrations जो इसके अन्दर आ रहे हैं वो कभी कभी एकदम रुक जाते हैं और वो ग़र अपने सर पर हाथ रखे तो देख लेगा कि सिर पर यहाँ पर जो बिल्कुल नरम हो गया था वहाँ फिर से कड़क हो जाता है calcification हो जाता है। अभी आप कल ही पार हुए हैं और आपका calcification हो जाता है।

उसकी वजह क्या है? उसकी वजह ये है कि हमारे अन्दर जो ego और super ego हैं वो हट जरूर जाते हैं, हमारा चित्त बीचों बीच जरूर आ जाता है लेकिन फिर से grow करके एक हो जाता है तो फिर से calcification हो जाता है और प्रवाह बन्द हो जाता है। लेकिन आप तो भी कुण्डलिनी समझ सकते हैं। वो कैसे? कि आप उसके बाद ग़र ध्यान में आएं और मेरी ओर हाथ करें तो आपको लगेगा कि ये हाथ पकड़ गया। अभी पुष्पा ने मुझे आके कहा कि मेरा ये अंगूठा पकड़ गया। ये पार है क्योंकि वैसे जो आदमी पार नहीं है, जो पार नहीं है वो मेरी ओर गर हाथ करके बैठे तो उनको कुछ भी नहीं लगेगा लेकिन जो लोग पार हो गए हैं उनको लगेगा कि माताजी देखो ये उंगली मेरी पकड़ गई है। उनको ऐसा लगेगा ये उंगली मेरी पकड़ गई है या ये पकड़ गई है। इसमें नहीं आ रहा है इसमें आ रहा है। उसमें से जो जानकार लोग होंगे वो समझ जाएंगे कि कौन सी उंगली का इशारा कौन से चक्र पर है। अब ये कोई कपोल कल्पित नहीं है, दिमागी जमा खर्च से इस बात का पता नहीं लगा है।

मैने तो बताया नहीं, क्योंकि मैं इसको ग़र बताती तो सब लोग कहते माताजी यूँ ही उड़ा रहे हैं। मैंने कहा तुम्हीं देखो। तो जब उन्होंने ऐसे हाथ रखा और उनकी ये उंगली जलने लग गई तो मैने कहा अच्छा इनके नाभि चक्र पर तुम हाथ रखकर देखो नाभि चक्र चल रहा है। अपने अन्दर आँख बन्द करके देखो तुम्हारा कौन सा चक्र चल रहा है तो नाभि चक्र चल रहा है और हाथ तुमने जब उनकी ओर किया तो कौन सी उंगली जल रही है? ये उंगली जल रही है इसका मतलब ये उंगली नाभि चक्र का साक्षात है। और सबकी यही उंगली पकड़ी जाएगी उस आदमी में। तो निर्विवाद ये बात है, इस पर किताब चाहे कुछ भी लिखे जिस तरह से जो होता है वैसा ही होता है। अभी कल ज्ञानेश्वर जी को लेकर के एक साहब मुझसे भिड़ रहे थे बहुत ज्यादा। ज्ञानेश्वर जी आज होते तो उनसे हम भी बात कर लेते। वो भी खोज रहे थे तरीका, किस तरह से बात समझाने का है। लेकिन उनका बन नहीं पड़ा, बहुत छोटी उम्र में उनकी मृत्यु हो गई। ऐसे बहुत से लोगों की अल्पमृत्यु होने के कारण भी बहुत सी गलतफ़हमियां संसार में फैल गईं। और उन्होंने किताब लिख दी ये दूसरी बड़ी गलती कर दी। इस वजह से मैं किताब लिखने से बहुत डरती हूँ। अब किताब लिखते ही लोग उसको रटना शुरु कर देंगे और उससे भी लोगों पर conditiong हो जाएगी। तो अब इसमें क्या होता है क्या नहीं होता है वो बिल्कुल आपको ऐसा सोचना चाहिए कि हर मिनट हमें नया एक अनुभव हो रहा है। हम नए आदमी हैं नया ही है सब कुछ। नए से ही जानना है सब कुछ, हम नए होकर के बैठे हैं। जैसे छोटा बच्चा बचपन से एक–एक शब्द सुनता है उसको रट लेता है, एक

एक बात देखता है उसको समझ लेता है।

इसी तरह से आप लोग जो नए लोक में, इस दिव्य लोक में आ गए हैं तो उसकी दिव्यता को समझना चाहिए। इसकी ओर दृष्टि होनी चाहिए। ये बड़ी विशेषता है कि इसका नाम दिव्यलोक रखा गया है। मैं जाती थी तो इसका नाम पढ़के, मुझे लगता था कि किसी बड़े सोचने वाले आदमी ने नाम रखा होगा। कितना सुन्दर नाम है 'दिव्यलोक'! मुझे क्या पता था परमात्मा सारी व्यवस्था यहीं कर देंगे और भाटिया साहब इतनी मेहरबानी कर देंगे हम पर। बहुत ही सुन्दर जगह है। तो जिस दिव्य लोक में आप उतरे हुए हैं उसकी दिव्यता को जानने के लिए आपको सोच लेना चाहिए कि ये सब नवीन है। नाविन्यपूर्ण है। इसमें सारा ही नवीन अनुभव है, कहीं लिखा हुआ घिसापिटा जो दूसरों ने अनुभव किया है वो नहीं है। हमें जो अनुभव करने का है वो है। इसलिए एकदम नया नूतन बालक जैसा होता है ऐसे आप एकदम नए स्वरूप में इसमें उतरिए। पहली चीज जरूरी है कि आप इसमें नवीनतम बातों की ओर ध्यान दीजिए। सब नवीन है। आज तक ऐसा कहीं भी किसी ने अनुभव किया नहीं। इतने ज़ोरों में ये experiment कहीं भी successful इस संसार में नहीं हुआ क्योंकि मैं भी इस संसार में बहुत बार आ चुकी हूँ और इस कार्य को करने का मैने बहुत बार प्रयत्न किया। पहली मर्तबा इस जन्म ये कार्य सफलीभूत हुआ। इसलिए सबमें थोड़ा थोड़ा अधूरापन जो रह गया है उसको आपको पूरा करना है। आप उसी अधूरेपन को complete करने के लिए आए हुए हैं। किसी को आप गिराने या घटाने नहीं आए लेकिन उसमें जो थोड़ा बहुत अधूरापन रह गया है उसको पूरा करने के लिए आए हैं। अब आप सोचिए कि एक नए ज़माने के नए विस्तार के, एक नए लोग आप हैं और सारे संसार के लिए आपको मार्ग बनाना है। इतने realized लोग एक छत के नीचे बैठकर के उस परम शक्ति को पा रहे हैं। इतनी बड़ी भारी शक्ति आपके अन्दर से विशेष रूप से प्रवाहित है। और लोगों के अन्दर से नहीं है संसार में। ये आप जानते हैं। इसमें कोई आपको शंका नहीं रहेगी। जिनको थोड़ी बहुत शंका है वो इसलिए कि अभी अभी पार हुए हैं, थोड़े दिन में उनको भी नहीं रहेगी। अब ये जरूरी हो जाता है कि आप अपनी विशेषता को समझ लें। सबसे बड़ी विशेषता आपकी ये है कि आपको एक fourth dimension आ गया है। कौन सा fourth dimension आ गया है? जो चैतन्य शक्ति आपके अन्दर प्रवाहित है, उसमें आप खडे हुए हैं। अब आप इसमें से उसमें कैसे जा सकते हैं? ये बड़ा महत्व का point है। आप समझ लीजिए। अब इसमें आप किस तरह से उसमें उतर सकते हैं। उसमें रह सकते हैं, स्थिर हो सकते हैं, यह बड़ा महत्व का point है। अब आप देखिएगा, अब आप देखिएगा अपने चित्त की ओर तो आप देखेंगे कि इसमें एक तरह का एक expansion होता है और ये ऐसे अन्दर खिंचता भी है। अपने चित्त की ओर देखिए, ये ऐसा लगता है जैसे कहीं किसी चीज की ओर जाता है और आप चाहें तो उसको हटा भी सकते हैं। उसका expansion हो रहा है और उसको आप खींच भी सकते हैं। जैसे कि कोई गुब्बारा होता है या इसको मराठी में फुगा कहते हैं, इसको आप फुला दीजिए तो वो ऐसे जाएगा और फिर अन्दर भी खिंच सकता है। इसी तरह से आप लोग अपने चित्त की ओर दृष्टि रखिए। आपका चित्त जो है वो किसी भी चीज की ओर जा भी सकता है, वहाँ से लौट भी आ सकता है। ख्याल करें, देखें कि हमारा चित्त किसी वस्तुमात्र पर गया, जैसे समझ लीजिए आपका चित्त जो है

एक गाड़ी पर गया। अब गाड़ी पर गया, पर आप उससे अपना चित्त खींच सकते हैं। अपना चित्त आप जैसा भी चाहें उसे घटा सकते हैं, बढ़ा सकते हैं और उसको जहाँ तक चाहे पहुंचा सकते हैं। आप पूरे समाए हुए हैं बीच में जैसे कि एक समुद्र होता है, समुद्र में से पानी बढ़ता हुआ हर एक किनारे पर जाता है और फिर खिंच जाता है। लेकिन वो बीचोंबीच समुद्र का सारा उसका अपना वास्तव्य है। जो वास्तव्य है जो easiest है, जो होना है, वो अन्दर है और उसका जो reaction है वो awareness है।

जो चेतना है वो जाती है किसी चीज पे चित्त से और लौट आती है। इसी से आप detachment सीखते हैं। किसी चीज से हम कहें आप detach हो जाइए। सभी जैसे यहाँ वो गाड़ी आई, एक छोटी सी बात, उसमें से सबको बदबू आ रही थी। पहले सबको बदबू आई, ठीक है आप उस बदबू की ओर अपना चित्त ले जाइए तो बदबू आ रही है और चित्त हटा लीजिए तो बदबू नहीं आ रही। Detach करने की शक्ति आपके अन्दर आ गई। धीरे–धीरे आप अपने चित्त पे practice करिए। आदमी है सब चीजों से सर्वधर्मसम्पन्न से बैठा हुआ है, उसके बीच में बैठा हुआ है। सब चीजों की ओर देख रहा है कि ये क्या है, ये क्या है, ये क्या है? ये भी है, ये भी है। लोग कहते हैं कि सब मेरा है। उसकी ओर अपना चित्त डालिए और जैसे ही आप अपना चित्त डालेंगे आप जान जाएंगे कि मैं इससे चित्त हटा भी सकता हूँ। किसी में आपका चित्त involve नहीं हो सकता। और अब जो भी आप उसके प्रति जो भी आप प्रेम जोड़ेगें या कुछ भी करेंगे वो फिर उसको चक्कर मारकर वापिस आ जाएगा लेकिन लिप्त नहीं होगा। इसको आप समझ लें। पहले आप विचारों से जब किसी चीज को देखते थे तो आप जैसे यहाँ से कोई चीज चलती है तो वो पूरी की पूरी चलती रहेगी और इसकी परिधि बनी रहेगी। वो अपने अन्दर घूमती रहेगी। लेकिन अब यहाँ से जो छूटेगी गोल घूमकर के फिर आपके तरफ आ जाएगी। यहाँ बीच में कुछ भी नहीं रहेगा, खाली हो जाएगा। कहीं वो उसको जकड़ेगा नहीं। ममत्व इस तरह से खींचता है। हरेक चीज, शरीर, मन, बुद्धि का तो छूटता ही है लेकिन और भी जितने कृत्रिम हमारे अन्दर बहुत सारे, हम सिर्फ मानव हैं, पहले और आखिर और हमेशा थे। जो सत्य है ये सत्य भी इसी तरह से छूटता है क्योंकि हमने जो अपना ममत्व है उसको तोड़ लिया। और ममत्व तोड़ने का तरीका ध्यान का यही है कि आप अपने चित्त को हर समय बढ़ाएं, उसका मजा देखें। अब बढ़ गया, वहाँ तक गया और फिर आप उसको वापिस ले आए। ये आपकी विशेष शक्ति आपको realization के बाद में आई। अभी तक मैंने पहले बताई हैं ये बातें बहुत सारी जो english में मैंने आपको बताई थीं, इसके अलावा आप इस बात का ध्यान करें। जो deeper meditation में आपको करना है वो अपने चित्तवृत्ति का expansion और उसका खिंचाव। अब जब आप खिंचाव और जब आप खिंचाव और expansion करने लग जाएंगे तो आपको आश्चर्य होगा कि आपकी गहराई जो है वो बढ़ती है। एक ऐसा सोचिए गेहूँ गर खूब सारा आपने यहाँ फैला दिया, बहुत सारा गेहूँ, जिस आदमी ने फैला दिया उसका फैलाव ज्यादा हो गया। फिर गेहूँ इकट्ठा करके उसको ऐसे बड़ा कर दिया, उसकी ऊँचाई बढ़ गई कि नहीं बढ़ गई? तो उसी तरह से जब आपने सारा का सारा अपने को समेट लिया अपने चित्त को तो आप देखिए अन्दर की गहराई बढ़ेगी। और ज्ञान आते ही, ज्ञान क्या आया कि हँसी आने लगी कि अरे मैं

इसमें लिपटा हुआ था, ये भी कोई लिपटने की चीज है! माने ऐसा लगेगा कि कोई खास बात है ही नहीं। कोई ऐसी विशेष संसार की ये बातें हैं ही नहीं।

अपने यहाँ का एक लड़का है, पार हो गया था। वो interview में गया जब लौट के आया तो मैंने कहा भई हुआ कि नहीं हुआ? तो कहने लगा कि मुझे कुछ लग ही नहीं रहा कि कुछ हुआ है कि नहीं हुआ। होगा तो होगा, नहीं होगा तो नहीं होगा। बाद में selection हो गया उसका। तो वो जो board वाले थे उन्होंने मुझे बताया कि साहब ये लड़का अजीब कमाल का है, बिल्कुल डरा नहीं, कुछ नहीं। एकदम आया, जो कुछ भी उससे बात पूछी उसने साफ–साफ कह दी। जो कुछ भी थी कह दी और चला गया, डरा न कुछ। ये कैसे क्या हो गया ? हमने कहा भई देखिए, हमने कहा था न कि वो realized है। आप देखिएगा उसको विशेष रूप से, आप examine करिए कि क्या विशेषता है। तो उन्होंने कहा, हमने उसमें यही बात देखी, वो आया, हमने जो सवाल पूछे उसने सीधे सीधे जबाब दे दिया। न उसमें छल न कपट, न, कुछ नहीं। उसने साफ साफ बात कह दी, ये ये बात है, ऐसी बात है और फिर इस तरह से खड़ा रहा माने लेना है तो लो वरना नहीं। शान से खड़ा रहा, न तो उसने हमारा किसी तरह से अपमान किया और न ही उसने बड़ा ही हमारे पीछे दुम हिलाके खड़ा रहा। चित्त भी ऐसा ही है, जब चित्त में विकृति रहती है, क्योंकि मनुष्य में दिव्यता तभी आती है जब वो पार हो जाता है। जब उसका चित्त हर जगह में उलझा रहता है तो उसके चित्त में विकृति आती है। समझ लीजिए जैसे कोई ये आपने देखे होंएगे बहुत से पेड़ों में से जिसको तंदुल कहते हैं वो निकलते हैं। खास कर जो कि चढ़ने वाली होती है बेलें इनमें से निकलकर के वो इसको पकड़ लेती हैं, उसको पकड़ लेती है, फिर इसको पकड़ लेती हैं। पहले बिचारी धीरे धीरे, धीरे धीरे ऊपर चढ़ती हैं। उसी तरह से जो मानव पार नहीं हुआ होता है वो भी कभी इसको पकड़ता है कभी उसको पकड़ता है, इसको पकड़ता है। इस तरह से वो अपने को खड़ा करता है। कभी तो सोचता है अरे मेरे पास position नही हैं तो मैं दुनिया में कैसे चलूंगा? अरे मेरे पास पैसा नहीं है तो मैं दुनिया में कैसे चलूंगा? अरे मेरे पास ये नहीं है तो मैं दुनिया में कैसे चलूंगा? लेकिन जो पेड़ अपने तने पर खड़ा हो जाता है वो स्वतन्त्रता में अलग से खड़ा हो जाता है। लेकिन यही बात आपके साथ भी हो रही है। आप अपने तना पर खड़े है ही लेकिन भय के कारण आप अपने में तंदुल निकालकर के इसको पकड़ रहे हैं, उसको पकड़ रहे हैं, इसको पकड़ रहे हैं। जैसे आपको पता होता है कि आप तना पर खड़े हैं ये आपको दूसरी बात लगती है।

पहली तो ये कि चित्त का निरोध नहीं करना, इसको रोकने का नहीं, चित्त कहीं उलझेगा ही नहीं। आप कोशिश करें चित्त कहीं उलझेगा हीं नहीं। ये deep meditation में आप प्रयत्न करें, कोई सा भी बड़ा सा प्रश्न आए आप उसकी ओर देखें और देखते साथ आपको आश्चर्य होगा कि चित्त वहाँ जाता है और लौट आता है। चित्त कहीं उलझ नहीं सकता। फिर आप ये सोचें, समझ लीजिए कोई बड़ी भारी दुखद घटना हो गई, लेकिन आप ये सोचिए यहाँ तो बड़ी भारी दुखद घटना हुई पर संसार तो वैसे ही चल रहा है। दुख और सुख जो है वो एक हमारा दिमागी जमाखर्च है। ऐसी कौन सी बात हो गई जो हमें बड़ा दुखी बनाती हैं या हमें बड़ा सुखी बनाती है या यहाँ ऐसी

कौन सी चीज है जो हमें सुखी करे या दुखी करे? किसी से आदमी नफरत करे और किसी से प्यार करे। ऐसी कोई सी भी बात नहीं है जिसमें ये होना चाहिए। धीरे–धीरे आपके चित्त का बढ़ना बहुत जोरों में प्रसारित होने लग जाता है और उसके बाद चित्त जब बिल्कुल सबल हो जाता है बिल्कुल पूरी तरह से सबल हो जाता है तब फिर हम लोग देखते हैं कि आपके हाथ–वाथ जलते हैं, किसी को हाथ लगाने से हाथ जलते हैं, किसी को कुछ करने से पकड़ जाता है। शुरु–शुरु में ऐसा होगा और उससे दूर रहना चाहिए जहाँ तक हो सके। एकदम आग भट्टी में मत डालिए हाथ। जब लड़की खाना बनाना सीखती है तो पहले छोटे से चूल्हे पर थोड़ा सा कपड़ा लगाकर के धीरे–धीरे सीखती है फिर उसके बाद जरा उसका हाथ जलना सीख लिया तो फिर वो बड़े चूल्हे पर काम करना सीखती है। उसमें भी वो पहले एक सन्सी लेती है, तवा लेती है, फिर उससे वो रोटी सेकती है। उसके बाद जब वो expert हो जाती है तो हाथ से ही रोटी बना लेती है। चूल्हे में हाथ डालकर भी वो ठीक तरह से ऐसे कर सकती है। उसी तरह से शुरु में आज जिस को हम evil भी कह रहे हैं, जिसको हम बुरा भी कह रहे हैं वो भी ठीक है फिर वो evil पने की जो चीज है जब आप जहाँ खड़े होंगे वो खुद ही भाग खड़ी होएगी। वो वहाँ रहेगी ही नहीं। कुछ आप पर असर ही नहीं आने वाला उस चीज का। ये दशा जब आ जाएगी तब फिर माँ के protection की क्या जरूरत है? फिर आप खुद ही बड़े हो जाएगें। तब फिर आपको किसी का पकड़ेगा नहीं, किसी का कुछ नहीं। कोई कहीं का, कुछ हो, आप जाइएगा, देखिएगा कि कुछ नहीं। जहाँ पहुंचे वहीं सब भाग रहे हैं वहाँ से, वहाँ खुद ही वो टिकने नहीं वाले। इतनी समर्थता बिल्कुल जिस दिन जा जाए उस दिन सारे प्रश्न छूट जाते हैं।

लेकिन जैसा मैंने उसके लिए कहा था उसके दो ही तरीके हैं एक तो अन्दर का meditation और एक बाहर का देखना। अब अपने हाथ से जो चीज जा रही है पहले वो कहते हैं भई अच्छा कर्म करो, अच्छा करो, बुरा करो। अच्छा और बुरा ये भी मनुष्य का विचार हो जाता है। जब कभी अकर्म हो जाए माने जब कर्म की भावना ही नहीं रही जैसे सूर्य की रोशनी है वो कौन सा कर्म कर रहा है? वो अकर्म में है। लेकिन कर्म तो हो रहा है उसका। जिस वक्त पूरी तरह से अकर्मता आ जाए माने हाथ से कोई चीज बंट रही है और हो रहा है तो जो कुछ भी अपने अन्दर कर्म पहले के इक्ट्ठे हुए हैं जिसको कहते हैं कि कर्मफल आपको भोगना पड़ेगा। बहुत से लोग बीमार आते हैं कहते हैं माताजी कर्म के फल हैं, आप क्या ले लीजिएगा? हमने कहा हाँ ले लेंगे। ये बाद की बात है। गंगाजी में आए तो धुल जाना ही चाहिए सब कुछ। मगर आपके कर्मो के फल आपके हाथ–पैर गर दुख रहे है या कुछ आपको बीमारी हो गई या तकलीफ हो गई तो ऐसी कोई बात नहीं वो तो हम ले ही सकते हैं। लेकिन आपके कर्म शरीर से उठकर के मन में चले गए। अब मन में से कर्म कैसे निकलेंगे ? वो तो यहाँ आके भाग खड़े हुए माताजी की वजह से, चलो शरीर ठीक हो गया लेकिन जब मन के अन्दर कर्म बैठे हुए हैं।

आप पार भी हो गए तो भी अब ये गन्दगी निकलेगी कैसे ? इसलिए यही कर्म जब आप करते रहेंगे तो अकर्म में ये सब बह जाएंगे। और जितना आप इस जन्म में कर डालेंगे उतना ही कर्म खत्म हो जाएगा। धीरे–धीरे जब कर्म करते जाइएगा तो इस तरह से निकलते जाइएगा। आपकी अन्दर पूरी

सफाई हो जाने के बाद अन्दर में वही सम्यक भाव इसमें रुचि अरुचि आदि कुछ भी नहीं रह जाता। आप बैठे हैं बैठे हैं, खाने को मिल गया खा लिया नहीं तो नहीं खाया। कोई भी आप काम करें आप एक दूसरी चीज हैं, दुनियादारी की चीज नहीं। आप उसी काम को करें जो परमात्मा का है, आप खुद का कोई काम नहीं करें। उसी का काम आपके हाथ से हो रहा है और आपको पता नहीं चल रहा। जैसे सूर्य है वो अपनी रोशनी दे रहा है और चन्द्रमा जो है वो सूर्य की रोशनी अपने अन्दर लौटा रहा है। ये समुद्र हैं ये चढ़ रहे हैं उतर रहे हैं, अपने अन्दर से बादल भेज रहे हैं। सब कर्म हो रहे हैं लेकिन कोई भी ये नहीं सोचता कि हम ये सब कर रहे हैं। पेड़ हैं पेड़ में से फल निकलते हैं, फलों में से बीज निकलते हैं बीज में से पेड़ निकलते हैं। कितने बड़े कार्य में ये लोग संलग्न हैं लेकिन इनको किसी को कुछ लगता नहीं कि हम कुछ कर रहे हैं। सब आराम से चला हुआ है। एक मनुष्य में ही प्रश्न हो गया है। वो लोग तो सब harmony में हैं, हम लोगों में प्रश्न हो गया है क्योंकि मनुष्य के अन्दर परमात्मा ने ही खासकर ये अहंकार का वरदान दिया है कि जिससे हम सीख जाएं। लेकिन अंहकार को मारने से ये मरता नहीं है ये हमने देखा हुआ है। इसलिए वो अपने आप जैसा छूट जाए वही तरीका सहजयोग का है और वो अपने आप छूट जाता है वो भी आपने देखा है। लेकिन करना क्या चाहिए ?

अपने हाथ से जितना भी कर्म हो सके करें और दूसरा है कि deep meditation में आप जाएं जब तक आपकी वो दशा नहीं आ जाती जहाँ कुछ बुराई और अच्छाई नहीं रह जाती। आपने मुझे देखा होगा कि मैं कहीं भी जाती हूँ मुझे न तो कोई negativity पकड़ती है न मुझे कोई भूत पकड़ता है, न मेरी कोई उंगली पकड़ती है, न हाथ में कुछ। हर समय वैसा ही प्रवाह रहता है। आप लोगों को गर मेरे सिर पर कुछ गर्मी लगे तो इसका मतलब है कि आपके अन्दर ही कोई दोष आ गया है। ये इसका आपके सामने उदाहरण है। मैं भी आपके जैसी ही हूँ न, लेकिन आपके सामने उदाहरण है। इसी तरह से जब आप भी हो जाएंगे कि जिसमें न तो कोई शैतान रह जाएगा न तो कोई बुरा रह जाएगा, जो आपके सामने आएगा वो आपके प्यार में धुलना ही चाहिए और नहीं धुले तो वो भाग जाए। ऐसी जिस दिन दशा आएगी उस दिन फिर आपको इस protection की जरूरत नहीं रहेगी। अब protection के बहुत सारे तरीके आप ही लोगों ने ढूढ के निकाले हैं उसमें से कुछ तरीके जो हैं आप चाहे तो ये लोग बता सकते हैं आपको उठकर के क्योंकि जैसे ये लोग इस्तेमाल करते हैं ये आप इनसे पूछ सकते हैं। जैसे फोटो पर लेना, पैर से निकालना, पानी से निकालना, अपने ही को अपना बंधन डालना आदि नाम different different नाम लेना वगैरा वगैरा बहुत सारे सब कुछ प्रकार हैं, इसके बारे में आप चाहें तो इन लोगों से ग़र बात करें तो ये लोग सब बता सकते हैं। लेकिन realized आदमी को ध्यान में आते वक्त पहले बैठ कर के देखना चाहिए कि माताजी से जो आ रहा है उसमें कहीं हमारी कोई पकड़ है ? हमें vibration आ रहे हैं कि नहीं ? गर vibration रुक गए हैं तो उनको निकालना चाहिए। उसको कैसे निकालना चाहिए क्या करना चाहिए, शरद जी बता सकते हैं, ये लोग बता सकते हैं किस तरह से बन्द हुए vibration आ सकते हैं। गर हाथ में थोड़ी सी जलन है तो उसको फूक कर कैसे निकालना चाहिए। उसको उस वक्त फूक करके निकाल दीजिए, नाम ले लीजिए। फूकने से निकल जाएगा एक दम, ऐसे

निकल जाएगा कि आपको लगेगा ही नहीं कि वहाँ कोई पकड़ भी है। Atmosphere में है, हर जगह है, आप पकड़ेंगे नहीं।

अभी आपकी दशा वैसी है जैसे छोटी सी लड़की खाना बनाना सीखती है। लेकिन आप जब इस शास्त्र में निपुण हो जाएंगे तभी आप असली योगी होंगे। क्योंकि कुशलता पूरी आनी चाहिए, perfect knowledge आनी चाहिए। जब perfect इसका knowledge आ जाता है तब आप ही इसका knowledge हो जाते हैं माने आप करते कुछ नहीं वो स्वतः सब मामला अपने आप चलते रहता है जैसे कि ये अगर perfect हो जाए और उसमें से मेरी आवाज ग़र perfect उसमें जा रही है तो उसको कुछ नहीं करना पड़ता है, इसको कुछ जानना नहीं पड़ता है, सीधे ही सारे का सारा record हो जाता है। क्योंकि बोलने वाला और करने वाला और सबको संभालने वाला पालनहार परमात्मा सबके सर पे मंडरा रहा है। Realized लोगों को एक बात और भी पता होनी चाहिए, ये भी बहुत जरूरी बात है जिसको जान लेने से आपको एक तरह की निर्भरता आती है। हरेक realized आदमी के उपर में देवता मंडराते हैं। जैसे किसी negative आदमी के ऊपर में भूत मंडराते हैं वैसे ही बहुत लालायित है सारे देवता लोग उन लोगों की मदद करने के लिए जो realized हैं। उनको सुगन्ध आती है और वो बराबर उनके आसपास मंडराते हैं। आपमें से जिन ल़ोगों ने इसका अनुभव लिया होगा, अभी कोई बता रही थी उस दिन कि उनके देवर पर बाधा थी, उसपे भूत की बाधा थी और साढे तीन बजे के करीब उनकी तबीयत बहुत खराब हो गई और वो लगे चिल्लाने चीखने और बाहर भी आदमी चिल्लाने चीखने लग गए और उसके बाद में कहने लगे इतनी गंदगी अन्दर में आई, इतनी बदबू अन्दर में आई कि समझ में नहीं आया अब क्या करें। इसके बाद उन लोगों ने नाम लेना शुरु कर दिया और उसको vibration देना शुरु कर दी। जैसे ही वो ठण्डे पड़े वैसे ही खुशबू आनी शुरु हो गई बहुत ज़ोरों में और सब ठीक हो गया। आपको भी, कितने ही लोगों को ध्यान में पार होने से पहले या बाद में बहुत बार सुगन्ध आती है। तो चैतन्य सुगन्ध देता है चैतन्य बहुत सुगन्धित है और अत्यन्त आह्लाददायी है। इसी से आपको सुगन्ध आती है। तो जितना कुछ दुर्गन्ध वो अपने आप गिर सकता है गर आप अपनी ध्यान की दशा ठीक कर लें, याने आप अपने को ठीक कर लें। इसमें कोई बुरा मानने की बात नहीं है। आपने देखा कि शरद है, हम कहते हैं कि शरद काफी ऊँचे हैं, कोई बहुत ऊँचे हैं, देवड़े हैं, पंत भाई हैं, आदि बहुत सारे लोग आप जानते हैं।

साहू साहब भी आगे चले गए, अपने लाल साहब भी आगे चले गए, बहुत से लोग आगे चले गए। अब इनके नाम लो, मैंने कहा सभी लोग आगे चले गए और तो भी वो सब लोग पकड़ते ही हैं थोड़ा बहुत। किस किस का नाम लें, सभी लोग थोड़ा थोड़ा पकड़ते हैं। शरद ने अभी पकड़ लिया बुरी तरह से। तीन दिन पहले उन्होंने बहुत बुरी तरह से पकड़ लिया था। ठीक है पकड़ लिया था लेकिन समझ में आ रहा था कि पकड़े हैं इसलिए ये हालत हो रही है। पकड़ गए ये समझ में आ रहा है, इसको निकाल डालना बहुत ही आसान है। Realized आदमी के लिए तो बहुत ही आसान है। उसको किसी तरह से निकाल डालना चाहिए। कैसे निकालना चाहिए, क्या करना चाहिए उसकी क्या–क्या विधियाँ है, ये वो सब जानते हैं और अपने ऊपर experiment करते हैं तरह–तरह के। इसको समुद्र में खड़े होकर भी निकाल सकते हैं,

बहुत से पहले realized लोग जाकर पानी में ही बैठ जाते थे। अच्छी बात है क्योंकि बेचारे इतने परेशान होते थे, उनकी उंगलियां जलने लगती थीं। यहाँ गगनगढ़ बाबा महाराज हैं वो जब पार हो गए तो उसके बाद वो पानी में बैठ गए, उनकी उंगलियाँ जो वो जलकर छोटी हो गई। उनमें creative power तो आ गई थी परन्तु उनको ये नहीं मालूम कि उनकी उंगलियाँ क्यों जल जल कर छोटी हो गई थीं? उनकी उंगलियाँ जल जलकर इतनी छोटी हो गई क्योंकि आप जानते हैं आपके भी हाथ जलते रहते है अब बेचारे को पता ही नहीं था। अब बम्बई शहर में वो आते ही नहीं है क्योंकि बम्बई शहर में इतने हाथ जलते हैं कि उनके हाथ बहुत ज्यादा जलते हैं या उनको पता ही नहीं था कि इनको किस प्रकार ठीक करो। बेचारे जाकर के वहाँ बैठ गए। वहाँ जाकर बैठ गए, अब वो पानी में बैठे रहते हैं। क्योंकि अब आपको तो कोई बताने वाला है, जानकार है, समझाने वाला है कि हाथ जल रहे हैं कोई हर्ज नहीं इस तरह से निकाल डालो। हमारे देवड़े साहब के हाथ दो चार लोगों से इतनी बुरी तरह जले थे कि वो तो किसी किसी को देखकर nervous हो जाते हैं कि माताजी इनसे कल वो दाढ़ी वाले आए थे उनको देखकर इनके दोनो हाथ आकाश की ओर इस तरह से घूमने लगे तो आप इसको सोच लीजिए कि आपको कोई बताने वाला है समझाने वाला है कि realization के बाद कितनी dangerous बात है, कोई भी आपको पकड़ सकता है। आप बिल्कुल छोटे से बच्चे हैं, बिल्कुल और ऐसे छोटे से बच्चे बहुत जरूरी है कि अपनी स्थिति जो है उसको संभाले रखना। हमारा तो आप पर सब पर हाथ है ही, हर समय और हर समय आपका सबका ख्याल रखे हैं। और अत्यन्त प्रेम है सबसे और बड़ा गौरव भी लगता है और बड़ा आनन्द भी आता है। इतने लोग आज मेरे बच्चे हैं बेटे हैं, बड़े गौरव की बात है माँ के लिए, लेकिन जो पाया हुआ है वो छोटी–छोटी चीजों पर मत जाया करें।

आप लोगों को सबको इसका अनुभव हुआ है। कभी आप यादव से पूछें, वो आपको बताएगें, अभी पाटिल साहब आए हैं वो भी मुझे बता रहे हैं। इधर ladies में कितने ही लोग बता सकते हैं कि कैसे–कैसे इनको अनुभव आए, कैसे कैसे इनके साथ हुआ। मतलब कोई भी problem हो उसको तो मैं solve कर ही सकती हूँ। पर थोड़ा थोड़ा आप भी चलें, आप भी सीखें, जाने इस चीज को। आप ही डॉक्टर हैं और आप ही दवा हैं। आप ही के हाथ से जाने वाला है और आप ही उसको समझने वाले हैं। तुमको थोड़ी सी कहीं चोट वोट लग भी गई तो माँ बैठी हैं ठीक करने वाली। कोई चिन्ता की बात नहीं। ऐसे पहले कहाँ थे लोग? अब जो ऐसे लोग पार भी हुए हैं वो बेचारे कहते हैं कहाँ से हम पार हो गए, भगवान बचाए। ऐसे ऐसे इसलिए पहले लोग पार हो जाते थे तो हाथ में चिमटा लेकर बैठते थे। उनका दोष नहीं था। कोई आए उसको तड़ाक से मार देते थे। कोई गर जलाने वाला आता था जिसकी तरफ से ऐसे गरम गरम भाप आती थी तो उसको लेकर चिमटे से मारते थे। उनको चिमटे वाला कहते थे। हमने अपने बचपन में देखे हैं। ऐसे मैं देखकर हैरान हूँ कि जो आए उसको चिमटे से मार रहे हैं! जिसको देखो उसे। मुझे बड़े प्यार से बुलाते थे। मैने कभी चिमटे विमटे से मार नहीं खाई। इनके पास कौन जाए? उसकी वजह ये है कि उनको कोई समझाने वाला बताने वाला था ही नहीं। अब आप इतने लोगों की बीमारियाँ ठीक करते हैं, कैंसर जैसी बीमारियाँ आप ठीक करते हैं। इस तरह की बीमारियों

को आप ठीक करते हैं, कितनी ही तरह की बाधाओं को आपने हटा दिया है। इतना आपने कार्य किया है, जरूरी है कि उसमें आपको कुछ न कुछ पकड़ेगा ही। लेकिन उसका इलाज, उसका भी दवाखाना है। आपका भी दवाखाना है और आपको बताने वाला भी बैठा है और सब बारीकी समझाने वाला बैठा है। कोई डरने की बात नहीं। फिर भी गर आप डरे तो इसका मतलब है कि आगे जाने का इस जन्म में नहीं होगा। ये तो realized लोगों की बात हुई, लेकिन एक और बात हमको समझना चाहिए।

बहुत से सन्त साधु ऐसे हैं जो मर चुके हैं पर जन्म नहीं ले पा रहे हैं। कोशिश कर रहे हैं बहुत वो परन्तु जन्म नहीं ले पा रहे हैं। क्योंकि उनको ऐसा जीव नहीं मिल रहा है या कुछ और प्रश्न है। तो ऐसे सन्त साधुओं का भी ऐसा विचार बन रहा है कि हमारे बीच में जो लोग कभी भी realized नहीं हो सके, ऐसे बहुत से लोग है अपने यहाँ जो कभी भी नहीं होगे क्योंकि उन्होंने पहले ऐसे कर्म किए हुए हैं कि कुछ ऐसे कार्य किए, कुछ ऐसा किया है कि उसमें फंसे हुए हैं या कुछ ऐसी बात है, तो वो कहते हैं कि हम इनके अन्दर आ जाएं। तो आपको उनके अन्दर बाधा सी लगेगी परन्तु वो कोई नुकसान वाले नहीं हैं। इनसे लड़ने की जरूरत नहीं। ये हालांकि बड़े theoretical लोग जो हैं उनको बड़ी अजीब सी बात लगेगी कि माताजी ऐसी बात कहते हैं, उनको छेड़ो नहीं, उनको छेड़ोगे तो उनके अन्दर भूत तो घुसे ही हुए हैं। भूत नहीं होंगे तो सन्त आ जाएंगे। सन्त आने से अपना कार्य होगा, इसलिए बहुत से लोगों में सन्त भी घुसे हैं। उनकी बड़ी इच्छा है, उन्होंने ऐसा कहा है हमसे कि हम चाहते हैं कि अपने को लाएं। लेकिन अब हम छोटे बच्चे के रूप में आएंगे तो तुम्हें कैसे मदद मिलेगी? इसलिए बेहतर है ऐसे लोग जो तुम्हारे इसमें आते हैं और जो पार होने के बाद दिखाई नहीं देते, ऐसे बहुत से लोग हैं, वो लोग गर पार भी नहीं हो रहे हैं तो भी आपको उनसे भिड़ने की जरूरत नहीं क्योंकि वो आके रहेंगे नहीं हमेशा के लिए। वो चार साल आएंगें, नहीं तो छः साल आएंगे वो दस साल भी आएंगे उनसे भिड़ना नहीं। आ रहे हैं बैठने दो। आपको मालूम है पार नहीं हैं। जो एक बार पार हो गया वो तो पार होता रहेगा लेकिन जो हुआ ही नहीं पार और डावांडोल चल रहा है उससे भिड़ने की जरूरत नहीं। ये आज आपको मैं दूसरी तरह की बात बता रही हूँ। उनपे भी सन्त लोग ही काम करेंगे क्योंकि बगैर उनके काम नहीं बन रहा है। भूत बाधा जो है उसको भगाने के लिए ये सन्त ही लोग काम करेंगे। तो क्या आप लोगों को वो दिखाई नहीं देता? आप लोग परलोक में तो जा नहीं सकते। तो उन्हीं को ये कार्य करने दें। वो लोग कहते हैं कि हम आकर के इसमें कार्यान्वित रहेंगे और आपके कार्य को हम बढ़ाएंगे। वो आपको किसी को ठीक नहीं करेंगे, कुछ नहीं करेंगे, पर वो इस तरह का कार्य करेंगे जो दूसरों के साथ में जैसे ऐसे लोग हैं, वो जरा भाषा प्रबल होंगे। वो बोलेंगे, लोगो को खींचकर के लाएंगे, बहुत से और लोगों को लाएंगे जिनको आना है।

ऐसे हमारे पास एक साहब थे उन्होंने हमारे ऊपर Article भी लिखा था परन्तु वो कुछ ज्यादा नहीं टिक पाए। वो भाग गए। वो कभी पार नहीं होने वाले। उनको किसी ने कहा कि लिखो इन पर तो वो लिखने लग गए हमारे ऊपर। फिर उसके बाद में जरा वो वेचारे दूसरे ही चक्कर में फंस गए और वहाँ पर दूसरा ही ढंग चल गया। तो वो उसी में फंस गए। तो ऐसे लोगों को बचाना चाहिए,

उनको सन्तों ही के साथ में रखो। कम से कम सदाचार में रहेंगे और अपने यहाँ आने से इनके उपर कोई भूत बाधा नहीं आएगी, इनको कोई शारीरिक पीड़ा नहीं होगी। उनको मानसिक पीड़ा नहीं होगी, उनकी बुद्धि सही रहेगी। क्योंकि सन्त किसी को सताते नहीं इसलिए उनके अन्दर सन्त ही लोग आते हैं। लेकिन जो महन्त हैं वो भी आपके ऊपर मंडरा रहे हैं, वो भी आपकी मदद कर रहे हैं। वो आपको बहुत सारी बातों से बचाएंगे और आपको संभालेंगे।

आपको शारीरिक मानसिक, बौद्धिक protection रहेगा। अपने संसार के जो कार्य हैं उसको देखेंगे, आपके घर द्वार का जो काम है वो देखेंगे, आपके बाल बच्चों को संभालेंगे। ये सब वो लोग करेंगे। लेकिन आप लोग अपने को पूरी तरह से परमात्मा में लीन करे, बहुत बडी आप पर जिम्मेदारी है। आज मैं चाह रही थी कि गर किसी को कोई प्रश्न हो, कुछ discussion करना हो वो करें। पिछले पाँच साल में मुझे बहुत अच्छे अनुभव हुए हैं और आप लोग बगीचे में जैसे gardner होते हैं इस तरह से हैं। आपको इस बगीचे को कैसे रखना है, इसको किस तरह से ठीक रखना है, कैसे चलाना है, वो सब आपको सोचना है। वो आप सोचकर के उसको बताएं कि आप कैसे हैं। उन्होंने एक जो बात कही वो ठीक है वो कह रहे थे गर हम लोगों ने realization दिया और उसके बाद हमनें follow up नहीं किया, realization होगा, ये बात सही है गर हम लोगों ने अपने जो realization की जो देने पर भी follow up नहीं किया उनको प्रयत्न नहीं, किया उनको आगे बढ़ाते नहीं रहे, उनको हमने ख्याल नहीं किया तो हो सकता है उनका जो realization है वो खो जाए। और फिर बहुत देर बाद जागेगा और तब तक उनको परेशानी होगी। इसलिए सबको इसमें समेटे रहना है और सबको हर महीने एक बार तो भई मिलना चाहिए। हर realized आदमी को हर महीने एक बार तो भई मिलना चाहिए। वो ऐसा आप बना लीजिए हर महीने में एक बार सबके पास में चिट्ठी जाए। या कोई ऐसा newspaper बना लीजिए जिसको सब लोग पढ़ते हों, उसमें एक महीने के लिए वहाँ पर दिया जाए, जहाँ पैसा न लगे? पैसा आप लोग कहीं भी मत दो न आप लोग पैसा लो। पैसे के मामले में आप पड़िये मत। आश्रम बनाने के लिए जो सरकार जमीन भी देगी उसमें भी कभी इस तरह से विचार न करें कि आप सब्जी लगाइए, फिर आप सब्जी बेच रहे है! ये सब धन्धे करने की कोई जरूरत नहीं। हम लोगों को पैसा नहीं कमाना है। आज आप लोगों ने पढ़ा होगा कि वो चेयरमैन स्टेट बैंक का क्या हाल हो गया ? वो आश्रम में 90 लाख उसको दिया 20 लाख उसको दिया, वहाँ फर्नीचर बन रहा है, वहाँ फर्नीचर बनाने का आश्रम में काम होता है। आप जरा अक्ल लगाएं। आप मेहरबानी से अपने इसमें फर्नीचर बनाकर उसको बेचिएगा नहीं, नहीं तो कल देखिएगा हमारे शिष्य लोग फर्नीचर बना रहे हैं कोई जरूरत नहीं। वहाँ पर आपको करना है तो gardening कर लेना नहीं तो gardner रख लेना। ये सब काम करने के लिए बहुत से लोग हैं। आप लोग तो विशेष काम के लिए हैं आप लोग ध्यान में चैतन्य दें और इस तरह से दुख दूर करने में उनको चैतन्य देने में, उनको जागृति देने में, उनको पार कराने में संलग्न रहें। और पैसा जहाँ तक है दूर रहें। पैसे के मामले में बिल्कुल आप न लगें। पैसा, पैसे का इंतजाम होना चाहिए और वो जितना जितना रुपया लो उसका हिसाब किताब रखो, कोई बात नहीं। चैतन्य का और पैसे का हिसाब किताब आपने जोड़ दिया तो

आप पकड़ जाएंगे हमेशा के लिए। इसलिए पैसा और परमात्मा इसका बिल्कुल कोई सम्बंध नहीं।

कोई आपको मुफ्त में जगह देता है भले नहीं देता है तो कोई बात नहीं। सब परमात्मा की जगह है। अगर आप कहीं बैठे हुए हैं, किसी ने आपको जगह दे दी वो परमात्मा का आदमी था उसने आपको जगह दे दी। दे दी नहीं दी भला। जगह से कोई भी मनुष्य परमात्मा नहीं बन सकता। आश्रम बहुत से बने आज तक, हमारा कोई आश्रम नहीं बना इसलिए उधर कोई भी दृष्टि न लगाएं। मेहरबानी से अपनी दृष्टि उधर न लगाएं। आश्रम में हम ये करेंगे और वो करेंगे और आश्रम में हम buisness करेंगे। मैं ये चीज कभी चलने नहीं दूंगी। और जब मैं देखूंगी कि आप लोग उस धंधे में फंस रहे हो तो मेरे बस के आप लोग नहीं, फिर मैं आपके लिए कुछ नहीं। Business आपको बिल्कुल नहीं करना है, किसी भी तरह, पैसा भी आपको इक्ट्ठा नहीं करना है किसी भी तरह, कोई सी भी चीज के लिए। एक साहब थे वो मुझसे कहने लगे मैं आपके फोटो बेचूंगा, जितनी भी income होगी उसमें मै आश्रम को पैसे भेजूंगा। मैने कहा कौन सा आश्रम, किसको पैसे दोगे? किसने कहा है ?

इसकी कोई आपको चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं। सब करने वाला और अपने को संभालने वाला वो है। हम कोई अपना काम थोड़े ही कर रहे हैं उसका काम कर रहे हैं। उसको देना हो दे नहीं देना हो नहीं दे। और वही काम जो रात–दिन हम गोबर खाने का करते हैं वो इसमें आकर भी करने का है तो कोई फायदा नहीं। मुझे इस तरह का सुझाव कोई भी न दे क्योंकि दो चार ने दिया है इससे मेरा बड़ा जी घबराता है। मेहरबानी से मुझे इस तरह के सुझाव मैं सुनने वाली नहीं। ऐसे तो मैं सीधी हूँ और भोली भी हूँ लेकिन ऐसे बड़ी चालाक भी हूँ। इस चक्कर में मैं आने वाली नहीं हूँ। आपको पहले मैं बता देती हूँ कि अगर पैसे के चक्कर में आपने मुझे चलाया तो मैं उसमें चलने वाली नहीं। चाहे आप लोग पार हों चाहे नहीं हों मेरा इससे कोई मतलब नहीं है। पहले ही समझ लेना चाहिए कि पैसे का और इसका सम्बंध कहीं भी और किसी जगह भी नहीं है। दूसरी चीज राजकारण से भी इसका सम्बंध नहीं है। अभी आपको ऐसे भी लोग आएंगे कि चलो तुम election में खड़े हो जाओ, तुम्हारा इतना following है। आपको राजकारण में जाना है तो आप राजकारण में जाएं। लेकिन राजकारण मनुष्य ने बनाया परमात्मा ने बनाया नहीं। जो परमात्मा ने बनाया है जब उसमें खड़ा होना है तो उसका राजकारण से और सत्ता से कोई भी सम्बंध नहीं। ये पहली बात है। गर आप ये सोचें कि साहब आप बड़े भारी trustee हैं, यहाँ तो दो ही चार हैं बेचारे अभी लेकिन कोई अपने को सोचे कि मैं बड़ा भारी सेक्रेटरी हूँ या मैं इसका चैयरमैन हूँ कल मैं सोचू इसका चैयरमैन हूँ तो इसमें चेयर–वेयर का कोई भी सम्बंध नहीं है और न ही इसका आसन है न पीठ है। पहली बात समझ लो आपस में करने की बात है, न इसका कोई पीठ है न इसका आसन है।

कोई पीठ निकालने की आवश्यकता नहीं। आदिशंकराचार्य की गद्दी पर कौन लोग बैठे हैं? None realized soul हैं। कोई गद्दी पर नहीं बैठने वाला। सब अपनी गद्दी पर बैठेंगे। दूसरे की गद्दी पर बैठने से हमेशा आपको निकालने का डर रहता है। अपनी अपनी गद्दी पर सब लोग बैठेंगे और अपनी ही गद्दी पर सब लोग राज करेंगे। तो बहुत ठीक है, दो चार चीजों को बिल्कुल गाँठ बांध लीजिए। तीसरी चीज कि सद्चरित्र, सदाचार

और शुद्धता, इसके बगैर कुछ भी आप इस मार्ग में जा नहीं सकते। ग़र आपके अन्दर कोई ऐसी आदतें हैं तो आपको उनको छोड़ने का प्रयत्न करना ही होगा मेरे पाँव की कसम लेकर। असल में बात ये है अब आपके अन्दर शक्ति है बहुत बड़ी। जैसे हिन्दुस्तानियों की खास आदते ये हैं आपस में बुराई करना। सब आप प्रेम में बंधे हुए हैं, हम सब भाई बहन हैं। आपस में ग़र किसी से कुछ हो भी गया, हो सकता है किसी का पैर डिग भी जाए, तो जरूरी नहीं कि उसको जाकर सारे संसार में आप बदनाम करते फिरें। मुझे आकर आप बताएं।

ये चीज हम ठीक कर सकते हैं लेकिन जान देकर भी अपने भाईयों को बचाने की आप पर पूर्ण जिम्मेदारी हैं। भाईयों को और बहनों को। इसके लिए कुछ भी करना पड़े हमें उसको बचाना पड़ेगा। मतलब morally। इसका मतलब नहीं कि आप किसी को पैसा दें, <u>आप किसी को पैसा उधार नहीं दें। कोई गर आपसे पैसा उधार माँगता है तो बिल्कुल एक कौडी न दें, बिल्कुल देने की जरूरत नहीं, किसी को एक पैसा उधार देने की जरूरत नहीं।</u> गर कोई आदमी अपने spiritual life में kundalini में उसका पतन हो रहा हो, किसी तरह गिर रहा हो, उसको कोई आदत पड़ गई हो तो सबको उसकी मिलकर मदद करनी चाहिए। उसके चक्र चलाओ अपने प्यार से। पवित्रता पूरी तरह से जब तक हमारे अन्दर नहीं आएगी तब तक हमारा कार्य अधूरा रहेगा। आपको ये पता होना चाहिए कि सारी दुनिया की दृष्टि आप पर है। ये लगाकर के आप दीवाली सजाइये। लोगों की दृष्टि घर पर नहीं होती उन दीयों पर होती है जो जलते हैं। आप हरेक के जीवन की ओर संसार की दृष्टि है कि आप ये जो बड़े पार हो गए हैं और दुनिया भर की बीमारियाँ ठीक कर रहे हैं उनका जीवन कैसा है। उसकी बुराई कर, उसकी बुराई कर। हालांकि अभी तक तो ऐसा मैंने देखा नहीं, अभी तक तो इतनी बुराई नहीं आई है लेकिन हो सकता है। कोई बात हो हमसे आकर कहें। सबमें कमियाँ हैं अभी कोई perfect तो हुआ नहीं। इसलिए जो कुछ भी जिसमें कमी है उसका इलाज मैं खुद ही बैठे बिठाए कर दूंगी। और अपने में जो कमी है वो किसी को कहने में शर्माएं नहीं। सब अपने भाई बहन हैं। जैसे ही आप कह देंगे मेरा ये पकड़ा है तो वैसे ही साफ हो सकता है। अगर आप नहीं कहेंगे तो कौन कर सकता है ? इसमें कोई बुरा मानने की बात नहीं। आप जानते है सबका ही पकड़ता है, सबको ही होता है। सब डॉक्टर हैं। डॉक्टर लोग आपस में फ्री इलाज करते हैं इसलिए आपका सबका इलाज फ्री हो सकता है। भाईचारा आना चाहिए और अत्यन्त पवित्र जीवन की ओर अपनी दृष्टि रखें।

तो पवित्रता बहुत जरूरी उसके बगैर कार्य बन नहीं सकता, पहले गर पवित्रता की मैं बात करती न तो वो ही perversion की बात आ जाती है। इस तरह से आप लोग एक चीज छोडने जाते हैं तो दूसरी पकड़ लेते हैं, दूसरी चीज छोड़ने जाते हैं तो तीसरी चीज पकड़ लेते हैं। लेकिन realization के बाद ये problem नहीं रहता। Realization के बाद जो यहाँ छेद कर दिया है न इसके कारण हरेक चीज यहाँ से निकल जाएगी। आप एक चीज छोड़ेंगे वो यहाँ से निकल जाएगी। छूटेगी यहाँ से, निकल जाएगी, पूरी ही निकल जाएगी। इसलिए वो नहीं और जगह घुसने वाली। ये जो यहाँ छेद कर दिया है ये इसका फायदा है। जो आदत है उसका विचार मन में ले लें, उसको यहाँ रखकर उसको निकालें, वहाँ पर जो आदत है आपको वहीं भारी

लगेगा। नाभि पर किसी को खाने की आदत है, बहुत ज्यादा अच्छा नहीं लगता, बहुत ज्यादा खाता है, नाभि पर ध्यान रखें। नाभि आपकी यूँ यूँ कर रही हैं। नाभि से लेकर के उसको धीरे धीरे धीरे धीरे करके उसको निकालें। सब निकल जाएगा। सब आदतें यहाँ से निकलेंगी, सब गंदगी यहाँ से निकलेगी। अब उल्टी तरफ को चलेगा। अभी देवड़े साहब ने मुझे बताया कि मेरे यहाँ से अहंकार टूटा। सच्ची बात है। श्वांस देखना, सुनना, सूंघना, स्वाद सब यहाँ से है। आखिर सब चेतना की ही वजह से होता है और जब चेतना यहीं पर आ गई तो सब यहीं पर है। हृदय का स्पंदन सारे शरीर का कार्य यहाँ से चलता है। इसमें कोई भी ऐसी बात जिसको आप निकालना चाहते हैं अपने अंदर से उसको आप दबाकर के और यहाँ से निकाल दें। आदते छूट जाएंगी। सारी आदतें आपकी यहाँ से निकलकर छूट जाएंगी। क्योंकि ये छेद हो गया ये बड़ा फायदे का है। ये छेद नहीं था तो इसको इधर से दबाइए तो जैसे कहते हैं समुद्र को इधर से दबाइए तो दूसरे तरफ से निकल जाता है लेकिन उसमें ग़र एक जगह बना दी जाए तो वहीं जाएगा। इसलिए एक तरफ से गर दबाइएगा तो दूसरी तरफ से निकलेगा नहीं वो बाहर निकल आएगा। प्रयत्न लेकिन करें और सोचें, अपनी ओर देखें कि हमारे अन्दर क्या अपवित्र चीज है।

जैसे हमारी माँ का नाम है ऐसे ही हमें निर्मल होना है। और हमारे अन्दर, हमारे अन्दर क्या अपवित्र चीज है जो दूसरों के अन्दर नहीं। क्योंकि यही बात आती है। हाँ अभी मैं देख रही हूँ किसी किसी को ऐसा लग रहा है कि हाँ उनमें ऐसा, उनमें ऐसा ये नहीं। मेरा मतलब हमारे अन्दर क्या है। मतलब हम जो हैं उसके अन्दर कौन सा है। ये हमारे misidentification हमने किसी को ये समझ लिया है कि हम भई ईसाई हैं, हम मुसलमान हैं, हम हिन्दू हैं, अब बस बाकी सब बेकार है। तो ये misidentification है और सब कुछ झूठ है सच सिर्फ एक ही है कि हम मनुष्य हैं। बिल्कुल उस सच्चाई पर एक दम आ जाइए, reality पर। पहले आप उस पर आ जाएं फिर बाकी चीज़ आपको खुद समझ में आ जाएगी। Misidentification अपने जो हैं उनको देखते रहना है। पूरा समय, हर समय देखना है अभी हम क्या सोच रहे हैं ? अभी हम ये सोच रहे हैं कि घर जाकर हमें अभी खाना बनाना है। खाया नहीं यहाँ पर। कुछ लोग ये सोच रहे हैं कि office में आज क्या हुआ, अब office में कल क्या होगा। तरह तरह की बातें सब लोग सोच रहे हैं मुझे सब मालूम है लोग क्या सोच रहे हैं। निर्विचारिता में मेरा भाषण सुनना चाहिए। लेकिन नहीं। इन विचारों को नहीं रखना। खाना हमारा बनाने वाला बैठा हुआ है हम नहीं खाना बनाएंगे। आप एक बार ये सोचकर देखिए, जब आपके अन्दर ये भी चमत्कार हो गए कि आप बैठे विठाए निर्विचारिता में उतर गए तो ये भी चमत्कार देख लेंगे। क्योंकि matter भी तो उसी चैतन्य शक्ति से चलती है। उसको भी देखें। खाना बनाने वाला बैठा हुआ है। ऐसे ऐसे आपके प्रश्न जो हैं ऐसे छूट जाते हैं। निर्विचारिता में जाते ही आप समझ जाएंगे कि आप शरणागत परमात्मा के हो गए हैं और निर्विचारिता में उसकी मदद आपके अन्दर आ गई है। आपको कुछ और प्रश्न हो तो मुझसे आज पूछ लीजिए। अब ध्यान नहीं करेंगे क्योंकि समय अब हो गया है काफी। अब सबको ध्यान मिल गया है।

अगले सत्र में ध्यान होगा उस वक्त कुछ गर हो सके तो कुछ मंत्र वगैरा पूजन वगैरा कर लिया जाए, जिससे आपको विशेष रूप से कवच दिया जाएगा। उससे ये कि आप पर फिर कोई आफत न

आए। बाहर जो शैतान लोग घूम रहें हैं उससे आप लोग और संकट में नहीं आएं। तो जरूर आएं। उसके बाद का प्रोग्राम पूना में है जिनको आना है वो पूना भी आ सकते हैं। लेकिन पूरे हफ्ते का प्रोग्राम आप इन दो हफ्तों में attend करें तो अच्छा रहेगा। अब जो मैंने बात कही है उस पर विचार करें। अब मेरी बात पर आपको conditioning नहीं हो सकता। Conditioning भी यहाँ से निकल जाएगी। बात का जो सार है वो उपर जाएगा। Conditioning यहाँ से निकल जाएगी। Realization के बाद सबसे बड़ा फायदा ये है कि कोई चीज़ आपको चिपक नहीं सकती। खाली चैतन्य चिपक सकता है। माने मैं गर चाहे उर्दू में बोलूं चाहे फारसी में बोलूं चाहे फ्रैंच में बोलूं लेकिन उसकी जो चैतन्य शक्ति बह रही है न उन शब्दों से वो आपके अन्दर आ जाएगी। इसमें से जो viberation हैं वो आपको पकड़ते हैं। उसको भाषा समझ में नहीं आने की जरूरत। जो प्रेम है न अन्दर से वो आपके अन्दर बह जाएगा। जैसे फूल का आपको नाम नहीं पता लेकिन शहद आपके अन्दर उतरता जाएगा। सुगन्ध आपके अन्दर उतरता जाएगा। सुगन्ध वो चैतन्य है और फूल का नाम जो भी हो तो नाम आपको समझ में नहीं भी आए तो सुगन्ध हरेक मनुष्य को आता है।

किसी फूल को रखो चाहे वो अग्रेज हो, फ्रैंच हो, इंडियन हो, सबको सुगन्ध आता है। इस पर कोई भाषा करने की जरूरत नहीं। इसी तरह से परमात्मा का सुगन्ध जो ये चैतन्य शक्ति है ये भी हरेक आदमी को आ सकती है। चाहे किसी तरह का हो। इस भाषण में जो मुझे कहना था वो दूसरी बात, लेकिन जो मुझे देना था वो दूसरी बात। वो अन्दर आत्मसात हो गया और साथ ही जो भी अन्दर गड़बड़ियाँ हुई हैं सबको यहाँ से निकाल दो। अन्दर मंथन होगा। उसके साथ जो कुछ भी चक्र घूमकर के उसको फेंकना चाहता है उसको फेंकने दो। अपने आप उसको निकाल दो, किसी किसी का सिर भारी हो गया हो उसको निकाल दो। सर जब भारी होता है तो दूसरों को पकड़ता है, कुछ अपना भी बचा खुचा निकल आता है। निकाल दो। इसमें कोई बात नहीं। Left hand से निकाल दो right hand मेरी तरफ कर लो। किसी को सवाल पूछना है पूछ लो।

मेरे बच्चो आपको समझ लेना चाहिए कि मैं अपमान एवम् पीड़ा से परे हूँ। क्या आप जानते हैं कि ईसा मसीह को जब सूली पर चढ़ाया गया, वे अपनी पीड़ा के साक्षी थे? उन्हें कभी भी अपमानित नहीं किया जा सकता। परन्तु ये लोग शैतानी शक्तियों के दबाब में हैं। हमें इनकी रक्षा करनी होगी। क्या आप चाहते हैं कि वे सब नर्क में चले जाएं ?

परमपूज्य माताजी श्री निर्मला देवी

अपनी ओर चित्त रखें

मुम्बई, 21–12–1975
परम पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

सहजयोगियों का प्रेम इतना अगाध है कि शब्द सूझ नहीं रहे कि किस तरह से बात की जाए। आपको पता है कि संसार में हर जगह आज सहजयोगी उत्क्रांति की ओर, evolution की ओर बढ़ रहा है। बहुत से सहजयोगी बड़ी ऊँची दशा में चले गए हैं। आनंद के स्रोत उनके अंदर बह रहे हैं। कुछ तो बिल्कुल निमित्तमात्र हो करके ही संसार में एक विशेष रूप से कार्यान्वित हैं। लेकिन हर एक देश की एक अपनी अपनी, मैं देखती हूँ कि परिपाटी है। मानव हर जगह एक ही है। इसमें कोई अंतर नहीं है और सहजयोग एक अन्तर्तम की ही व्यवस्था है जिसका कि बाह्य से कोई सम्बंध है ही नहीं। तो भी चित्त जो कि प्रकृति का एक स्वरूप है, जिसे हम कुण्डलिनी के नाम से जानते हैं, उसके अंदर आप जिस जिस देश से गुजरे हैं, जिस जिस जन्म से गुजरे हैं, जिस जिस प्रणालियों से गुजरे हैं, जिस जिस व्यवस्थाओं में से आपका व्यवहार हुआ है, उस सभी का टेपरिकार्ड है। इसके कारण हर एक देश का, मैं देखती हूँ, मानव थोड़ा थोड़ा सा भिन्न हो जाता है।

बड़े आश्चर्य की बात है कि मानव जितना कुछ मिथ्या है उसे कितने जोर से पकड़ लेता है और सत्य को पकड़ने में कितना कतराता है! कितना ढीला होता है! इतने मुश्किल से अपनाता है सत्य को और असत्य को बहुत बुरी तरह से अपने अंदर पकड़े रहता है। आश्चर्य इसीलिए होता है। पहले तो मैं सोचती थी कि मानव अपना नाम, अपना गाँव, अपनी शिक्षा, अपना ओहदा, इन सब चीजों को बड़ा महत्वपूर्ण समझता है लेकिन अन्तर्तम में कितना गहरा इसका असर है उसको देखते ही बनता है। जितने जल्दी ये चीज अपने अंदर से छूट जाती है, जितने जल्दी मिथ्या हमारे अंदर से मिटता जाता है उतनी ही जल्दी हम लोग उस चित्त को हलका कर लेते हैं। सहजयोग में यही चित्त जो है, ये चित्त परमेश्वर से जाकर मिलता है। यही चित्त उस सर्वव्यापी, परमेश्वर के प्रकाश में जा कर डूब जाता है। यही मानव का चित्त जो कि हम प्रकृति का रूप समझते हैं, प्रकृति का जो ये फूल है वो परमात्मा के प्रेम सागर में विसर्जित हो जाता है। लेकिन ये चित्त कितना बोझिल है, कितना अव्यवस्थित है, कभी कभी देखते ही बनता है।

<u>सहजयोग की पहचान एक ही है कि आप कितने आनंद में उतरे, आप कितने शांति में उतरे, आप कितने प्रेम में उतरे। मिथ्या में रहने वाले लोग सहजयोग को नहीं प्राप्त कर सकते।</u> हमारी मेहनत से क्या हो सकता है? ज्यादा से ज्यादा हमारे कुण्डलिनी पर बिठा कर आपको हम वहाँ छोड़ देंगे लेकिन आप बार बार गिर आते हैं। उसका आंनद भी नहीं उठा पाते जहाँ आपको पहुँचाया है। हर एक देश में एक अजीब–अजीब तरह की समस्याएं हैं। अपने देश की समस्या है, इसको पहले समझ लेना चाहिए क्योंकि हमें अपनी समस्या पहले समझनी चाहिए। अपने प्रति। दूसरे देशों की समस्या है उसे भी समझना चाहिए। जैसे कि अभी यू.के. में मैंने अपना कार्य बहुत धीमा शुरु किया है। बहुत थोड़े लोगों को हाथ में लिया है। ज्यादा लोगों को लेना नहीं चाहती थी। सोचा पहले 25 आदमी ऐसे जमा लिए जाएं जो कि सहजयोग में जम जाएं। आपको आश्चर्य होगा कि बड़ी पहुँची हुई विभूतियाँ हैं वो। नितांत श्रद्धा है उनकी सहजयोग पर। वो सोचते हैं कि सहजयोग के बगैर कोई इलाज है ही नहीं। आज की दशा में पहुंचने पर सहजयोग

अत्यन्त अप्रतिम है, Dynamic चीज है और वो कोई प्रोग्राम है सहजयोग का तो उनके लिए उससे बढ़कर महत्वपूर्ण संसार में कोई चीज है ही नहीं और घण्टों तक वे उसी में लगे रहेंगे कि सहजयोग में अपने को जैसे की ये पता नहीं क्या परमात्मा की चीज आई हुई है जो दुनिया भर में देने की है, और वास्तविकता ये है ही। इसमें कोई शंका नहीं। लेकिन इतनी बड़ी वास्तविकता समझने पर भी उनका एक बड़ा भारी, मैं दोष तो नहीं कहूँगी, लेकिन कारण है। कारण वो भारतवर्ष की योग–भूमि में पैदा नहीं हुए। परमात्मा ने ऐसे सज्जनों को न जाने क्यों उस भोग भूमि में पैदा किया?

इस योग भूमि में आप पैदा हुए हैं और वो पैदा हुए हैं उस भोग भूमि में जहाँ पर के उनके उपर कोई भी, किसी भी प्रकार का संस्कार है ही नहीं। उनको ये भी पता नहीं है कि माथे पर सिन्दूर अगर लगता है तो वो नाक पर लगा रहे हैं या सर पर लगा रहे हैं। उनको पूजन की विधि मालूम नहीं, अर्चन की विधि मालूम नहीं। परमेश्वर के बारे में कुछ भी मालुमात नहीं। उनको नीचे बैठना तक नहीं आता। कुछ भी वो नहीं जानते। इतने अनभिज्ञ हैं कि आरती बजाने पर ताली कैसे देना चाहिए ये भी मालूम नहीं। और इतनी बड़ी–बड़ी विभूतियाँ हैं, इतने आंतरिक हैं वो लोग! इतने प्रेममय हैं। इतना उनको मेरे ऊपर प्रेम है, इतना आदर है मेरे प्रति कि मैं आश्चर्य करती हूँ। सामने गुजरते वक्त कभी भी सीधे नहीं गुजरते हैं, झुक करके। इतना मेरे प्रति प्रेम उनको है कि संसार की कोई सी भी चीज मेरे आगे उनको तुच्छ लगती है। इतना उनको मेरा महात्म्य है कि समझ में नहीं आता कि किस तरह से मेरे आदर को पूरा करें। इस पर बड़ा आश्चर्य होता है कि वो इस चीज का इतना महात्म्य समझते हैं और अपने प्रति अत्यंत उदासीन हैं, अपने पीछे डण्डा लेकर लगे हुए हैं। मैंने उनसे कहा कि आप अपने को जूते मार सकते हैं, आपके ऊपर जो बाधाएं हैं उनके लिए। मैंने 108 बार कहा, वो 3 बार 108 मारते हैं। जहाँ देखो वो अपने को मारते रहते हैं। हमसे कहने लगे कि कोई गालियाँ सिखाओ हम अपने को देना चाहते हैं। ये हम ही खराब हैं, कोई individually बात करते हैं। कभी मैने देखा नहीं कि किसी की शिकायत या किसी की कोई बात। अपने को ही कहते हैं। और दूसरे के बारे में यही कहते हैं कि वो इतना बढ़िया आदमी है कि हमें अपने पे लज्जा आती है। वो कितना बढ़िया है हम तो अपने पर शर्मिन्दा हैं। उसकी तरफ दृष्टि ही नहीं करते जिसको वे गलत सोचते हैं। अपने ही को गलत समझते हैं पूरे समय।

आपको आश्चर्य होगा कि अपने ही पीछे डण्डा लेकर लगे हुए हैं। यहाँ मैं देखती हूँ कि उसके बिल्कुल उल्टी बात है। सारी दृष्टि अपनी ओर लगा कर इतनी तपस्विता उन लोगों के अन्दर है और छोटे बच्चों जैसे मासूम बिल्कुल। मैं आने लगी तो झर झर झर झर आँसू उनके बहने लगे। सहजयोग उन पर डाला। सब कुछ कर लिया पर उनके आँसू नहीं रुके। इतनी सहज सरल उनकी भावना है। अभी तो सिर्फ 21 आदमी से ज्यादा नहीं ऐसे लोग, मैं जोड़ पाई हूँ। लेकिन है ये बात। और जिसको कहते हैं genuine असली। खुद मैं genuine नहीं हूँ, ये वो समझते हैं। कहते हैं कि कोई मेरे अंदर आकर कह रहा है कि मैं genuine नहीं हूँ। नहीं हूँ मैं genuine। माताजी मेरे अंदर ये कपट है। मैं इस झूठ को लिए हुए हूँ। पूर्णतया दिल को खोलकर कहते हैं और उनको कोई बात में शर्म नहीं आती। अपने को बुरा कहने में उनको जरा भी शर्म नहीं आती। लेकिन दूसरों को judgement वो

बिल्कुल नहीं करते। फिर ये भी बताते हैं कि हाँ मैंने ये गलत काम क्यों किया, इसकी वजह यह थी। अपना ही सब बताएंगे कि मेरे बाप ऐसे थे, एक बार ऐसा हुआ था, psychologically ये बात है इसलिए मैं ऐसा करता हूँ। मैंने ये बात ऐसे क्यों करी, इसका कारण वे बताते हैं कि ऐसा हुआ था इसलिए मैं ऐसा करता हूँ। एकाध दो लोग ऐसे भी आते हैं जिन पर बहुत बाधा थी। वो अपने दिन नहीं भूलते हैं बिल्कुल भी और चुप रहते हैं। कहते नहीं कुछ, कहते हैं कि नहीं, अभी हममें जो असर थे वो निकलने दो पूरे। हो सकता है कि कहीं छिपे हुए असर हों। इतनी मौन आत्मसात करते हैं। लेकिन उनके अंदर ये कमी है कि वो पूजन भी नहीं जानते, अर्चन भी नहीं जानते। बेचारों को समझ में नहीं आता। मैंने उनसे कहा कि मैं कुछ पैसा नहीं लेती हूँ कुछ भी नहीं लेती हूँ।

एक दिन ऐसे ही मैंने कहा कि मुझे ये डबलरोटी खाते थे वो मैंने कहा मुझे ये बहुत पंसद आती है तो जितने लोग आएंगे एक एक डबलरोटी ले कर। मैंने कहा इतनी सारी डबलरोटी कौन खाने वाला है? मैंनें ऐसे ही कह दिया था कहने को। ऐसे थोड़ा है कि मैं रोज खाती हूँ। उनकी समझ में नहीं आता कि किस तरह से समर्पण करें। सब बहुत पढ़े लिखे विद्वान, सब कुछ जानते हैं। आपके सारे शास्त्र वास्त्र उन्होंने जितने आपके अंग्रेजी में लिखे हैं, सब पढ़ डाले। उनके लिए सहजयोग समझाना कोई मुश्किल नहीं। वो कहते हैं कि ये जड़ से सूक्ष्म में उतरने का तरीका सहजयोग है। उन लोगों ने मेरा introduction लिखा है। अभी किताब आप पढ़कर दंग रह जाएंगे। सारे दुनिया के philosophers को लाकर उन्होंने माँ के चरणों में डाल दिए। ये सब कुछ भी नहीं है। इन्होंने क्या? इन्होनें तो प्रश्न खड़े किए, माँ ने उसका उत्तर दिया।

अपने भाग्य को सराहते हैं और कहते हैं कि हमारे परम भाग्य हैं कि हम पहले माँ से मिले और कहते हैं कि इस धरती में इतने लोग आप को ऐसे मिलेंगे। एक दिन सहजयोग बहुत ऊँचे पद पर पहुँचने वाला है, इसमें कोई शंका नहीं। लेकिन आप हमारी नींव हैं। नींव के पत्थर कितने जबरदस्त होने चाहिएं? पहली चीज हमें ध्यान में लानी चाहिए कि क्या हम genuine हैं? अपनी ओर नजर करें, दूसरों की ओर नहीं। अपनी ओर नजर करें। क्या हम genuine हैं? देखिए कि उनको कोई मंत्र भी बोलना नहीं आता। उनसे श्री कृष्ण भी बोलना नहीं आता बेचारों को बहुत मुश्किल से राधा कृष्ण कह पाते हैं। आपके लिए कितना सरल है कि आप अपनी विशुद्धि को साफ कर लें। राधा–कृष्ण आपने कह दिया हो गया काम खत्म। अब वो राधा कृष्ण नहीं कह सकते बेचारे तो कृष्ण जी जरा नाराज हो जाते हैं बात–बात पर। उनका pronunciation भी ठीक नहीं, और आपको आसानी से मिल जाते हैं। उनको कुमकुम लगाना नहीं आता। उनको सिन्दूर का मालूम नहीं, उनको फूल चढ़ाना नहीं आता, उनको गणेश जी बनाना नहीं आता, उनको स्वास्तिक बनाना नहीं आता, हर बार उल्टी बना देते हैं बेचारे। कभी उन्होंने जाना नहीं ये सब चीज़ें। लेकिन अत्यंत शरणागत होते हुए भी वे लोग उसे नहीं पाते जिसे तुम लोग पा चुके हो। तुमने बहुत पाया है। लेकिन उसका महात्म्य अभी तक बहुत कम लोगों के आता है समझ में। ये नहीं कि उनको सहज मिल गया है, ये नहीं कि उनको मुफ्त में ही दिया है। उन्होंने भी ऐसे ही पाया है जैसे आप लोगों ने पाया है। लेकिन उनका मेरे प्रति जो प्रेम है इतना नितांत है, लगता है कि जैसे जन्म–जन्मान्तर का वो सम्बंध समझ गए हैं और तुम लोग अभी तक समझ नहीं पा रहे हो। अपने

ही में क्यों सीमित हो? सब तुम एक ही शरीर के रोम–रोम होते हुए भी, एक ही शरीर में स्पंदन होते हुए भी अलग अलग महसूस करते हो। और वहाँ ये प्रश्न ही नहीं खड़ा होता team work का प्रश्न ही नहीं खड़ा होता। आपस में एक वहाँ पर लड़का है जिसने smoking शुरु की, सब लोग उसको फाड़ खा गए। उसको इस तरह से उन्होंने ठिकाना किया कि उसकी छूट गई smoking। उसके सारे arguments ठीक किए, उसकी पूरी मदद की, जैसे ही वो smoking करे उसको अपने पास बुलायें, उसके साथ बैठ जाएं। उसके घर में जाकर सिगरेट–विगरेट निकाल दिये पैसे ले जाकर छिपा दिए। सिगरेट की smoking नहीं थी उसकी क्या वो करता। और कहने लगे कि अब अगर तुमने और किया तो पुलिस में inform कर देंगे। अच्छा वो लड़का इसका बुरा नहीं मानता। वो कहता कि हाँ भई तुम कर दो कुछ। वो लड़का खुद कहता है और भागता है उस चीज से दूर और उन लोगों के पास आ जाता है और कहता है कि भई मुझे बचाओ। इस वक्त मुझे आ रही है वो इच्छा। इस वक्त तुम मुझे बचा लो, बचा लो इस वक्त। अपने को correct करने के लिए कितनी मेहनत वो कर रहा है! यहाँ तो आपका समाज ही corrected है। कितनी आपको, आपको पता नहीं कि आप कितनी स्वर्गभूमि में रह रहे हैं! जहाँ पर माँ बहन का पता नहीं, इतनी वहाँ गंदगी है उस देश में जहाँ पर घर घर में शराब चलती है। इतने गंदे आपस में सम्बंध हैं। किसी के घर का ठिकाना नहीं, माँ का ठिकाना नहीं, बाप का ठिकाना नहीं। उससे पूछो भई तुम्हारी माँ कहाँ है ? वो कहते हैं पता नहीं कहाँ चली गई, उसने किससे शादी कर ली! चरित्रहीन, मूलाधार चक्र सबका चौपट। ऐसे देश में पैदा हो करके भी, गणेश को ले कर आए। माँ हमें गणेश दो। गणेश के सामने सर पटक पटक कर पटकर पटक कर, कान पकड़ पकड़ के पश्चाताप की पूरे धुन में लगे। और उसमें एक वीरता भरी है। इतना बड़ा उनके अंदर जागरण अपने प्रति और दूसरों के प्रति भी। और सहजयोग के ऐसे ऐसे अनुभव और ऐसी ऐसी बातें उन्होंने बताई। आपके पास एक चिट्ठी मैंने भेजी थी, वो उन सब लोगों ने मिल करके उसका पता लगाया। मेरे भी असलियत का पता उन्होंने लगाया। अभी तक आप के नहीं नज़र में आई बात पर उनके आ गई। वो समझ गए ये बात है, ये ये चीज है। कहने को महामाया है, अंदर बात ये है।

उन्होंने इतना आनंद नहीं पाया है। लेकिन सर्वस्व लगाकर वे लोग लगे हुए हैं। वो समझ गए हैं कि उत्कांति का समय आ गया है, सतयुग दरवाजे पर है। और वो ये भी समझ रहे हैं कि गर सतयुग का दरवाजा नहीं खुला तो दूसरा संहार का दरवाजा खुलने वाला है और सबकी जिम्मेदारी है इस चीज की। इसकी जिम्मेदारी वो सोचते हैं कि हमें ये करने का है। वो जिम्मेदार हैं सहजयोग के लिए। मजाल है कोई सहजयोग के विरोध में एक अक्षर बोल दे। आपस में तो बोलने का कोई सवाल ही नहीं पर कोई बोलता है तो फौरन उसको वहीं झाड़ कर रख देते हैं। उनसे अगर मैं कहूँ कि 24 घण्टे तुम बगैर खाना खाए बैठे रहो, बैठे रहेंगे। लेकिन इसका ये अर्थ नहीं कि आप लोग कुछ कम हैं। आप लोगों में से किसी किसी ने जो height साधी है, जिस height पे पहुंच गए हैं जिस ऊँचाई पर पहुँच गए हैं, बहुत कमाल की चीज है। लेकिन सबको अपने अपने लिए बड़ा घमण्ड है ये बड़ा problem है। चित्त को एकाग्र करना भी एक अर्थ रखता है। इसका मतलब ये नहीं कि यहाँ देखो वहाँ देखो। एकाग्र तभी होता है चित्त जब उसके

ऊपर का सारा मैल बह जाता है। सब हल्का हो जाता है।

अब अपने देश के जो curses हैं या अपने देश के जो समझ लीजिए बड़ा भारी शाप है अपने देश पर कि हम लोगों के चित्त पर एक बड़ी भारी चीज है जिसे कि मैं कहती हूँ Sins Against the father, अपने बाप प्रभु परमेश्वर के खिलाफ हमने पाप किया। वो कौन सा पाप है? कि हर समय सोचना कि हम दरिद्र हैं, हम गरीब हैं, हमारे पास पैसा नहीं है। हमारा कैसा होगा, हमारे पेट का कैसा होगा। बिल्कुल भिखारी पन की बातें। हमारा खर्चा कैसे चलेगा ? हमारे बाल–बच्चों का क्या होगा? गर आपका परमात्मा पर विश्वास है तो कम से कम इतना तो उस पर छोड़ दो कि वो तुमको खाना पीना तो देगा, नहीं तो ऐसे परमेश्वर पर विश्वास करने से फायदा क्या। ये बड़ा भारी हम लोग पाप करते हैं। परमात्मा पर खाना पीना और ये व्यवस्था गर हम लोग छोड़ दें तो हिन्दुस्तानी आदमी बहुत ऊँचा उठ सकता है। दो तरह के पाप हैं। एक पाप तो ये है कि बाप के पितृत्व पे शंका करना और दूसरा मैं कहती हूँ कि Sin Against the mother, वो वहाँ पर हो रहा है, जिसमें चारित्रिक दोष, indulgences भोग, घर गृहस्थी का तोड़ देना, बेछूट हो जाना, ये महादोष हैं। दोनों नरक के रास्ते सीधे जाने की व्यवस्था है।

पैसे के लिए कुछ भी करो! पैसे के लिए जो चाहे वो गलत काम करो वो ठीक है। ये हिन्दुस्तानियों का काम हैं। मैं सरकारी बात नहीं कर रही हूँ , मैं परमात्मा की बात कर रही हूँ परमात्मा के राज्य की बात कर रही हूँ। जब आप परमात्मा के राज्य में हैं तो देगा तो देगा नहीं तो नहीं देगा। इतनी कम से कम वृत्ति ले आने में क्या लगता है? करेगा नहीं तो नहीं करेगा। जैसे राखहु तैसे ही रहिहु। सहजयोगी गर इतना एक कर ले कि जैसे राखहु तैसे ही रहिहु। जैसे भी रखो मंजूर है हमको। देख लेते है तुम कैसे रखते हो और हम कैसे रहते हैं। हर एक चीज का एक मजाक हो सकता है। हर एक चीज में एक आंनद आ सकता है। कैसे रखोगे? जैसे राखहु तैसे ही रहिहु। चाहे पैदल चलाओ तो पैदल चलेंगे, चाहे घोड़े पे बिठाओ तो घोड़े पे चलेंगे। ऐसी मस्ती में जब आप आ जाइएगा, बाकी तो भगवान की कृपा से ऐसी योगभूमि में आप पैदा हुए हैं कि बाकी का हिस्सा ठीक है। आपके माँ–बाप ठिकाने से हैं आपके बीबी बच्चे ठिकाने से हैं, आपका चरित्र भी इतना गड़बड़ शड़बड़ नहीं है। हैं कुछ लोगों का, वो भी गड़बड़ है पर इतना गड़बड़ नहीं है, ठीक हो सकता है वह भी। वहाँ पर इतना ज्यादा दूसरा वाला पाप है, सबकी आँखें यो यों यों यों औरतों आदमियो की चलती रहती हैं हर समय माने बाधा है उनके अंदर। एक से दूसरे की बाधा जा रही है।

एक औरत आई उसने आदमी को देखा आदमी ने औरत को देखा। ये ही चलते रहता है वहाँ पर। चक्कर ही ऐसा है। हमसे कहने लगे ये माँ हम सब के बाधा घुस जाती है करे क्या? मैने कहा आँख जरा नीची रखें। लक्ष्मण जी सीताजी के सिर्फ पैर देखते थे। नीची आँख। धीरे धीरे आपने आप ये बाधा छूट जाएगी। जब आप ऐसे धंधे ही नहीं करिएगा तो काम क्या है बाधा का? अपने आप जो भूत आपके अंदर में घूम रहा है, आपके अंदर काम कर रहा है वो अपने आप ही वहाँ से भाग जाएगा। गर आप इधर उधर आँख नहीं घुमाइयेगा तो एकदम से भूत भाग जाएंगे। और जब तक आप अपनी आँख घुमाते रहिएगा तो वो भूत वहाँ बैठे रहेंगे। फौरन आँखे सबकी यों। रास्ते पर चलते हैं आँखे यों करके। माँ ने कह दिया, मान लिया। ये

बच्चों के लक्षण हैं। आपके भले के लिए, कल्याण के लिए कह रही हूँ। आपको भी समझना है कि सहजयोग में हमने जितना पाने का है वो पाना है इसी जन्म में। हमको पाने का है किसी और को नहीं, हमको ही पाने का है, हमको लेने का है। दूसरों को नहीं, दूसरों की चिन्ता छोड़ो। अपनी सोचो कि हमने कितना पाया। हम इसके कितनी गहराई में उतरे। हमने क्या पाया है? हमने अपने साथ क्या व्यवहार कर रहे हैं? हम क्यों ढोंग कर रहे हैं अपने साथ? हम क्यों अपने को ठगा रहे हैं? हम क्यों झूठ बोल रहे हैं? हम अपने साथ क्यों ऐसी ज्यादती कर रहे हैं? हमने क्या पा लिया? अरे सारा भण्डार खोल दिया है, आ जाओ अंदर। जैसे भी हो आ जाओ। हम नहला धुलाकर तुमको बिठा देंगे। फिर सोच क्यों? कितने गहरे उतरे हम? गंगा की शीतल धारा में कितने अंदर वहते गए हम। वो तो बह रही है पूरी तरह से कि लो बेटे लो, लो जो लेना है लो। कितनी गागर भर ली हमने? चित हमारा इधर उधर दौड़ रहा है। अपनी ओर दृष्टि करते ही तुम समझ जाओगे कि तुमने ही अपने साथ छलना की किसी और ने की नहीं। ये बड़ा भारी अंतर है। सहजयोग के लिए नुकसानकारी है। अपनी ओर दृष्टि न रखना सहजयोग के लिए बहुत बड़ी नुकसान की चीज है और अपनी ओर उसी मनुष्य की दृष्टि होती है स्वभावतः ही जो जन्म–जन्मांतर से खोज रहा है। वो जानता है कि मेरी गलितयों की वजह से ही मैंने नहीं पाया था। अब और गलती मैं नहीं करूंगा। जैसे कुन्दधर के अंदर आप बंद है और निकलने का रास्ता नहीं। जिसने दस जगह दरवाजे पर ठोका मारा है जिसका दस जगह सर फूटा है वो सोचता है नहीं रास्ते की ओर नजर रखो। दरवाजे की ओर नजर रखो। सब दूर से मार खाने दो। दरवाजे की ओर देखो। वो कुछ और नहीं जानता है सिर्फ ये जानता है कि हाँ मैंने पाया है न, मैंने देखा है न, मुझे मालूम है, vibration आ रहे है मेरे अंदर से। सहस्रार मेरा छिदा है। होता है। मैंने जाना है। उसी बात को पकड़े हुए हैं, उसी दरवाजे को पकड़े हुए हैं। फिर माँ कुछ भी कह दे। ये नहीं कि मैं ये नहीं मानता, वो नहीं मानता। जो भी कह रही हैं हर एक बात सही है और जैसे ही वो कहते हैं सारा का सारा उनके आगे ज्ञान आते जा रहा है।

आप लोगों की बैठक बननी चाहिए। बैठक जमनी चाहिए। उनसे तो बैठक शब्द नहीं मैं कह सकती कि बैठक जमाओ। बेचारे बैठक शब्द भी नहीं जानते। अंग्रेजी भाषा ऐसी क्या काम की है उनकी कोई ऐसी संस्कृति ही नहीं है। उनका कोई ऐसा culture ही नहीं है ऐसी वहां बात ही नहीं है। कितने अभागी लोग हैं और बड़े बड़े साधुसंत है और आप लोग कितने सौभाग्यशाली हैं। आप ही के देश में मेरा जन्म हुआ है। इसी योगभूमि में मेरा जन्म हुआ है लेकिन आपने क्या पाया है ये देखिए। दूसरों ने क्या पाया है? दूसरों ने क्या किया है, दूसरों ने क्या कहा? दूसरे कहाँ हैं। ये वगैरह से मतलब नहीं। आपने क्या पाया है। जैसे ही आपने पा लिया आप निमित्त हो जाएंगे परमात्मा के। आप हैं क्या? आप तो उसके अंदर एक निमित्त मात्र हैं। 1000 आदमी मुझे चाहिएं, मैंने कहा है, जो इस सहस्रार पर बैठ जाएं। 1000 घोड़े पर बिठाने वाले 1000 आदमी ऐसे चाहिएं जो बिल्कुल न पकड़े। जो निर्लेप हों। गर आप सहजयोग के लिए कुछ कर रहे हैं तो अपने ही लिए तो कर रहे हैं। ऐसा तो कोई हो जो कहे कि भाई मैं गया मैंने इतना बाजार में अपने लिए सोना खरीदा। इतनी मैंने चीजें खरीदी, इतनी मैंने मेहनत की। आपने इतनी जो भी

मेहनत की जो भी आपने किया अपने ही लिए तो किया है। किसी और के लिए नहीं। आपने देखा है न। जो भी कुछ आपने किया है उसका लाभ अपने ही को है। बहुत से लोग हो गए संसार में, उन्होंने पाया। एकाध दो एक युग में हुए हैं। बहुत थोड़े आप जानते हैं आपसे मिले हैं कितने लोग realized है? बहुत थोड़े से ही। और आजकल तो कलयुग का बिल्कुल घोर निनाद चल रहा है। इस वक्त तो पशु ही हैं अधिकतर। बिना पूँछ के पशु बहुत सारे हैं। पर इसी कलयुग में इसी कीचड़ में एक विशेष रूप से कार्य होने वाला है और ये आप जानते हैं ये हो रहा है। ऐसे में आपको चाहिए कि जो ले सकते है लें, नहीं तो ये जो क्रांति का process है Evolution का process है उसमें से आप फेंक दिए जाएगें। वो समय दूर नहीं है। 79 मैंने बता दिया है कि 79 तक ही ये कार्य होगा उसके बाद 99 साल तक सब कुछ पूरा mature हो जाएगा। हाँ आपकी अक्ल पर है नहीं तो कलयुग भी आप ही की बदौलत पनपेगा। आप लोग अगर इसको नहीं चलाना चाहेंगे तो जो विध्वंस विनाश होगा उसका बोझा आप ही के सर पर है।

अपनी अक्ल को ऐसा लगाइए, अपनी बुद्धि को सुबुद्धि में लाइए और सोचिए कि हमने गंगा जी से क्या लिया? क्या पाया? क्या पाने का है? आपने बहुत आनंद पाया है? उस आनंद का जो भी क्षण आपने पाया है उसको याद करते रहना चाहिए और मन से कहना चाहिए कि उसी क्षण में हमेशा रहना है मुझे। चिपक जाएगें आप वहाँ पर। और जो भी इधर-उधर के फालतू के विचार आ रहे हैं उनको बंद करिये। किसी भी उम्र के आदमी को ये मना नहीं है। किसी भी वर्ण के आदमी के लिए ये मना नहीं है। किसी भी व्यवस्था के आदमी के लिए ये मना नहीं है। लेकिन अधिकतर लोग अपने हाथ से अपने पैर काट रहे हैं। गुटबाजी कर रहे हैं। क्या करूँ, मेरी समझ में नहीं आता है। एकदम बेवकूफी की बातें कर रहे हैं। अरे तुम अलग हो कहाँ। मैं यहाँ एक जरा सी उंगली घुमाती हूँ तो सबके सहस्रार चलते हैं। थोड़ा सा पाँव झनकाती हूँ तो सबके सहस्रार में झनकार आते हैं।

तुम लोग अलग कहाँ हो जो अलग अलग कर रहे हो। क्या तुम समझते नहीं? तुम अलग हो ही नहीं सकते। ये तो ऐसा है कि एक हाथ तोड़ के तुम उधर ले जाओ और वो कहे कि हाँ भई मैं इस हाथ को अलग करके बड़ा भारी कार्य करूँगा। मुझे बड़ा दुख हो रहा है इस पूरे शरीर के साथ चिपकने में तो मैं अलग हो जाऊँगा। इसी तरह की ये बात होती है। अपनी अगर मुक्ति चाहिए हो तो मनुष्य ऐसे ही एकता से काम करता है। लेकिन जिस आदमी को ये समझ में आ गया कि एक सामूहिक व्यक्तित्व के collective personality के आप एक अंश है उसी क्षण सारा काम ठीक हो जाता है। आप हैं आप जानते हैं, आप हैं आप जानते हैं, आप हैं उसमें। सारे सहजयोगी जानते हैं। कोई England से चला आए, कोई अमेरिका से चला आए, कोई हिन्दुस्तान से चला आए। जब बात करेगा तो यही कि आज्ञा पकड़ रहा है कि ह्रदय पकड़ रहा है कि फलाना पकड़ रहा है। सब कोई जानते हैं ये बात, ये तो कोई भी और नहीं जानते लोग। उनको तो ये भाषा ही मालूम नहीं। नई भाषा है, आप लोगों ने सोचा है कभी।

फौरन आपको पता हो जाता है किसका क्या पकड़ रहा है कौन कहाँ कितने गहरे पानी में है, क्या हो रहा है, क्या नहीं हो रहा ? फर्क इतना ही है कि अपनी ओर दृष्टि कम होने की वजह से अपने लिए क्या हो रहा है वो नहीं दिखाई दे रहा, दूसरे का दिखाई दे रहा है। ये तो ऐसा ही है कि

ये गर हाथ सड़ रहा है और ये हाथ इस हाथ का नहीं सोच रहा है तो ये तो सड़ जाएगा ही और इस हाथ का क्या फायदा होने वाला है? किसी को भी नीचे गिरना नहीं है खुद भी और दूसरा भी नहीं गिरना चाहिए। लेकिन आप खुद मत गिरिए, पहली चीज ये है। अव्याहत चल रहा है ये सारा काम। सारे चारों तरफ छाया हुआ है। जिसको कि unconscious कहते हैं जिसको कि प्रणव कहा जाता है, जिसको कि मैं Divine Love कहती हूँ। चारों तरफ आपकी मदद के लिए मंडरा रहा है चारों तरफ आपकी मदद के लिए। भैरव नाथ जी इस वक्त यहाँ बैठे हुए हैं। यहीं हनुमान जी बैठे हुए हैं। आपके साथ हजारों आदमी लगे हुए हैं यहाँ पर। आपके लिए मेहनत कर रहे हैं। जिस अनुभव को आपने पाया है संसार में कितनों ने पाया था आजतक, बताइए।

बड़े बड़े साधू सन्यासी हो गए। हो गए होगें, किसी ने भी सामूहिक चेतना पर इतना clearly जाना है जितना तुम लोग जानते हो? कितनी किताब पढ़ डालो। वो मुझसे पूछते हैं साधू सन्यासी बड़े बड़े साधू उसमें से किसी किसी ने जन्म लिया है किसी किसी ने नहीं लिया, कि इनको किस सिलसिले में आपने दिया है? बहुत बड़ी चीज है। मैंने अपने सहस्रार से तुमको जन्म दिया है। उन लोगों को नहीं दिया था। उनके उपर उतर के दिया था। तुम लोगों को अपने हृदय में स्थान देकर अपने सहस्रार से जन्म दिया है। कितनी बड़ी तुम्हारी स्थिति है। ऐसा तो श्री गणेश को भी जन्म नहीं दिया था जैसा कि तुमको दिया है। ये विशेष वस्तु है न? अत्यंत प्रेम से प्लावित करके दिया हुआ है। अपने से प्रेम करो। जब अपने से प्रेम होगा तभी अपना दोष दिखेगा। जब आपको साड़ी से प्रेम होता है तो आप साड़ी में लगे हुए सभी दोष को निकाल देते हैं। जब देखते हैं कि साड़ी में छेद हो गया है तो आप उसको सी देते हैं। आपको जिस चीज से प्रेम होता है उसको आप ठीक कर देते हैं और जिस चीज से आपको प्रेम नहीं होता उसको आप छोड़ देते हैं। हमने आपसे इतना प्रेम किया, आपने अपने से कब प्रेम किया? अपने प्रति प्रेम करें। जिस दिन ये लहर एक तार हो जाएगी एक इसमें हम लोग आ जाएंगे, वो दिन की मैं राह देख रही हूँ। अब आप लोगों को इसमें कोई शक नहीं रहा, क्योंकि vibration आप लोगों ने जाने हैं। इसमें तो किसी को शक नहीं है। साक्षात् शंकर हैं आप भी। (मराठी)

कुछ कुछ लोग बहुत पहुँच गए और सब उन्मुख हैं। उन की ओर देखिए जो ऊपर उठ गए हैं। नजर करो उनकी ओर और ऊपर बढ़ो। खट से खींच लिए गए ऊपर को जैसे मछलियों को एक ही तार में बाँध करके खींचा जाता है वैसे ही खींच लिए गए। लेकिन पहले उस जाल में फँसे रहो प्रेम के। माँ के प्रेम के जाल से नहीं निकलना। अपनी अपनी अकल मत लगाओ। तुम लोगों की अकल मैं जानती हूँ कहाँ तक चलने वाली है। तुम लोगों को मालूम था कि कुण्डलिनी कहाँ है क्या है? कुछ नहीं मालूम था ना? फिर तुम कुछ बड़े हो, बुजुर्ग हो, उम्र में बड़े होओगे मेरे से, लेकिन मैं तो हजारों साल की पुरानी हूँ। तुम ऐसे कैसे बड़े हो सकते हो? मेरे तो बेटे ही हो न, मेरे तो बच्चे ही हो। मैं चाहती हूँ कि इस आनंद के सागर में खुद तो लुट ही जाओ और सारे संसार की व्यवस्था करो। थोड़ा सा धक्का देने की जरूरत है, थोड़ा सा अपने को पकड़ने की जरूरत है, अभी नैया पार होगी। थोड़ी सी बगड़–दगड़ चल रही है, आगे जाती है पीछे जाती है। अभी भी सहजयोग की नैया मैं नहीं कहती कि किनारे पर पहुँच गई है। अभी खींच

रही हूँ आप लोगों के through, आप ही लोग इधर उधर खींचते हैं कभी कभी। कुछ उधर खींच रहे है कुछ इधर खींच रहे हैं। नाव को किनारे पर लाना है। पर group बाजी करना नहीं है। ये आदमी अच्छा नहीं है, वो आदमी अच्छा नहीं है। उसमें ऐसी ज्यादती हो गई, उसमें ये गड़बड़ हो गई, उसमें ये गड़बड़ हो गया। मुझे कोई भी शिकायत नहीं लगाए। मैं सबको अंदर बाहर से जानती हूँ। मैं किसी की भी शिकायत नहीं सुनने वाली।

पहला हिसाब। तुम कहाँ थे और कहाँ से कहाँ गए। बस ये देखते रहो। और वहाँ से कहाँ जाने का है, बस ये देखते रहो। आप जब कहीं रास्ते पर चल रहे हैं तो आप क्या यही कहते रहते हैं क्या? आप कहते हैं कि कब वहाँ पहुँचूंगा, कब वहां पहुँचूंगा। जो हमें सता रहा है उसे पहले माफ़ करके आओ। उसको बाहर, फिर देखो आप उसके अंदर। सब छोड़ो पिछला। हर एक क्षण पीछे छोड़ दो। इस क्षण में खड़े हो जाओ। अंदर घुसने की बात है। हम बैठे हुए हैं यहाँ पर ढकेलने के लिए सबको। मगर सब के सब मेरी खोपड़ी पर मत गिर जाना। दो चार गिरेंगे तो ठीक है, काहे का वाद विवाद सहजयोग में हो सकता है? अरे भई गर तुम्हारा आज्ञा पकड़ा है तो पकड़ा है ह्रदय पकड़ा है तो पकड़ा है। उसमें वाद–विवाद करना नहीं वो छूटना ही पड़ेगा। बुरा मानने की कौन सी बात है, जब पकड़ा है, तो पकड़ा है। छुड़वाना है तो छुड़वाना है। अरे अपने को अगर कैंसर हो, कैंसर हो गया है डॉक्टर के पास जाएंगे। डॉक्टर बोले कि आपको कैंसर हो गया है तो उसको क्या आप मारने को दौड़ेंगे कि उसने बोला आपको कैंसर हो गया, बोलेंगे कि भईया मुझे कैंसर हो गया है उसे ठीक कर दो।

उसी प्रकार आपका गर आज्ञा पकड़ा है तो आप क्या कहेंगे कि माँ ऐसे कैसे हो सकता है? कैसे पकड़ा है मेरा आज्ञा? अरे भाई है तो है। उसको तो छुड़वाना है। सहस्रार पर चक्कर है। कैसे चक्कर है? उसको तो छुड़वाना है। जो बुरी चीज है उसको तो निकालना है। काम खत्म। एक सीधी सादी बात है इसमें वाद–विवाद क्या और इसमें कहना सुनना क्या है ? किसी के कहने सुनने से आज्ञा चक्र छूटता हो तो छुड़वा लो। वाद–विवाद से किसी का छूटता है तो छुड़वा लो। बातचीत से थोड़ी होने वाला है। ये सूक्ष्म से सूक्ष्मतर, ये प्रेम का चक्कर है। इससे होता है। आप लोग पार हुए हैं, वो कोई तुम्हारे वाद–विवाद से पार हुए हैं क्या? या तुम्हारी पंडिताई से, तुम्हारी किताबों से पार हुए हैं क्या? पार कैसे हो गए आप? एक चमत्कार घटित हुआ है और खट से पार हो गए। गगनगढ़ महाराज कहते थे न कि माताजी ये कैसे हुआ समझ में नहीं आता है कि आप आए और सबकी कुण्डलनियाँ खड़ी हो गईं। ये तो समझ में ही नहीं आ रहा। एक को भी उन्होंने आजतक पार नहीं किया, गगनगढ महाराज ने और उनको जान देने के लिए हजारों आदमी तैयार हैं! (मराठी)

अपने यहाँ ऐसे बच्चे भी खराब हो जाएंगे क्योंकि हम लोग ही आधे अधूरे हैं। ऐसे पहुंचे हुए बच्चे हैं हिन्दुस्तान में भी बहुत है। वो भी सत्यानाश जाएंगे क्योंकि जबरदस्त माँ–बाप। उनको भी ठिकाने लगाइए। उनके भी मन में द्वेष भावना, उनके भी गन्दी बातें सिखाएंगे। पूरी समझ सुन सुन के, सुन सुन के बच्चे भी खराब हो जाएंगे। लेकिन वहाँ पर ऐसा नहीं है। वहाँ ऐसे जबरदस्त बच्चे हैं जो माँ–बाप से भी भिड़ लेते हैं इस बात पर। वो सब बच्चे तैयार हो रहे हैं। दस साल के अंदर वो बच्चे भी तैयार हो जाएंगे और आपके भी घर में ऐसे बच्चे

आएंगे और ऐसे बहुत से बच्चे है जो अपनी सत्ता पे खड़े हैं। जैसे ही ये बच्चे बड़े हो जाएंगे ये अपनी सत्ता पर खड़े हो जाएंगे। उनको सहयोग सिखाने की जरूरत नहीं। वो सीखे–सिखाए हैं, पुराने हैं, मेरे अपने हैं। लेकिन फिर यही कहूँगी कि आप लोग मील के पत्थर हैं, बम्बई वाले। (मराठी)

सबका कहना ये है कि सहजयोग में बड़े धीरे–धीरे लोग बढ़ते हैं। उसका कारण ये है कि आप लोगों को देख के लोग कहते हैं कि ये सहजयोगी हैं? भगवान बचाए इनसे। हमें नहीं चाहिए ऐसा सहजयोग। आप ही लोगों को देख करके सहजयोग बढ़ने वाला है। बहुत बार लोग कहते हैं कि इनके पीछे में सहजयोगी संस्था लगा दो। मैंने कहा नहीं नहीं ऐसा मत करो। ये तो भई ऐसा चिपक जाएगा मामला। किसी को ऐसे लगा नहीं सकते। कहने लगे क्यो? ये ऐसा है कि आज M.A. हैं तो कल बिल्कुल गधे। आज आकाश में हैं तो कल एकदम पाताल में। इसमें आप किसी को डिग्री नहीं दे सकते। आपने गर डिग्री दी तो मुश्किल हो जाएगी। ऐसा झगड़ा है। तो अब हम आ गए हैं अब बताइये क्या–क्या आपने सोचा है तथा क्या आपने करना है? आज आपने घर जाकर सोचना है।

महीने भर की छुट्टी लेकर जा रहे हैं। अभी दो दिन तो प्रोग्राम है ही देखते हैं क्या क्या उसमें आप करामात करते हैं। बढ़ाओ अपना चित्त। Meditation में बैठो तीन दिन। Meditation में जाकर ये कहो कि कौन कौन लोग ध्यान में क्या करेंगे। कौन कौन लोग ध्यान में आएंगे। चित लगाओ अपने चित्त पहचान करो। चित्त में ही सारी शक्ति है। चित्त को लगाओ कि ये भी आना चाहिए, वो भी आना चाहिए। ये भी आ सकता है वो भी आ सकता है। लगाओ चित्त। इसको भी आना चाहिए उसको भी, सबको बंधन दो। आज घर पर जाकर बंधन दो। इसको भी आना चाहिए उसको भी आना चाहिए और आप खुद उपस्थित होकर सबको बंधन दो। परमात्मा का आर्शीवाद आपके उपर आएगा। किसी और इंसान से अपना Identification आप मत करो कि वे फलाने हैं ये इस जगह रहते हैं वो मेरे हैं, वो मेरे हैं, उनके साथ ये ज्यादती हो गई। ये नहीं। मैं सहजयोग के लिए क्या कर सकता हूँ? फलाने आने चाहिएं ढिकाने आने चाहिएं। उधर चित्त लगाओ। आपके चित्त पे शक्ति बैठी हुई है।

<u>चित्त पे शक्ति बैठी हुई है। उसको अगर गलत जगह पर लगाओगे तो सो जाएगी। सहजयोग में लगाओगे तो चमक जाएगी।</u> इसको हमने ठीक किया था। उसको हमने ठीक किया था। उसकी बीमारी ठीक की थी, उससे मिले थे, उससे बातचीत की थी। उस पर आज बैठ कर चित्त लगाओ। अब मुझसे सहजयोग के अलावा कोई और बात करने की नहीं। मैं कुछ और सुनने को अब तैयार नहीं। बहुत हो गया। मेरी बीबी भाग गई। मेरा पति भाग गया। मेरे बच्चे का ठिकाना हो गया। ये अब सहजयोगियों से मैं सुनने वाली नहीं। बस बहुत हो गया। उसने मेरे को ऐसा कहा, उसने मेरे को डाँटा, उसने मेरे को मारा। मैं किसी से सुनने वाली नहीं और जिनको ये बातें करनी है वे अब छुट्टी करें सहजयोग से। जिसको आनंद लेना है वो यहाँ आएं। जिसको प्रेम लेना है वो यहाँ आएं। सारे संसार का सुख जिसे लेना है वो यहाँ आए। सारी सम्पदा परमात्मा ने जो तुम्हारे लिए उड़ेली हुई है, वो लेना है तो यहाँ आए। और आप लोग ही leader हैं। उस सतयुग के leader हैं जो आने वाला है। आपका नाम इतिहास में जाएगा। इतने महत्त कार्य में, गर आप इतने महत्त नहीं हैं तो आप न आएं। पहली मर्तबा मैं ये कह रही हूँ।

जिसको पाना है जिसको उठना है वो Individually आए। किसी Group की तरह से नहीं आए। Individually आए। व्यक्तिगत। और जब व्यक्तिगत इसमें डूबिएगा तो जैसे एक बूँद जैसे सागर हो जाता है आप हो जाएंगे। नहीं तो सबकी गंदगी आप अपने साथ ले करके चलोगे। इस पर किसी से बातचीत, वार्तालाप या चर्चा नहीं होती है, सिवाय सहजयोग के कोई मैं बात नहीं करूँगा। ये निश्चय कर लें। आप लोग काफी लोग हैं। किसी भी जन्म में इतने लोग मुझे नहीं मिले थे जितने आप लोग हैं। इनके सहारे नैया पार हो जाएगी। तो मेरी आपको प्रार्थना है, विनती है, कि गर मैंने वाकई आपको प्रेम किया है, और प्रेम दिया है तो उसको फल लगने के समय में मूर्खता नहीं करनी है कोई भी, किसी भी तरह। Maturity आनी चाहिए। बड़प्पन आना चाहिए। बच्चों जैसा काम बंद करिए और जब बच्चों जैसी बातें करते हैं तो चुप रहो। उनकी बात नहीं सुनना है। बुर्जुगों जैसे बात करनी है। बड़ों जैसी, Mature। फल हो गए हैं। अब आप शांत रहें, मौन रहें, और आनंद उठाएं। सारे भेद तोड़ दें। आपके अंदर फौरन जीवन्त रक्त बहना शुरु हो जाएगा। आनंद और सुख और शान्ति।

परमात्मा आपको धन्य करें।

आपकी चेतना में नई क्रान्ति घटित हुए बिना मानव द्वारा प्राप्त की गई सभी उपलब्धियाँ अर्थहीन हैं । ये तो ऐसा होगा जैसे विवाह के अवसर पर विद्युत–सज्जा के सभी उपकरण लगा कर उनमें विद्युत–प्रवाह न किया जाये। रोशनी होने पर ही आप दूल्हा–दुल्हन को देख सकेंगें ।

परमपूज्य माताजी श्री निर्मला देवी

परम पूज्य माताजी निर्मला देवी का एक पत्र

इंग्लैड मई 1977
(मराठी से अनुवादित)

प्रिय सहजयोगियो,

आप सबको अनन्त आर्शीवाद ।

मुझे समाचार मिला है कि मुस्कवाडी गाँव राहुरी में एक नया ध्यान केन्द्र चल रहा है जहाँ हजारों लोग आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर रहे हैं। ये उपलब्धि इसलिए प्राप्त हुई है क्योंकि वहाँ के कार्यकर्ताओं ने स्वयं को प्रेम के अद्भुत बन्धन में बाँध लिया हैं। वे कभी किसी चीज की शिकायत करने का प्रयत्न नहीं करते। शिकायत की अपेक्षा यदि कोई कार्यकर्ता किसी प्रकार की गलती करता है तो वे उस गलती को नजर अंदाज करते हैं। उदारता का यह कार्य व्यक्ति के अपने हृदय में प्रसन्नता की भावना उत्पन्न करता है और इससे अन्य सम्बन्धित लोग भी आकर्षित होते हैं ।

उदारता का यह गुण कुण्डलिनी की जागृति से बढ़ता है। यह दिव्यता की अभिव्यक्ति है। परन्तु जो लोग केवल बनावटी वातारण में रहते हैं वो इस वरदान का आनन्द नहीं ले सकते। आपकी कुण्डलिनी जागृत हो गई है और इसने आपके सहस्रार का भेदन कर दिया है। परन्तु हृदय ने अभी भी इस जागृति को महसूस करना है। व्यक्ति का हृदय यदि पत्थर की तरह से है, अपने प्रेम की वर्षा यदि वह किसी पर नहीं कर सकता, बातचीत में यदि वह कष्ट प्रदायी भाषा का उपयोग करता है और इस चीज पर विशेष रूप से बल देता है कि वह कुछ खास है तो वह सहजयोगी बनने के योग्य नहीं है । निःसन्देह कुछ लोगों का ऐसा ही स्वभाव हैं । मैंने देखा है कि मेरे सम्मुख ही आपमें से कुछ लोग दूसरों को एक ओर धकेलने का प्रयत्न करते हैं या त्योरीयाँ चढ़ाकर गुस्से से उन्हें देखते हैं। नन्हें बच्चों से यदि कोई कड़वा बोले तो मुझे लगता है कि किसी ने मेरे हृदय में छुरा घोंप दिया है। आप ही बताएं कि क्या सहजयोगी में प्रेम भाव की अभिव्यक्ति नहीं होनी चाहिए? एक ही माँ के बच्चे भी प्रायः इस बात को नहीं समझ पाते कि वे वास्तव में एक ही माँ की सन्तानें हैं। इस सत्य को आप भलीभांति जानते हैं। फिर क्यों आपमें यह भावना आनी चाहिए कि कोई आपसे बढ़िया है या घटिया है। क्या आपमें कोई दोष नहीं है? क्या आपमें इस बात का निर्णय करने की योग्यता है? लोग मानव के सार्वभौमिक भाईचारे की बात करते हैं परन्तु बिना परस्पर प्रेम किए क्या यह बात सम्भव है? इस क्षण मुझे केवल इतना ही कहना है कि अन्त-र्अवलोकन करें, सत्य असत्य का भेद देखें और इस विश्व से मुक्ति पा लें क्योंकि केवल ऐसा कर लेने के बाद ही आप सच्चे सहजयोगी बनेंगे।

कोई सहजयोगी यदि आपके घर आता है तो उससे इस प्रकार व्यवहार करें कि मानो वह आपका भाई है। अच्छी प्रकार उसकी देखभाल करें, उससे आपकी गृहस्थी पवित्र होगी। मैं नहीं समझ पाती कि किस प्रकार सहजयोगी धड़े बना लेते हैं। हर क्षण आपकी स्थिति या तो बेहतर होती रहती है या बदतर। इस प्रकार के धड़े बनाने से तो आपकी आत्मा पूर्णतः दब जाएगी। आपको चाहिए कि दूसरों के गुणों को देखें और दोषों की अनदेखी करें उसी तरह से जैसे मैं स्वयं देखती हूँ। ध्यान धारणा में आप महसूस करेंगे कि यह शाश्वत आनन्द का द्वार है।

आपको सदा याद रखने वाली
माँ निर्मला

बच्चे, "ही अवतरण हैं। वही मानव को महान् उन्नति की ओर ले जाएंगे। मानव जाति की देखभाल होना आवश्यक है। बच्चे ही कल की मानव जाति हैं और हम आज के मानव। अनुसरण करने के लिए हम उन्हें क्या दे रहे हैं?"

यह कहना कठिन है कि जीवन में बच्चों का लक्ष्य क्या है, "परन्तु सहज–योग से वे ठीक प्रकार से चलेंगे, ठीक से आचरण करेंगे और सहज–योगियों का बहुत बड़ा समुदाय विकसित हो जाएगा जो कि अपनी ही प्रकार का होगा।"